ISSN: 2961-1598

हिमालिनी

www.himalini.com

वर्ष २७ अंक ९ सितम्बर २०२४ (वि.सं. २०८१ भदौ-असोज) दक्षिण एसिया की संपूर्ण मासिक पत्रिका मूल्य रु. १००/-

हाशिए पर दलित समुदाय :
नगण्य उपस्थिति, शून्य अधिकार

राजनीतिः एक असफल प्रयोग

इपीजी रिपोर्ट मधेश के खिलाफ है, सरकार इसे सार्वजनिक करे

लोकतंत्र में विश्वास का संकट

emami
emami
50 YEARS
Making Lives Happier
FAIR AND HANDSOME
DULL TO HANDSOME!
Visible Radiance in Just 1 Week!
FAIR AND HANDSOME
100% OIL CLEAR
INSTANT RADIANCE
FACEWASH
FAIR AND HANDSOME
LONG LASTING
RADIANCE
CREAM
BRIGHTER LOOK
DARK SPOT REDUCTION
VISIBLE RADIANCE IN 1 WEEK
FAIR AND HANDSOME
FACEWASH

NIMB
SMART

NIMB Smart Banking
प्रयोग गरी झन्झटलाई गरौं
Bye Bye

डिजिटल बैंकिङ्गको
प्रयोग गरौं,
SMART बनौं ।

SCAN TO DOWNLOAD
NIMB SMART APP

NIMB
नेपाल इन्भेष्टमेण्ट मेगा बैंक लि.
NEPAL INVESTMENT MEGA BANK LTD.

+977-1-4545152, 9851207715
info@nimb.com.np, digital@nimb.com.np
www.nimb.com.np

समृद्धिको पथमा सँगै अघि बढ्दै

हार्दिक शुभकामना

वडादशैं, शुभ दीपावली तथा छठ पर्व २०८१ को सुखद् उपलक्ष्यमा हाम्रा सम्पूर्ण शुभचिन्तक एवं देश-विदेशमा रहनुभएका नेपाली दाजुभाइ-दिदीबहिनीमा सुस्वास्थ्य, उत्तरोत्तर प्रगति एवं दीर्घायुको **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछु ।

रन्जित कुमार चौधरी
कार्यकारणी सदस्य
नेपाल ब्रम्हर्षि समाज

नेपाल ब्रम्हर्षि समाजद्वारा आयोजित कार्यक्रम एवं गतिविधि

नेपाल ब्रम्हर्षि समाज
काठमाडौं

सलाहकार सम्पादक*
पुष्पा ठाकुर
अरुण कुमार मिश्र
सम्पादक
डॉ. श्वेता दीप्ति
वीरगंज ब्यूरो
मुरली मनोहर तिवारी
राजविराज प्रमुख
करुणा झा

विशेष सम्वाददाता
लिलानाथ गौतम (काठमांडू)
मिश्री लाल मधुकर (जनकपुर),
गोविन्द न्यौपाने (हेटौडा),
विनय दीक्षित (नेपालगन्ज)
मनोज बनैता (सिरहा/सप्तरी)
देशबन्धु यादव (भैरहवा-परासी)
महेश गुप्ता (रूपन्देही)
देवानन्द यादव (वीरगंज)
क्षेत्रीय प्रबंधक
गौरव वर्मा, ९८५१०६२०१३

प्रबन्ध निदेशक
सच्चिदानन्द मिश्र
प्रबंधक
शोभानन्द झा

डिजाइन
हिमालिनी डेस्क
भारतीय प्रतिनिधि
डॉ. विजय पण्डित/मेरठ
एस.एस. डोगरा/व्युरो प्रमुख, दिल्ली
प्रमोद कुमार मिश्र/वि. संवाददाता, दिल्ली

ऑफिस इन्चार्ज
राजनारायण यादव
बाजार व्यवस्थापन
जनकपुरः दिनेश शर्मा
मनोजकुमार झा
वीरगंजः रेयाज आलम मुकेरी
विराटनगरः वरुणमाला मिश्रा
भारत कार्यालय
डॉ. लारी आजाद, दिल्ली

हिमालिनी में प्रकाशित रचनाओं का सर्वाधिकार **डॉ. कृष्णचन्द्र मिश्र पब्लिकेशन प्रा.लि.** में सुरक्षित है। प्रकाशित रचनाओं का बिना अनुमति अन्य जगहों पर प्रकाशन अवैध माना जाएगा।

विषय-सूची

७

३४
प्रधानमंत्री मोदी भारत को वैश्विक शक्ति बना रहे हैं

इपीजी रिपोर्ट मधेश के खिलाफ है, सरकार इसे सार्वजनिक करे
१६

१९
लामिछाने का संकटपूर्ण राजनीतिक जीवन

मानव जीवन के लिए आवश्यक है अध्यात्म
३७

हिमालिनी अब फेसबुक पर भी
facebook.com/Thehimalini

सम्पादकीय	६
राजनीति	१२
विचार	११
राजनीति	२१
संस्मरण	२९
रिपोर्ट	३०
समाज	३६
सेहत	३८
समाचार	४१
सौन्दर्य	४५
खाना खजाना	४६
राशिफल	४७

हिमालिनी में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबधित लेखकों के हैं। संपादक मंडल एवं प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

प्रकाशक: डॉ. कृष्णचन्द्र मिश्र पब्लिकेशन प्रा.लि. काठमांडू, **मुद्रण:** धिम्ले अफसेट प्रेस, फोन नं.: ०१-५१७२६५५, अनामनगर, काठमांडू,
संपादकीय कार्यालय: पो.ब.नं. ८२४१ कीर्तिपुर, काठमांडू, फोन नं. ९८०२०४६५५५, ९८०२०४८५४७, E-mail:himalinimagazine@gmail.com, Website:www .himalini.com,

सत्ये नास्ति भयं क्वाचित्
का.जि.का.द.नं. ७३/०५४/५५
हिमालिनी
HIMALINI
www.himalini.com
वर्ष: २७, अंक ९ (२०८१ भदौ)
ISSN: 2961-1598

सम्पादकीय

शक्ति का सदुपयोग सीखना होगा

सनातन धर्म में शारदीय नवरात्रि की अत्यन्त महत्ता है। शक्ति की देवी माँ दुर्गा की उपासना हम सब में उर्जा और धैर्य प्रदान करती है। शक्ति सभी में विद्यमान है, लेकिन शक्ति का सही उपयोग हममें दैवी गुण पैदा करता है और दुरुपयोग आसुरी बनाता है। हमें अपने भीतर के सद्गुणों को निखार कर शक्ति का सदुपयोग सीखना होगा। हमारे अंदर शक्ति होते हुए भी जब तक हम मानसिक रूप से उसे स्वीकार नहीं करते, तब तक शक्ति का हमारे लिए कोई मूल्य नहीं होता है। कर्मप्रधान जीवन में यदि प्रयास नहीं किया गया, तो सब कुछ व्यर्थ है। नवरात्र के नौ दिनों में मां दुर्गा अर्थात शक्ति की उपासना का यही अर्थ है कि हम अपने भीतर की शक्ति को पहचानें और उसे सही दिशा में कार्यान्वित करें। तभी तो हम नवरात्र पर वंदना करते हैं -

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

यह अपने भीतर शक्ति के रूप में स्थित देवी की आराधना है। हमें अपने भीतर की शक्ति को पहचानना होगा और उसका सदुपयोग करना होगा। शक्ति अथवा ऊर्जा प्रकृति के रूप में (बाहरी और हमारे भीतर की प्रकृति), उल्लास के रूप में, क्रियाशीलता के रूप में, प्रसन्नता आदि के रूप में अभिव्यक्त होती है। वासंतिक नवरात्र का पदार्पण भी ऐसे समय में होता है, जब प्रकृति नई ऊर्जा से भरी होती है। प्राणियों में भी यह ऊर्जा स्फूर्ति, उल्लास और क्रियाशीलता बनकर परिलक्षित होती है। लेकिन यदि हम उसे सकारात्मक रूप में क्रियान्वित नहीं कर पाते, तो शक्ति होने के बावजूद उस ऊर्जा को नकारात्मकता की ओर मोड़ देते हैं।

जिस शक्ति का उपयोग हम मदद में या सृजनात्मक कामों में कर सकते हैं, उसका उपयोग विध्वंसक कार्यों में करने लगते हैं। शक्ति के प्रवाह को सकारात्मकता की ओर लाने के लिए नौ दिन शक्ति की आराधना का प्रावधान किया गया होगा।

दुर्गा सप्तशती के अनुसार, मां दुर्गा समस्त प्राणियो में चेतना, बुद्धि, स्मृति, धृति, शक्ति, शांति श्रद्धा, कांति, तुष्टि, दया आदि अनेक रूपों में स्थित हैं। अपने भीतर स्थित इन देवियों को जगाना हमें सकारात्मकता की ओर ले जाता है। भगवान श्रीराम ने शक्ति की उपासना कर बलशाली रावण पर विजय पाई थी। जबकि 'देवी पुराण' में उल्लेख है कि रावण शिव के साथ-साथ शक्ति का भी आराधक था। उसने मां दुर्गा से बलशाली होने का वरदान पा रखा था। लेकिन शक्ति ने राम का साथ दिया, क्योंकि रावण अपने भीतर सद्गुण रूपी देवियों को जगा नहीं पाया। तुष्टि, दया, शांति आदि के अभाव में उसका अहंकार प्रबल हो गया। इसलिए देवी की आराधना का एक अर्थ यह भी है कि आप एक ऐसे इंसान बनें, जिसमें शक्ति के साथ- साथ करुणा, दया, चेतना, बुद्धि, तुष्टि आदि गुण भी हों। देवी के रूपों में मां दुर्गा को राक्षसों से संघर्ष करते हुए दिखाया गया है। इसका अभिप्राय यह है कि हम कठिनाइयों (जो वास्तव में राक्षस जैसी ही प्रतीत होती हैं) से हिम्मत हारने के बजाय उनसे संघर्ष करें। नवरात्र तीन शक्तियों महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली की उपासना का पर्व भी माना जाता है। ये भी हमारी तीन शक्तियां हैं, जिन्हें इच्छाशक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति कह सकते हैं।

आश्विन मास अपने पित्तरों के प्रति निवेदित होने का मास भी है। यह हमारे सनातन धर्म की सुन्दरता है कि हम सृष्टि, प्रकृति एवं पूर्वजों के प्रति भी कृतज्ञ होते हैं और अपनी श्रद्धा, विश्वास तथा समर्पण ज्ञापित करते हैं।

उत्तरोत्तर प्रगति की कामना के साथ 'हिमालिनी' के समस्त विज्ञापनदाताओं, पाठक वर्ग, शुभेक्षु एवं समग्र देशवासियों को दशहरा, दीपावली और छठ पूजा की अनन्त शुभकामनाएँ।

श्वेता दीप्ति

हाशिए पर दलित समुदाय : नगण्य उपस्थिति, शून्य अधिकार

डॉ. श्वेता दीप्ति ...

दलित गैर सरकारी संगठनों की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है । मधेसी दलित नेताओं का आरोप है कि ऐसे संगठनों के पदाधिकारियों ने जातीय छुआछूत और मधेसी दलितों के साथ भेदभाव और शोषण की घटनाओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नहीं उठाया है ।

'दलित' शब्द का शाब्दिक अर्थ है जिसका दलन और दमन हुआ है, दबाया गया है, शोषित, उत्पीड़ित, सताया हुआ, अपेक्षित, घृणित, हतोत्साहित आदि । समाज में वर्ण व्यवस्था के आधार पर जो जातिगत बंटवारा हुआ है । यह पूर्णतः असमानता, वर्चस्व और शोषण पर आधारित है । दलित कोई एक रूपीय समाज नहीं है । इसकी अनेक परते हैं ।

रामचन्द्र वर्मा ने अपने शब्दकोश में दलित का अर्थ लिखा है, मसला हुआ, मर्दित, दबाया, रौंदा या कुचला हुआ, विनकिया हुआ । पिछले छह-सात दशकों में 'दलित' पद का अर्थ काफी बदल गया है । भारत में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के आंदोलन के बाद यह शर्बहिंदू समाज व्स्में सबसे निचले पायदान पर स्थित सैकड़ो वर्षों से असमझी जाने वाली तमाम जातियों के लिए सामूहिक रूप से प्रयोग होता है । अब दलित पद अस्पृश्समझी जाने वाली जातियों की आंदोलनधर्मिता का परिचायक बन गया है । भारतीय संविधान में इन जातियों को अनुसूचित जाति नाम से जाना जाता है । भारतीय समाज में वाल्या भंगी को सबसे नीची जाति समझा जाता रहा है और उसका पारंपरिक पेशा मानव मल की सफाई करना रहा है । परन्तु आज के समय में इस स्थिति में बहुत बदलाव आया है । दलित का अर्थ शंकराचार्य ने मधुराष्टकम् में द्वैत से लिया है । उन्होंने "दलितं मधुरं" कहकर श्रीकृष्ण को सम्बोधित किया है ।

यूरोप में हुए पुनर्जागरण और ज्ञानोदय आंदोलनों के बाद मानवीय मूल्यों का महिमा मंडन हुआ । यही मानवीय मूल्य यूरोप की क्रांति के आदर्श बने । इन आदर्शो की जरिए ही यूरोप में एक ऐसे समाज की रचना की गई जिसमें मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता दी गई । ये अलग बात है कि औद्योगिकीकरण के चलते इन मूल्यों की जगह सबसे पहले पूंजी ने भी यूरोप में ली । लेकिन इसके बावजूद यूरोप में ही सबसे पहले मानवीय अधिकारों को कानूनी मान्यता दी गई । इसका सीधा असर भारत पर पड़ना लाजमी था और पड़ा भी । इसका सीधा सा असर हम भारत के संविधान में देख सकते हैं । भारतीय संविधान की प्रस्तावना से लेकर सभी अनुच्छेद इन्ही मानवीय अधिकारों की रक्षा करते नज़र आते हैं । भारत में दलितों की कानूनी लड़ाई लड़ने का जिम्मा सबसे सशक्त रूप में डॉ. अम्बेडकर ने उठाया । डॉ अम्बेडकर दलित समाज के प्रणेता हैं । बाबा साहब अम्बेडकर ने सबसे पहले देश में दलितों के लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकारों की पैरवी की ।

साफ तौर पर भारतीय समाज के तात्कालिक स्वरूप का विरोध और समाज के सबसे पिछड़े और तिरस्कृत लोगों के अधिकारों की बात की । राजनीतिक और सामाजिक हर रूप में इसका विरोध स्वाभाविक था । यहां तक की महात्मा गांधी भी इन मांगों के विरोध में कूद पड़े । बाबा साहब ने मांग की कि दलितों को अलग प्रतिनिधित्व (पृथक निर्वाचिका)

मिलना चाहिए यह दलित राजनीति में आज तक की सबसे सशक्त और प्रबल मांग थी । अम्बेडकर की प्रयासों का ही ये परिणाम है कि दलितों के अधिकारों को भारतीय संविधान में जगह दी गई । यहां तक कि संविधान के मौलिक अधिकारों के जरिए भी दलितों के अधिकारों की रक्षा करने की कोशिश की गई ।

उपरोक्त संदर्भ का तात्पर्य यह है कि, नेपाल के परिप्रेक्ष्य में जब दलित अधिकार की बात सामने आती है तो सबसे पहले इस बात की आवश्यकता नजर आती है कि यहाँ भी बाबा साहब जैसे सशक्त नेतृत्व की आवश्यकता है । क्योंकि बिना किसी सशक्त नेतृत्व के आज तक अधिकार प्राप्त करने की कोई भी लड़ाई लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाई है ।

हम सभी जानते हैं कि कोई भी राष्ट्र विभिन्न जातियों, धर्मों, संस्कृतियों, समुदायों या संप्रदायों का एकीकृत रूप होता है । और यह आवश्यक होता है कि राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए उस राष्ट्र में रहने वाले सभी समुदायों का विकास हो । किन्तु इस से इतर नेपाल के संदर्भ में अगर दृष्टि डाली जाए तो यह स्पष्ट दिखता है कि दलित, मधेशी और जनजातियों सहित अधिकांश अल्पसंख्यक और हाशिये पर रहने वाले समुदाय अब तक राज्य की मुख्यधारा में नहीं आ पाए हैं । मधेसी दलित समुदाय की स्थिति भी काफी दयनीय है ।

नेपाल में तराई मधेस प्रदेश का तात्पर्य देश की समतल भूमि से है । देखा जाए तो तराई का यह क्षेत्र देश की रीढ़ है जिसका कमजोर होना देश की आर्थिक व्यवस्था का कमजजोर होना है । बावजुद इसके यह क्षेत्र और यहाँ के निवासी हमेशा से विभेद का शिकार होते रहे हैं । कोशी, मेची, नारायणी, महाकाली, गंडकी आदि प्रमुख नदियाँ इसी प्रांत से होकर बहती हैं । इसी प्रकार, इस क्षेत्र में घने जंगल, आर्द्रभूमि, जंगली जानवरों के आवास और कृषि योग्य भूमि की सिंचाई के लिए पानी और नदियों की उपलब्धता और विभिन्न जातियों और भाषाओं के लोगों का सामाजिक घनत्व इस प्रांत की मुख्य विशेषताएं हैं । ब्राह्मण, छेत्री, वैश्य और शूद्र के अलावा इस प्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ थारू, झांगर, राजवंशी, धीमल, सतार आदि हैं । इसी प्रकार, नेपाली भाषा के अलावा तमांग, मैथिली, भोजपुरी, अवधी, थारू आदि स्थानीय भाषा के रूप में बोली जाती हैं । अतः सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलू में इस क्षेत्र की अपनी तरह की मौलिकता है ।

देश में २०७२ में नया संविधान लागु किया गया और इसके साथ ही देश ने संघीयता को अपनाया । इस संघीय ढांचे में देश को ७ प्रदेशों में बांटा गया है और इसी आधार पर तराई मधेस प्रदेश का शासन भी संघीय ढाँचे के अनुसार किया गया है । राजनीतिक दल संघीय ढांचे की प्रशासनिक कानूनी प्रणाली के माध्यम से तराई मधेस प्रदेश में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मुद्दों को हल करने के लिए काम कर रहे हैं या कहा जाए कि करने की कोशिश कर रहे हैं । किन्तु तराई मधेस राज्य में रहने वाले प्रमुख आदिवासियों, दलितों और पिछड़े वर्ग के लोगों को अभी भी सामाजिक न्याय और राजनीतिक अधिकार नहीं मिल पा रहे हैं । इसके अलावा, उस समुदाय के लोग जो व्यवसाय प्राचीन काल से पारंपरिक रूप से करते आ रहे हैं, उनका भी लगातार ह्रास हो रहा है । तराई मधेस प्रदेश में ही ऊंची जातियों और वर्गों की तरह उनका आर्थिक और सामाजिक उत्थान नहीं हो पा रहा है तो अन्य क्षेत्र की तो बात ही क्या की जाए । इसलिए राज्य को उस पर ध्यान देना जरूरी है । यह आवश्यक है कि सामाजिक एकीकरण, राजनीतिक भागीदारी, सह-अस्तित्व और समावेशिता, आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से तराई मधेस प्रदेश में विभिन्न समुदायों या जातियों या भाषाओं के नागरिकों को एक साथ बांधा जाए, तभी सभी का उत्थान संभव है ।

इतिहास गवाह है कि प्राचीन काल से ही तराई मधेस प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले दलित, आदिवासी, जनजातीय और पिछड़ी जाति या समुदाय के नागरिकों को अपने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों से वंचित होना पड़ा है । और आज भी, मौजूदा राज्य संरचना के कारण इस समुदाय के लोग राज्य के हर हिस्से, स्तर और संस्था तक पहुंचने और अपनी पहचान बनाने में असमर्थ हैं ।

केंद्रीय राज्य सरकार की नीति और इस केंद्रीय राज्य सरकार के अधीन अन्य स्थानीय सरकारी निकायों द्वारा अपनाई गई इस प्रकार की जटिल प्रशासनिक संरचना के कारण, विशेष रूप से तराई मधेस क्षेत्र में रहने वाले लोगों की भाषा, पोशाक और सांस्कृतिक मूल्यों जैसे सामाजिक पहलू प्रभावित हुए हैं । इसका असर दलित, आदिवासी और पिछड़ी जातियों पर भी पड़ा है । इसलिए इन गंभीर मुद्दों पर जोर देते हुए राज्य को सभी मधेस नागरिकों को, जो समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं, राजनीतिक अधिकार देना चाहिए और सभी प्रकार की सामाजिक समस्याओं का उचित तरीके से समाधान करना चाहिए और उनके आर्थिक विकास के लिए राज्य को कृषि पेशे का विकास और विस्तार करना चाहिए जो कि इस प्रदेश में परंपरागत रूप से किया जाता रहा है ।

राष्ट्रीय दलित आयोग की जाति अनुसूची रिपोर्ट में बताया गया है, नेपाल में २६ प्रकार के दलित समुदाय हैं । इनमें तराई-मधेशी दलितों के अंतर्गत कलर, ककैहिया, कोरी, खटिक, खत्वे (मण्डल खंग), चमार (राम, मोची, हरिजन, रविदास), चिड़िमार, डोम (मरिक), तत्मा (ताँती, दास), दुसाध (पासवान हजरा),

कृषिलाई व्यवसायिक बनाऔं

हामी निर्वाहमुखी कृषि प्रणालीमा आधारित छौं । यसले हाम्रो परिवारमात्रै पालिँदै आएको छ । तपाईंसँग भएको जमिनलाई राम्रो उपयोग गरी अरु धेरैको परिवारलाई पाल्नसक्ने खाद्यान्न उत्पादन गर्न सकिनेछ । त्यसका लागि हामीले हाम्रो कृषि कर्मलाई आधुनिकीकरण गरी व्यवसायिक कृषि गर्न सक्छौं । खेतीयोग्य जमिन बाँझो नराखी आधुनिक र वैज्ञानिक तरिकाले कृषि गरेमा लाखौं खर्च गरेर विदेशिनु पर्दैन । यसरी विदेशिनु भन्दा स्वदेशमै व्यवसायिक कृषि र पशुपालन गरौं, व्यवसायिक कृषि उत्पादनमार्फत आर्थिक उपार्जन गरौं ।

पाल्हिनन्दन गाउँपालिका
गाउँ कार्यपालिकाको कार्यालय
लुम्बिनी प्रदेश (नवलपरासी) नेपाल

धोबी (रजक हिन्दु) पासी, बाँतर, मुसहर, मेस्तर (हलखोर), सरभङ्ग (सरवरिया), नटुवा, ढाँडी, धरिकार धन्कार आदि जाति हैं । इसी तरह पहाड़ में कामी, दमाई, सार्की, बादी और गाईने जाति हैं । नेपाल के इतिहास में १९१० के नागरिक अधिनियम ने जाति भेदभाव और अस्पृश्यता को राज्य चलाने के एक साधन के रूप में संस्थागत बना दिया, जो उपरोक्त जाति समुदायों को ऐसी जातियों के रूप में परिभाषित करती थी, जो अछूत हैं ।

सामाजिक भेदभाव और उत्पीड़न के एक शक्तिशाली संयोजन के कारण, दलित समाज में दूसरे दर्जे के नागरिक के रूप में रहने को मजबूर हैं। मधेश में लगभग ४० प्रतिशत दलित भूमिहीन हैं और उन्हें जीवित रहने के लिए भी गैर-दलित समुदायों पर निर्भर रहना पड़ता है। चाहे वे पहाड़ी दलित हों या मधेसी दलित, दोनों ही गैर-दलित समुदायों द्वारा शोषित और पीड़ित हैं। पहाड़ी दलित छुआछूत और भेदभाव के शिकार रहे हैं, खासकर ब्राह्मणों, क्षेत्रियों और जनजातियों से, जबकि तराई-मधेश के दलित मधेसी ब्राह्मण-क्षेत्री (झा, साह, यादव, कुर्मी) सहित गैर-दलितों से पीड़ित रहे हैं।

तुलनात्मक रूप से कहें तो मधेसी दलित पहाड़ी दलितों की तुलना में अधिक शोषित हैं । मधेसी दलित इसलिए अधिक पीड़ित हैं क्योंकि वे पहले दलित हैं और बाद में मधेसी भी । यदि संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो दोनों समुदाय पहले भी और अब भी भेदभाव और छुआछूत के खिलाफ लड़ते रहे हैं । पहाड़ी दलितों ने कुछ पहाड़ी जिलों में लड़ाई लड़ी और मधेसी दलितों ने तराई मधेश गांवों और जिला मुख्यालयों में लड़ाई लड़ी । चाहे माओवादी जनयुद्ध हो, जनआंदोलन हो या मधेश आंदोलन, सभी आंदोलनों में मधेसी दलित और पहाड़ी दलित दोनों ने अपना

चाहे वे पहाड़ी दलित हों या मधेसी दलित, दोनों ही गैर-दलित समुदायों द्वारा शोषित और पीड़ित हैं । पहाड़ी दलित छुआछूत और भेदभाव के शिकार रहे हैं, खासकर ब्राह्मणों, क्षेत्रियों और जनजातियों से, जबकि तराई-मधेश के दलित मधेसी ब्राह्मण-क्षेत्री (झा, साह, यादव, कुर्मी) सहित गैर-दलितों से पीड़ित रहे हैं ।

समर्थन दिया है ।

एन.एस.आई.एस(नेपाल सामाजिक समावेशी सर्वेक्षण) के आंकड़ों के अनुसार, ३६.७ प्रतिशत पहाड़ी दलित भूमिहीन हैं और ४१.४ प्रतिशत मधेसी दलित भूमिहीन हैं । नेपाल में दलितों की औसत शिक्षा दर ५२.४ प्रतिशत है । जिसमें ५२.४ प्रतिशत पहाड़ी दलित हैं और ३४.५ प्रतिशत मधेसी दलित शिक्षित हैं । इसी तरह, नेपाल में कुल दलित महिलाओं की उच्चतम शैक्षिक दर ४५.५ प्रतिशत है, जबकि डोम और मुसहर महिलाओं की शैक्षिक दर १७.९ प्रतिशत है। नेपाल में ७७ प्रतिशत दलितों को ही संतुलित भोजन मिलता है जिसमें ५६.० प्रतिशत पहाड़ी दलित और ५३.७ प्रतिशत मधेसी दलित शामिल हैं । स्थानीय स्तर पर, १४.६ प्रतिशत पहाड़ी दलितों के साथ स्वास्थ्य केंद्रों पर सेवाएं लेते समय भेदभाव किया जाता है, जबकि ४३ प्रतिशत मधेसी दलितों के साथ भेदभाव किया जाता है । नेपाल में, ७७ प्रतिशत महिलाएँ जब स्वास्थ्य सेवाएँ लेने जाती हैं तो उन्हें समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिनमें ७९ प्रतिशत पहाड़ी दलित महिलाएँ और ८५ प्रतिशत मधेसी महिलाएँ शामिल हैं । सिविल सर्विस रिकॉर्ड (ऑफिस) २०६३ के आंकड़ों के मुताबिक, नेपाल में कुल सरकारी कर्मचारियों में से १.९४ फीसदी दलित सरकारी कर्मचारी हैं, जबकि मधेसी दलितों की संख्या का जिक्र नहीं है ।

राज्य के द्वारा दलितों के लिए जो भी सेवाएँ प्रदान की जाती हैं, उनका फायदा काठमांडू तक ही सीमित रह जाता है । राष्ट्रीय दलित आयोग की संरचना पर भी नजर डालें तो वहाँ भी सदस्यों में दलितों की उपस्थिति कम ही नजर आती है। दलित गैर सरकारी संगठनों की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है । मधेसी दलित नेताओं का आरोप है कि ऐसे संगठनों के पदाधिकारियों ने जातीय छुआछूत और मधेसी दलितों के साथ भेदभाव और शोषण की घटनाओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नहीं उठाया है ।

मधेसी संघ संगठन में भी मधेसी दलितों की स्थिति बहुत ही निम्न है। हालाँकि सामाजिक प्रबंधन स्तर सहित सामान्य स्तर पर कुछ भागीदारी है, लेकिन ऐसा लगता है कि निर्णय लेने के स्तर पर लगभग ०.५ प्रतिशत ही भागीदारी है। यदि हम मधेश केंद्रित राजनीतिक दलों में मधेसी दलितों की भागीदारी पर नजर डालें तो यहाँ भी बहुत ही दयनीय स्थिति है। नेपाल के अंतरिम संविधान २०६३ के बाद कुछ सुधार नजर आता है, लेकिन यह संतोषजनक नहीं है । मधेशी दलों से अलग जो भी राष्ट्रीय दल हैं वहाँ इनकी उपस्थिति मधेशी दलों से बेहतर है किन्तु यहाँ भी उनकी उपस्थिति संतोषजनक नहीं है । इस प्रकार, मधेसी दलित किसी भी राजनीतिक दल और संघ संगठन में संतोषजनक भागीदारी नहीं निभाते नजर आते हैं । मधेश आंदोलन के बाद २०६३ में

व्यक्तिगत घटना दर्ता गराऔं

जन्म, मृत्यु, विवाह, सम्बन्ध विच्छेद तथा बसाईसराईजस्ता व्यक्तिगत घटना समयमा नै आफ्नो पालिकाको वडा कार्यालयमा दर्ता गराउनुपर्दछ। किनकि व्यक्तिगत घटना दर्ता व्यक्ति पहिचानको पहिलो आधार हो। यस्ता घटना ३५ दिनभित्र स्थानीय पञ्जिकाधिकारीको कार्यालय (वडा कार्यालय) मा निःशुल्क रुपमा दर्ता गर्न सकिन्छ। सरकारलाई विकासका योजना तर्जुमा गर्न, नागरिकलाई प्रदान गरिने सेवा सुविधा सुनिश्चित गर्न, जनसंख्याको विवरण अद्यावधिक गर्न व्यक्तिगत घटना दर्ता आवश्यक हुन्छ। साथै व्यक्तिगत घटना दर्ता गरेपछि मात्रै राज्यबाट पाइने सुविधाहरू प्राप्त गर्न सकिनेछ।

रोहिणी गाउँपालिका
गाउँ कार्यपालिकाको कार्यालय
रुपन्देही, लुम्बिनी प्रदेश (नेपाल)

अंतरिम संविधान में संशोधन किया गया था। जिसने काफी हद तक दलित, मधेशी, जनजाति सहित अल्पसंख्यकों और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के अधिकारों को संबोधित किया था। जैसे राज्य के प्रत्येक निकाय में समानुपातिक भागीदारी, नागरिकता, भूमिहीन दलितों के संदर्भ में भूमि प्रदान करना, आवास व्यवस्था, चुनाव प्रणाली और अन्य अधिकार। जिसे नेपाल के संविधान २०७२ में हटा दिया गया है। हम कह सकते हैं कि इस दृष्टिकोण से वर्तमान संविधान प्रगतिशील की बजाय प्रतिगामी है।

नेपाल के संविधान २०७२ का मसौदा तैयार होने के बाद काठमांडू में दलित आंदोलनकारियों ने विरोध प्रदर्शन शुरू किया था, जिसमें मधेसी दलितों की संख्या न्यूनतम थी। विरोध प्रदर्शन में राज्य की ओर से १०० से अधिक प्रदर्शनकारी घायल हो गए थे। आंदोलन के परिणामस्वरूप, संविधान के मौलिक अधिकार अनुच्छेद ४० दलित अधिकार में "समानुपातिक-समावेशी" शब्द जोड़ा गया और आंदोलन ठंडा हो गया।

अनुच्छेद ४० दलितों के अधिकार (१) के अनुसार दलितों को समानुपातिक समावेशन के सिद्धांत के आधार पर सभी राज्य निकायों में भाग लेने का अधिकार होने की बात कहता है। इसमें कहा गया है कि सार्वजनिक सेवा समेत रोजगार के अन्य क्षेत्रों में दलित समुदाय के सशक्तिकरण, प्रतिनिधित्व और भागीदारी के लिए कानून के तहत विशेष प्रावधान किये जायेंगे। यहां राज्य के सभी निकायों में "समानुपातिक समावेशी" शब्द रखा गया है, लेकिन अंत में इस शब्द को कानून के अनुरूप लाकर अटका दिया गया है।

दलितों ने अपने अधिकार के लिए आंदोलन की शुरुआत तो की किन्तु यह कमजोर पड़ गया। जिसका मुख्य कारण यह है कि दलित वर्गों आपस में ही बंटे हुए हैं। कुछ पहाड़ी दलित बड़ी पार्टियों के गुलाम हैं जो अपने आकाओं के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोल सकते और कुछ बड़ी रकम लेकर दलित आंदोलन को नष्ट करने के अभियान पर हैं। तराई मधेश के कुछ मधेसी दलित भी बड़ी पार्टी के गुलाम बनकर गुलामी की जिंदगी जी रहे हैं।

हाल के दिनों में दलितों में यह जागरूकता आई है कि मधेश में राजनीतिक तौर पर आगे बढ़ने की जरूरत है। मधेसी दलितों में भी इस बात की जागरूकता है कि उन्हें राजनीतिक और सामाजिक तौर पर आगे बढ़ना है और राज्य के निर्णायक स्तर तक पहुंचना है। लेकिन पहाड़ी दलितों में ऐसी मानसिकता विकसित होती नहीं दिख रही है। वे ब्राह्मण पार्टी में रहकर हक की लड़ाई लड़ने की बात करते हैं। क्या सभी दलित एक चुनाव चिन्ह या एक झंडे के नीचे नहीं आ सकते ? यह प्रश्न वर्तमान नेपाली दलित आन्दोलन का जटिल प्रश्न है।

आज के समय की आवश्यकता यह है कि नेपाल में मधेसी दलितों के समग्र कल्याण के लिए पहाड़ी दलितों और मधेसी दलितों के बीच की खाई को भरा जाए। जब तक पूरे दलित समुदाय के अधिकार सुनिश्चित नहीं हो जाते, तब तक दलित समुदाय के भीतर मतभेद और खामियाँ वैसे ही बनी रहेंगी। किसी भी जातीय मुक्ति संघर्ष में समानता एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। शांतिपूर्ण और सशस्त्र विद्रोह सहित दुनिया का कोई भी संघर्ष समानता और समावेशन के मुद्दे को नहीं छोड़ सकता।

जाति एक ऐसी अवधारणा है जो प्राचीन काल में शासकों द्वारा या तो युद्ध जीतने के उन्माद से और दूसरे अपने सामंती शासन की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए बनाई गई थी। रंग, क्षेत्र, नस्ल, जाति जैसे मामलों में भेदभाव या अलगाव स्वाभाविक नहीं है। दुनिया के कई देशों को जाति के नाम पर अलगाववादी आंदोलन का अप्रिय अनुभव भी झेलना पड़ा। श्रीलंकाई तमिल (एलटीटीई) जैसे अन्य सशस्त्र और अलगाववादी आंदोलनों के उदाहरण देखे और पढ़े जा सकते हैं। आज भी एक जाति के समुदायों और दूसरी जाति के समुदायों के बीच मारपीट की घटनाएं होती रहती हैं। भारत सहित कुछ देशों में और यहां तक कि हमारे अपने देश में भी जातिगत वोटों का दुरुपयोग, झगड़े और यहां तक कि हिंसा भी होती है। यहां तक कि मैदानी और पहाड़ी इलाकों में भी चुनाव के दौरान जातिगत आधार पर ही उम्मीदवारों को वोट देने की प्रवृत्ति है। ऐसी घटनाएं अभी भी क्षेत्रीय और स्थानीय निकाय चुनावों में देखी और अनुभव की जा सकती हैं। जहां जिस जाति की उपस्थिति अधिक होती है वहाँ उसी जाति का उम्मीदवार चुनाव जीतता है।

दलित मुक्ति आंदोलन, आदिवासियों, पिछड़े वर्गों के कुछ कार्यकर्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं का मानना है कि जाति या समुदाय को जीवित रखा जाना चाहिए। दलित शिक्षित और सक्षम युवाओं की राय है कि दलित शब्द हटा देना चाहिए। शायद दलित वर्ग, समुदाय जातिगत संकीर्णता से मुक्त होना चाहता है। दलित, आदिवासी, लुप्तप्राय, पिछड़े वर्ग, महिलाएं, मेहनतकश युवा, गरीब, किसानों की अपनी-अपनी समस्याएं हैं। भाषा, धर्म और पहचान की समस्याओं में एकरूपता नहीं है। और कोई भी समुदाय अपनी सामान्य समस्याओं को दूर करने के लिए संयुक्त संघर्ष की दिशा से अवगत नहीं है। अलग-अलग रास्तों, अलग-अलग समूहों, स्वार्थों के कारण एक संयुक्त उत्पीड़ित आवाज नहीं उठ रही है और यही कारण है कि वो अपने अधिकारों को प्राप्त करने में समर्थ नहीं हो रहे हैं। आवश्यकता यहाँ भी भीमराव अम्बेदकर जैसे सशक्त नेता की है जो इनकी मजबूत आवाज बन सकें।

कृषिलाई व्यवसायिक बनाऔं

हामी निर्वाहमुखी कृषि प्रणालीमा आधारित छौं। यसले हाम्रो परिवारमात्रै पालिँदै आएको छ। तपाईसँग भएको जमिनलाई राम्रो उपयोग गरी अरु धेरैको परिवारलाई पाल्नसक्ने खाद्यान्न उत्पादन गर्न सकिनेछ। त्यसका लागि हामीले हाम्रो कृषि कर्मलाई आधुनिकीकरण गरी व्यवसायिक कृषि गर्न सक्छौं। खेतीयोग्य जमिन बाँझो नराखी आधुनिक र वैज्ञानिक तरिकाले कृषि गरेमा लाखौं खर्च गरेर विदेशिनु पर्दैन। यसरी विदेशिनु भन्दा स्वदेशमै व्यवसायिक कृषि र पशुपालन गरौं, व्यवसायिक कृषि उत्पादनमार्फत आर्थिक उपार्जन गरौं।

सुनवल नगरपालिका
नगर कार्यपालिकाको कार्यालय
लुम्बिनी प्रदेश (नवलपरासी पश्चिम) नेपाल

राजनीति: एक असफल प्रयोग

अजय कुमार झा

भारत में इन्दिरा गांधी, चंद्रशेखर, शरद पवार, देवी लाल, चरण सिंह, करूणानिधि, लालू, मुलायम तथा नेपाल में कोइराला, देउवा, ओली, प्रचंड, उपेन्द्र यादव, आदि की राजनीति में वंशवाद, परिवारवाद, जातिवाद की राजनीति की दक्षिणपंथ के फासिस्टी चेहरे का उदाहरण माना जा सकता है । किसी भी दल में आन्तरिक जनवाद नही है, सभी दल व्यक्तिवादी और परिवारवादी हैं । मधेस भी इसी गर्त में डूबा हुआ है ।

हजारों वर्षों से हम राजनीति को जीवन और जगत के लिए अनिवार्य तत्व के रूप में मान्यता देते आ रहे हैं । जबकि इसका परिणाम वैश्विक भीषण नर संहार और प्राकृतिक संपदाओं का दोहन कर आपदाओं को निमंत्रण देना ही रहा है । अबतक जो विकल्प खोजे जा रहे हैं वह सब के सब राजनीति के कुण्ड से ही निकाला जा रहा है । होना तो यह चाहिए कि राजनीति विज्ञान के अधीन रहता । विज्ञान के अनुसार चलता । धर्म वह है, जिसे हम जीवन और प्रकृति के समग्र पक्ष को पोषण और संवर्धन करने के लिए व्यवहार में धारण करते हैं । अतः धर्म के आधारभूत पक्ष भी विज्ञान द्वारा प्रशोधित ही होने चाहिए थे । विज्ञान का सीधा अर्थ है, विशेष ज्ञान तथा अनुसंधान द्वारा प्रतिपादित विचार, सिद्धांत या कहें जीवन दर्शन । विगत तीन हजार वर्ष से अबतक हमने राजनीति को सर्वोपरि मानकर उसके सिद्धांतों को जीवन व्यवहार में प्रयोग करके देख लिया, राजनीति ने हमें हत्या, हिंसा, षडयंत्र, धोखाधड़ी, जातीय, धार्मिक, और प्रांतीय बटवारा तथा दंगा और युद्ध के अलावा और कुछ भी नहीं दिया । विहंगम दृष्टि से देखा जाए तो यह/राजनीति पूर्णतः असफल रही है । राजनीति मानवता और प्रकृति के संरक्षण तथा संपोषण के लिए कुछ भी नहीं कर पायी है । जबकि विध्वंस के लिए दिनरात लगी रहती है ।

अतः अब हमें विज्ञान का प्रयोग करके देखना है । एक मौका विज्ञान को भी दिया जाना चाहिए, क्योंकि अपने सैकड़ों-हज़ारों सालों के पूरे इतिहास में मनुष्य ने जितना विकास किया है उससे कहीं अधिक विकास विज्ञान ने तीन सौ सालों में करके दिखा दिया है । लेकिन, विश्व के सारे वैज्ञानिकों का एक ही देश, धर्म, संस्कृति, लक्ष्य और भाव होना चाहिए । न कोई रूसी वैज्ञानिक हो, न अमरीकी वैज्ञानिक हो, न हिंदू वैज्ञानिक हो, न ईसाई वैज्ञानिक हो । इस विश्व वैज्ञानिक एकेडमी में विश्व के सभी प्रतिभाशाली होंगे । जिनका लक्ष्य मानव कल्याण और आधुनिकतम उपलब्धियों को प्राप्त करना रहेगा । किसी आइंस्टीन को हिटलर के धमांधता और क्रूर मतांधता के कारण अमेरिकी सरकार से आश्रय के लिए आग्रह नहीं करना पड़े । और उच्च कोटि के बुद्धिमान व्यक्तियों के द्वारा लाखों साधारण मनुष्यों के जीवन नष्ट करने के लिए एटम बम का भंडार नहीं लगाना पड़े ।

राजनीतिकों के द्वारा वैज्ञानिक लगायत सारे तंत्रों और प्रणालियों को इस तरह मरोड़ दिया गया है कि अब वैज्ञानिकों के लिए व्यक्तिगत रूप से अनुसंधान कार्य का अंजाम देना संभव नहीं है । उन्हें राजनीतिकों के प्रबल सहारे की जरूरत है । उनके अन्वेषण की योजनाएं इतनी महंगी हो गई हैं कि सिर्फ उच्च कोटि के संपन्न राष्ट्रों की सरकारें ही उनका खर्चा उठा सकती हैं । तो वैज्ञानिक अनजाने ही राजनीतिकों के हाथों का शिकार बन गया है । और इन दुष्टों ने राजनीति के नाम पर उनकी बुद्धिमत्ता को मानवता के समूल विनाश के लिए प्रयोग किया है । जिसका ज्वलंत उदाहरण आज रूस और यूक्रेन बीच के युद्ध, इजराइल और इस्लामिक देशों के बीच के युद्ध, सीरिया,

व्यक्तिगत घटना दर्ता गराऔं

जन्म, मृत्यु, विवाह, सम्बन्ध विच्छेद तथा बसाईसराईजस्ता व्यक्तिगत घटना समयमा नै आफ्नो पालिकाको वडा कार्यालयमा दर्ता गराउनुपर्दछ। किनकि व्यक्तिगत घटना दर्ता व्यक्ति पहिचानको पहिलो आधार हो। यस्ता घटना ३५ दिनभित्र स्थानीय पञ्जिकाधिकारीको कार्यालय (वडा कार्यालय) मा निःशुल्क रुपमा दर्ता गर्न सकिन्छ। सरकारलाई विकासका योजना तर्जुमा गर्न, नागरिकलाई प्रदान गरिने सेवा सुविधा सुनिश्चित गर्न, जनसंख्याको विवरण अद्यावधिक गर्न व्यक्तिगत घटना दर्ता आवश्यक हुन्छ। साथै व्यक्तिगत घटना दर्ता गरेपछि मात्रै राज्यबाट पाइने सुविधाहरू प्राप्त गर्न सकिनेछ।

शुद्धोधन गाउँपालिका
गाउँ कार्यपालिकाको कार्यालय
लुम्बिनी प्रदेश (कपिलवस्तु) नेपाल

टर्की, अफगानिस्तान, पाकिस्तान - भारत के बीच होते आ रहे खूनी खेल । ये सब दुष्ट राजनीतिज्ञों द्वारा विश्व के उच्च कोटि के चेतना के साथ किया जा रहा षडयंत्र युक्त दानवी खेल ही है । और इनसे विश्व सभ्यता को बचाना आज के मानव के लिए विकल्प रहित लक्ष्य है ।

शकुनी चरित्र राजनीतिकों के द्वारा सृजित षडयंत्र का जाल इतना सघन और मजबूत है कि उसे तोड़ना किसी एक की तो बात छोड़ दें किसी एक राष्ट्र के लिए भी असंभव है । अन्यथा सनातन के प्रांगण में पल्लवित, पुष्पित और संस्कारित भारत इतने वर्षो तक गुलामी के सिकंजो में जकड़ने को बाध्य नहीं होता । राजनीतिकों द्वारा प्रचारित तथाकथित राष्ट्रवाद, समाजवाद, कम्युनिज्म, फाँसिज्म, धर्मांधता और पूंजीवाद; ये सब के सब ऐसे जहर हैं जिससे वैज्ञानिक दृष्टिकोण के उच्च स्तरीय चेतना भी नहीं बच पा रहे हैं । सबके सब इन वादों के नायकों का गुलामी स्वीकार करने को लाचार हैं । क्योंकि वह स्वतंत्र अन्वेषक नहीं रहा, अब वह किसी विशेष राजनीतिक विचारधारा का हिस्सा बन गया है वह श्रम करता है, आविष्कार करता है, लेकिन अपने ही आविष्कार पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता । नियंत्रण राजनीतिकों के हाथों में है । वह किस दिशा में काम करे, इसका निर्देश भी राजनीतिक ही देते हैं । अन्यथा वे किसी भी योजना को न आर्थिक सहायता देंगे और नहीं भौतिक सुरक्षा ही ।

सर्जक चेतना को क्षुद्र मानसिकता के राजनयिकों के उपरोक्त पराधीनता को सहज ही स्वीकार कर लेने के पीछे जो सबसे बड़ा कारण है; और जिससे स्वयं वैज्ञानिक लोग भी आजतक अनभिज्ञ हैं; वह है भौतिक समृद्धि और खोज पर ही खुद को सीमित कर लेना । वैज्ञानिकों ने आत्म निरीक्षण, आत्म परीक्षण किया ही नहीं । उन्हें अपनी अस्तित्व और चेतना के विराटता का बोध ही नहीं है । इस विषय पर न वे लोग कभी ध्यान दिए न किसी से चर्चा की । परिणाम यह हुआ कि आज विश्व के सर्वाधिक उन्नत चेतना अत्यधिक क्षुद्र चेतना का गुलाम बनकर गौरवान्वित महसूस कर रहा है । ध्यान रहे ! सिर्फ भौतिक वस्तुओं का अन्वेषण, निरीक्षण और अध्ययन विश्लेषण धीरे-धीरे हमारी अंतसचेतना के सूक्ष्म प्रवाह को भौतिक जड़ता की ओर प्रवाहित करने लगता है । जिसे हम आसानी से महसूस नहीं कर पाते । और जब दुर्घटना फलित हो जाता है तब कोई आइंस्टीन पश्चाताप करता है । मरने से पूर्व अलबर्ट आइंस्टीन ने कहा, "अगर मुझे पता होता कि मेरी सृजनात्मकता की निष्पत्ति, मेरे जीवन भर के काम की निष्पत्ति अणुबम होगी तो मैं कभी भौतिकविद होता ही नहीं । और अगर मेरे लिए दूसरा जन्म होगा तो मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि मुझे भौतिकविद बनाने के बजाय एक प्लंबर बना दे ।" इसे कहते हैं, "वह हानि जो अच्छे लोग पहुंचाया करते हैं ।"

वैज्ञानिक बुद्धि के लोग अब तक खुद की चेतना को इनकार करते आ रहें हैं । ध्यान रहे, पंडे, पुरोहित, मौलबी और पादरी उस ईश्वर में अंधविश्वास करते हैं, जिसे उन्होंने कभी देखा नहीं; और वैज्ञानिक स्वयं पर ही अविश्वास करता चला जाता है । यहाँ दोनों ही अंधविश्वास के प्रचंड सागर मे हिलोरे ले रहे हैं । जरा सोचिए, यदि हमारे भीतर कोई चेतना नहीं हैं तो फिर पदार्थ, प्रकृति और जीवन के रहस्यों को खोजने वाला कौन है ? इस बिंदु तक विज्ञान वही पुराने, अंधविश्वासी ढंग से व्यवहार करता रहा है । यह महा विध्वंसक द्विधाग्रस्त अवस्था है । कृष्ण गीता मे छाती ठोककर कहते हैं, "संशय आत्मा विनश्यति !" अर्थात संशय से घिरा हुआ व्यक्ति अपना ही विनाश कर लेता है । अतः जब तक वैज्ञानिक अपने स्वयं के अंतःस्थल का आयाम नहीं खोलता तक वह संपूर्ण दृष्टि से वंचित ही रहेगा । वह आंशिक ही रहेगा, उसका दृष्टिकोण हमेशा सत्य के आधे भाग को ही देखेगा । जो सदासर्वदा के लिए दुर्घटना कारक होगा ।

भारत पाकिस्तान बटबारे के दौरान लाखों लोगों को मौत के घाट उतरवानेवाला

लागू औषधबाट टाढा रहौं

लागू औषधको सेवनले मानिसको शारीरिक र मानसिक स्वास्थ्य बिग्रन्छ । यसको प्रयोगबाट आफू, परिवार, समाज र राष्ट्रलाई नै अपूर्णीय क्षति पुग्ने हुँदा यस्ता पदार्थदेखि टाढा रहने प्रयत्न गरौं ।

नेपाल सरकार
गृह मन्त्रालय
लागू औषध नियन्त्रण शाखा
सिंहदरबार, काठमाडौं

वडादशैं, शुभदीपावली तथा छठ पर्व २०८१ को मंगलमय शुभकामना

"गुणस्तरीय शिक्षाका माध्यमबाट मानव मस्तिष्कमा शान्तिको विजारोपण गरौं ।"

"शान्ति, मैत्री तथा आपसी सद्भाव, सहनशीलता, मानव अधिकारको सम्मान, सहकार्य र सामूहिक प्रयास" जस्ता युनेस्कोका आदर्शलाई अंगीकार गरौं ।

युनेस्को
नेपाल राष्ट्रिय आयोग
युनेस्कोका निमित्त नेपाल राष्ट्रिय आयोगको सचिवालय
सिंहदरबार, काठमाडौं

कोई दो कौड़ी का आदमी नहीं था । भारत के समग्र नागरिक के आस्था और श्रद्धा के केंद्र महात्मा गांधी थे । भक्ति रस के संतो ने भारत में ऐसी भक्ति रस के सागर को इस तरह प्रवाहित किया कि यहां हट्टे कट्टे युवा भी तारणहार भगवान भरोसे खुद को मुठ्ठी भर अतातायियों के आगे शरणागत होना स्वीकार कर अपनी और अपने वंशो का समूल विनाश को प्राप्त कर भक्त शिरोमणि कहलाने में गौरवान्वित होने लगे । डा. भाभा चाहते तो भारत को एटमी ऊर्जा का भंडार बना सकते थे, परंतु विश्व शांति के प्रतीक्षा में खुद भी दुर्घटना का शिकार हुए और भारत को भी पराश्रित छोड़ गए । "सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास" के नए शब्दों के जंगल में पुराने भावों को समेटते हुए अपने लोगों से अधिक जिस वर्ग को प्रेम देने चले थे और जिसका मसीहा बनने चले थे २४ के चुनाब ने उस गांधीवादी विचारधारा को लात मारकर खारिज कर दिया । लेकिन ये जो, महान बनने का भूत सवार है, सर्वमान्य बनने का जो सूक्ष्म अहंकार है; इससे कितने लोग आहत होते आए हैं कभी इसपर भी चिंतन करके देखिए, फिर आपकी महानता दो कौड़ी का भी नहीं रह जाएगा ।

जब तक विज्ञान ध्यान को अन्वेषण की प्रामाणिक विधि की तरह स्वीकार नहीं करता,

कुल मिलाकर राजनीतिका मुख्य उद्देश्य, शक्ति हासिल करना होता है । और शक्ति हासिल करने के लिए सत्ता में जाना अनिवार्य होता है । सत्ता के लिए वर्तमान समय में गठबंधन करना, कूटनीतिक योजना बनाना अथवा जिस प्रकार के योजनाओं से सत्ता हासिल हो सकती है उस प्रकार के कार्य को संपन्न करना अनिवार्य होता है ।

तब तक उसका हर अनुसंधान अधूरा खोज ही रहेगा । ध्यान के लिए मन के पार जाने की क्षमता चाहिए, एक परम विशुद्ध शून्यता; जहां से परम रहस्यों के द्वार खुलते हैं जो प्रकृति के गोद में छुपे अनंतानंत रहस्यों को उद्घाटित करता है । ध्यान रहे ! विज्ञान अपनी अधूरेपन के कारण ही खतरनाक होता जा रहा है । वह बड़ी आसानी से मृत्यु की सेवा में लग गया है, क्योंकि वह चेतना में विश्वास नहीं करता, वह जड़ पदार्थ में विश्वास करता है । तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि नागासाकी की दुर्घटना हुई या हिरोशिमा की दुर्घटना हुई या पूरी पृथ्वी ही आत्मघात क्यों न कर ले । इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि सभी कुछ जड़ पदार्थ है, चेतना है ही नहीं । कुछ भी खोता नहीं है । जब सब मिट्टी ही है; तो कौन मरता है और कौन मारता है, इसका कोई मूल्य नहीं । उधर राजनीतिक और व्यापारिक लोग अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए भेड़िए की तरह झपट्टा मारने को तैयार बैठा है । किसी को अपनी सत्ता सुरक्षित रखने के लिए कोरोना जैसी बीमारी और राजनीतिक अराजकता फैलाकर जनता को मारना और त्रासित करना है; तो वहीं एक बहुत बड़ा समूह है व्यापारी और उद्योग पतियों का जिन्हें उक्त महामारी और विश्वयुद्ध में अपनी औषधि और अनेकानेक उत्पाद को बेचना है । और यह सब उन्हें अपनी जीवन चलाने के लिए नहीं करना है, बल्कि सबसे ज्यादा धनवान और शक्तिशाली बनाना है । अत: यह विचारणीय है कि वैज्ञानिक अब इन दुष्टों के खिलाफ खुद को खड़ा करने का साहस जुटाने का प्रयास करें ।

अत:, वैज्ञानिक इस बात का स्मरण रखे कि अब वह आत्म-विनाशक आणविक शस्त्रास्त्र राजनीतिकों के हाथों में सौंप रहा है । वह नये मनुष्य और नई मनुष्यता के विरोध में काम कर रहे है । वह अपने ही बच्चों के खिलाफ व्यवहार कर रहा है । वह सभी के लिए मृत्यु के बीज बो

व्यक्तिगत घटना दर्ता गराऔं

जन्म, मृत्यु, विवाह, सम्बन्ध विच्छेद तथा बसाईसराईजस्ता व्यक्तिगत घटना समयमा नै आफ्नो पालिकाको वडा कार्यालयमा दर्ता गराउनुपर्दछ। किनकि व्यक्तिगत घटना दर्ता व्यक्ति पहिचानको पहिलो आधार हो । यस्ता घटना ३५ दिनभित्र स्थानीय पञ्जिकाधिकारीको कार्यालय (वडा कार्यालय) मा निःशुल्क रुपमा दर्ता गर्न सकिन्छ । सरकारलाई विकासका योजना तर्जुमा गर्न, नागरिकलाई प्रदान गरिने सेवा सुविधा सुनिश्चित गर्न, जनसंख्याको विवरण अद्यावधिक गर्न व्यक्तिगत घटना दर्ता आवश्यक हुन्छ । साथै व्यक्तिगत घटना दर्ता गरेपछि मात्रै राज्यबाट पाइने सुविधाहरू प्राप्त गर्न सकिनेछ।

विजया दशमी, शुभ दिपावली तथा छठ पर्व २०८१ को पावन अवसरमा सुख, शान्ति, एवं समृद्धिका लागि **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं ।

रुपेश कुमार
अध्यक्ष

कौडेना गाउँपालिका
गाउँ कार्यपालिकाको कार्यालय
मधेश प्रदेश (सर्लाही) नेपाल

व्यक्तिगत घटना दर्ता गराऔं

जन्म, मृत्यु, विवाह, सम्बन्ध विच्छेद तथा बसाईसराईजस्ता व्यक्तिगत घटना समयमा नै आफ्नो पालिकाको वडा कार्यालयमा दर्ता गराउनुपर्दछ। किनकि व्यक्तिगत घटना दर्ता व्यक्ति पहिचानको पहिलो आधार हो । यस्ता घटना ३५ दिनभित्र स्थानीय पञ्जिकाधिकारीको कार्यालय (वडा कार्यालय) मा निःशुल्क रुपमा दर्ता गर्न सकिन्छ । सरकारलाई विकासका योजना तर्जुमा गर्न, नागरिकलाई प्रदान गरिने सेवा सुविधा सुनिश्चित गर्न, जनसंख्याको विवरण अद्यावधिक गर्न व्यक्तिगत घटना दर्ता आवश्यक हुन्छ । साथै व्यक्तिगत घटना दर्ता गरेपछि मात्रै राज्यबाट पाइने सुविधाहरू प्राप्त गर्न सकिनेछ।

विजया दशमी, शुभ दिपावली तथा छठ पर्व २०८१ को पावन अवसरमा सुख, शान्ति, एवं समृद्धिका लागि **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं ।

रामसिंहासन राय
अध्यक्ष

बसबरीया गाउँपालिका
गाउँ कार्यपालिकाको कार्यालय
मधेश प्रदेश (सर्लाही) नेपाल

रहा है। अब समय आ गया है कि वैज्ञानिक इस बात को सीख ले कि किस चीज से जीवन को सहयोग मिलता है और किस चीज से जीवन नष्ट होता है। सिर्फ अपनी सुख-सुविधाओं और तनख्वाओं के लिए वे गुलामों की भांति या यंत्र-मानव की भांति युद्ध के लिए और एक अभूतपूर्व विनाश के लिए मेहनत न करते रहें। वैज्ञानिक की एक आध्यात्मिक खोज होनी चाहिए और उसके बाद एक क्रांतिकारी होना चाहिए। उसे राजनीतिकों के निर्देश का पालन नहीं करना चाहिए। उसे खुद तय करना है कि पर्यावरण के लिए क्या सहयोगी है; बेहतर जीवन के लिए, अधिक सुंदर अस्तित्व के लिए क्या सहायक हो सकता है। और अगर राजनीतिक उसे बलपूर्वक मौत की सेवा में नियुक्त करते हैं तो वह उनकी भर्त्सना करे। उसे सभी जगह पूरी तरह से इनकार कर देना चाहिए-सोवियत संघ में, अमरीका में, चीन में, दुनिया के प्रत्येक देश में। वैज्ञानिकों का एक अपना जागतिक संगठन होना चाहिए जो इस बात का निर्णय करे कि कौन से अनुसंधान किए जाने चाहिए और कौन से छोड़ देने चाहिए।

जिस प्रकार एक दिन वैज्ञानिकों ने धर्म और उसके आदेशों के खिलाफ विद्रोह किया, अब फिर से एक बार उन्हें विद्रोह करना है-राजनीतिकों और उनके आदेशों के खिलाफ। वैज्ञानिकों को स्वतंत्र रूप से खड़े होना है और इस बात को साफ समझ लेना है कि अब वे अपना शोषण नहीं होने देंगे। हर कहीं उनका शोषण हो रहा है। सिर्फ इसलिए कि उन्हें बड़े-बड़े सम्मान मिलते हैं, नौबल पुरस्कार मिलते हैं- वे अपने नौबल पुरस्कार के लिए इन सब निरर्थक पुरस्कारों के लिए पूरी मनुष्यता का बलिदान देने को तैयार हैं! अब उन्हें ये बचकानी हरकतें छोड़ देनी होंगी। ये पुरस्कार और ये इनाम और ये प्रतिष्ठित ओहदे, ये सब उन्हें मूर्ख बनाकर बहलाने के लिए हैं।

राजनीतिक पार्टियों के दलालों के कारण विक्षुब्ध और आक्रोशित कुछ टेक्निकल विद्वानों ने प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ही सभी राजनीतिक दलों और नेताओं का खुलकर विरोध किया था। अमेरिका में महामंदी के दौरान 'टेक्नाटो' में शामिल व्यक्तियों के जिस समूह ने काल्पनिक संसार का सपना देखा था उसकी गूंज आज भी अमेरिका की सिलिकॉन वैली जैसी जगहों में सुनाई देती है। प्रथम विश्व युद्ध ने अर्थव्यवस्था के एक बड़े दौर की शुरुआत की, जिसका अंत एक नुक़सान और अचानक घाटे के साथ हुआ. जिसे '१९२९ का क्रैश' कहा जाता है। जब दुनियाभर के वित्तीय बाज़ार धराशायी हो गए, आधी दुनिया की अर्थव्यवस्था डूब गई और लाखों लोग बेरोज़गार हो गए। जिसका पूरा श्रेय तात्कालिक राजनेताओं को जाता है। हलाकि हम आज भी उसी दुनियां में जीने को मजबूर हैं। परंतु 'इंटरनेशनल ऑर्गेनाइज़ेशन एज़ टेक्नोक्रेटिक यूटोपिया' के लेखक स्टीफ़िक कहते हैं, कि टेक्नोक्रेटिक आंदोलन की प्रतिक्रिया बहुत तेज़ थी। उनका मानना था कि टेक्नोक्रेसी पूंजीवाद और राजनीति पर नियंत्रण कर सकती है, इसे ख़त्म कर सकती है। इसमें कोई शक नहीं कि टेक्नाटो की काल्पनिक दुनिया कभी नहीं बनी, लेकिन टेक्नोक्रेट आंदोलन यानी वैज्ञानिकों और बुद्धिजीवियों का वो समूह, जिन्होंने १९३० और १९४० के दशक में इस 'अभूतपूर्व दुनिया' का सपना दिखाया था, उनके इस आंदोलन के सदस्यों की संख्या पांच लाख से भी अधिक थी। टेक्नोक्रेट्स का मानना था कि आधुनिकता और तकनीकी प्रगति ने नए अवसर पैदा कर दिए हैं, लेकिन इस विकास और आधुनिकता ने बड़े पैमाने पर बेरोज़गारी, पर्यावरणीय गिरावट, असाध्य रोग, जनसंख्या वृद्धि और असमानता जैसी नई सामाजिक समस्याओं को भी जन्म दिया है। इस आंदोलन के संस्थापक, हॉवर्ड स्कॉट के अनुसार, लोकतंत्र ने बहुत से नाकाबिल लोगों को सत्ता तक पहुंचाया है, जिन्होंने ग़लत निर्णय लिए हैं जो सामाजिक और मानवीय बर्बादी के कारण बने। उनका मानना था कि इसका हल विज्ञान में है। इस नई तकनीकी दुनिया पर इंजीनियरों और विशेषज्ञों को शासन करना चाहिए था, जो रोज़मर्रा की समस्याओं के लिए वैज्ञानिक सिद्धांतों को सख़्ती से लागू करेंगे। इस आंदोलन के प्रशंसकों में एचजी वेल्स जैसे साइंस फिक्शन लिखने वाले लेखक भी थे। कनाडा के जोशुआ हलडरमैन नाम के एक कायरोप्रैक्टर (एक ऐसा व्यक्ति जो मानता है कि बहुत सी बीमारियां तंत्रिका प्रवाह में हस्तक्षेप के कारण होती हैं) ने १९३६ से १९४१ तक इस आंदोलन का नेतृत्व किया। हालांकि वे आखिर में निराश होकर दक्षिण अफ़्रीका चले गए थे, लेकिन उनका पोता, जो १९७१ में पैदा हुआ था, आज मंगल ग्रह पर एक टेक्नोक्रेसी बनाने का सपना पूरा करने में लगा है। ये अमेरिकी टेक्नोलॉजी कंपनी टेस्ला, स्पेस कंपनी स्पेसएक्स और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्विटर के मालिक एलन मस्क हैं।

सामाजिक और आर्थिक समानता में विश्वास के कारण, या अधिनायकवाद और लोकतंत्र को ख़त्म करने की इच्छा की वजह से, इस आंदोलन ने खुद को कम्यूनिज़म, समाजवाद, फ़ासीवाद, नाज़ीवाद, उदारवाद, रूढ़िवाद, और निश्चित रूप से पूंजीवादी व्यवस्था यानी उस समय की सभी 'विचारधाराओं' के ख़िलाफ़ बताया था। असल में, आंदोलन के सदस्यों को किसी भी राजनीतिक दल से संबंध रखने से मना किया गया था। टेक्नोक्रेसी आंदोलन के

कृषिलाई व्यवसायिक बनाऔं

हामी निर्वाहमुखी कृषि प्रणालीमा आधारित छौं। यसले हाम्रो परिवारमात्रै पालिँदै आएको छ। तपाईंसँग भएको जमिनलाई राम्रो उपयोग गरी अरु धेरैको परिवारलाई पाल्नसक्ने खाद्यान्न उत्पादन गर्न सकिनेछ। त्यसका लागि हामीले हाम्रो कृषि कर्मलाई आधुनिकीकरण गरी व्यवसायिक कृषि गर्न सक्छौं। खेतीयोग्य जमिन बाँझो नराखी आधुनिक र वैज्ञानिक तरिकाले कृषि गरेमा लाखौं खर्च गरेर विदेशिनु पर्दैन। यसरी विदेशिनु भन्दा स्वदेशमै व्यवसायिक कृषि र पशुपालन गरौं, व्यवसायिक कृषि उत्पादनमार्फत आर्थिक उपार्जन गरौं।

रामग्राम नगरपालिका
नगर कार्यपालिकाको कार्यालय
लुम्बिनी प्रदेश (नवलपरासी पश्चिम) नेपाल

नेता हावर्ड स्कॉट का कहना था कि "विज्ञान का शासन होगा ।" हावर्ड स्कॉट ने १९१९ में न्यूयॉर्क में वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के एक समूह के साथ मिलकर एक 'तकनीकी गठबंधन' की स्थापना की थी, जो केवल कुछ ही वर्षों तक चला, लेकिन बाद में टेक्नोक्रेटिक मूवमेंट के नाम वाले आंदोलन की स्थापना की गई । ये विचार १९३३ में टेक्नोक्रेसी इनकॉर्पोरेशन में बदल गए, इस आंदोलन को तब से इसी नाम से जाना जाता है । इसकी स्थापना उत्तरी अमेरिका में समाज, राजनीति और अर्थव्यवस्था में क्रांतिकारी सुधारों को बढ़ावा देने के लिए एक अकादमिक और शोध संगठन के रूप में की गई थी ।

अतः अब समय आ गया है, कि हम लोग भी अपनी अपनी स्तर और क्षमता के अनुसार इन दुष्ट राहु केतुओं से खुद को और भावी संतति को सुरक्षित करने का प्रयास करें । मैं चाहूंगा कि हर प्रांत के सभी विश्व विद्यालय सारे उपकुलपतियों और ख्याति प्राप्त प्राध्यापकों की परिषद आयोजित हो । जो प्रतिष्ठित बुद्धिजीवी वर्ग है, जो कि विश्व विद्यालय में काम नहीं कर रहा होगाः कलाकार, कवि, लेखक, उपन्यासकार, नर्तक, अभिनेता, संगीतज्ञ उन्हें भी आमंत्रित किया जाए । उसमें प्रतिभा के सारे आयाम और वे सारे लोग सम्मिलित होंगे जिन्होंने कुछ योग्यता दिखाई हो, राजनीतिकों को सर्वथा छोड़ कर ।

ध्यान रहे ! राजनीतिकों के पास जो भी ताकत है वह हमारी दी हुई है । हम उसे वापस ले सकते हैं । वह उनकी ताकत नहीं है, वह हमारी ताकत है । हमें सिर्फ उसे वापस लेने का उपाय खोजना है । क्योंकि देना बहुत आसान है, लेना थोड़ा कठिन है । जब तुम उनसे ताकत छीन लोगे तो वे इतने सरल और निश्छल नहीं होंगे जितने उस वक्त थे जब उसे तुमसे मांग रहे थे । वह हमारी ताकत है, लेकिन भीड़ अगर उसे उन्हें ही सौंपती रही तो वह उन्हीं के पास रहेगी । भीड़ को किसी भी बात के लिए राजी किया जा सकता है । यह बुद्धिजीवियों का काम है । मैं कहना चाहूंगा कि अगर मनुष्य-जाति को कुछ हो गया तो पूरे बुद्धिजीवी वर्ग को धिक्कार होगाः "तुम क्या कर रहे थे ? अगर वे बेवकूफ दुनिया को खत्म करने पर तुले हुए थे तो तुम क्या कर रहे थे ? तुम सिर्फ बड़बड़ाते रहे, शिकायत से भरे रहे; और तुमने कुछ भी नहीं किया ।" हम हिजड़े माने जाएंगे । हमारी संतति हम पर थूकगी । जिस प्रकार मुगलों और अंग्रेजों के गुलामी को लेकर आज के युवा, गांधी जैसे को घृणा भरी निगाहों से देख रहे हैं ।

कृषिको आधार, सिचाईमा सुधार !

तिलकराम बुढाथोकी
कार्यालय प्रमुख
नेपाल गण्डक पश्चिमी नहर सिचाई व्यस्थापन कार्यालय
सेमरी, नवलपरासी, लुम्बिनी प्रदेश, नेपाल

साझा कुरियर एण्ड कार्गो प्रा. लि.
Sajha Courier & Cargo Pvt. Ltd

PROVINCE-1:
BIRATNAGAR
Mahendra Chowk
Tel: 021-517638
Mob. : 9852072795

PROVINCE-2:
JANAKPUR
Bhanu Chowk
Tel: 9854021005
9844037829

PROVINCE-3:
HETAUDA
TCN Road
Tel: 057-521766
Mob: 9855070282

PROVINCE-4:
POKHARA
Chiple Dhunga
TEL: 061-584050
MOB: 9856084050

PROVINCE-5:
BUTWAL
Durga Mandir Line
Tel: 071-531870
Mob: 9847586158

PROVINCE-6:
SURKHET
Hattiya line
Tel: 9851234360
9802028078

PROVINCE-7:
DHANGADI
Kailali Pul
Tel: 091-524836
9858420919

HEAD OFFICE:
SAJHA COMPLEX, Narayaneshwor Marg
Baneshwor Height, Kathmandu-10
Tel: 01-5706789, 5705269, 5705373
E-mail: info@sajhacourier.com.np
Website: www.sajhacourier.com

125-BRANCHS
AND
SUB BRANCH

ईपीजी रिपोर्ट मधेश के खिलाफ है, सरकार इसे सार्वजनिक करे

मुरली मनोहर तिवारी (सीपू)

सन् १८०५ का नक्शा नेपाल के उस विस्तार दर्शाता है, जो भारतीय रियासतों को परास्त कर प्राप्त हुआ था । इसके परिणामस्वरूप नेपाल की पश्चिमी सीमा कांगड़ा के निकट सतलुज नदी तक पहुंच गयी थी । सुगौली संधि के कारण यह भाग भारत को वापस मिले । दो साल लंबे चले ब्रिटिश-नेपाली युद्ध को खत्म करने के लिए १८१६ में, ईस्ट इंडिया कंपनी और नेपाल की गोरखा राजशाही ने इस संधि पर हस्ताक्षर किए थे । इस संधि के तहत, मधेश क्षेत्र का एक हिस्सा भारत से अलग होकर नेपाल के अधिकार क्षेत्र में चला गया । इस भाग को नेपाल में, पूर्वी तराई या मिथिला कहा जाता है ।

EPG (एमिनेंट पर्सन्स ग्रुप) क्या है ?

केपी शर्मा ओली के नेतृत्व वाली तत्कालीन सरकार के दौरान प्रतिष्ठित व्यक्तियों का एक समूह बनाया गया था, जिसमें नेपाल के ४ प्रतिष्ठित व्यक्ति और भारत के ४ प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल थे । समूह ने नेपाल और भारत में कई बैठकें की हैं और दोनों देशों के बीच समस्याओं और समाधानों के साथ एक रिपोर्ट तैयार की है । लेकिन इस बात पर सहमति बनी कि रिपोर्ट को पहले भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उसके बाद ही नेपाल के प्रधानमंत्री को समझना चाहिए । इसे अब तक सार्वजनिक नहीं किया गया है क्योंकि भारत के प्रधानमंत्री ने अभी तक रिपोर्ट को समझने का समय नहीं दिया है ।

ईपीजी रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जाना चाहिए

EPG की रिपोर्ट को स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि यह नेपाल-भारत सीमा निवासियों की समस्याओं का समाधान नहीं करती है । साथ ही इसके कारण सुगौली संधि और भारत-नेपाल शान्ति तथा मैत्री सन्धि १९५० को बाधित करती है ।

पहले सुगौली संधि को समझते हैं

सुगौली संधि, ईस्ट इंडिया कंपनी और नेपाल के राजा के बीच हुई एक संधि है, जिसे १८१४-१६ के दौरान हुये ब्रिटिश-नेपाली युद्ध के बाद अस्तित्व में लाया गया था । इस संधि पर २ दिसम्बर १८१५ को हस्ताक्षर किये गये और ४ मार्च १८१६ को इसका अनुमोदन किया गया ।

सुगौली संधि के क्षेत्रीय प्रभाव :- संधि के तहत, नेपाल ने अपने नियंत्रण वाले भूभाग का लगभग एक तिहाई हिस्सा गंवा दिया, जिसमे नेपाल के राजा द्वारा पिछले २५ साल में जीते गये क्षेत्र जैसे कि पूर्व में सिक्किम, पश्चिम में कुमाऊं और गढ़वाल राजशाही और दक्षिण में तराई का अधिकतर क्षेत्र शामिल था । तराई भूमि का कुछ हिस्सा १८१६ में ही नेपाल को लौटा दिया गया । १८६० में तराई की भूमि का एक बड़ा हिस्सा नेपाल को १८५७ के भारतीय विद्रोह को दबाने में ब्रिटिशों की सहायता करने की एवज में पुनः लौटाया गया ।

दिसम्बर १९२३ में सुगौली संधि को अधिक्रमित कर "सतत शांति और मैत्री की संधि", में प्रोन्नत किया गया और ब्रिटिश निवासी के दर्जे को प्रतिनिधि से बढ़ाकर दूत का कर दिया गया ।

सुगौली संधि और मधेश :- सन् १८०५ का नक्शा नेपाल के उस विस्तार दर्शाता है, जो भारतीय रियासतों को परास्त कर प्राप्त हुआ था । इसके परिणामस्वरूप नेपाल की पश्चिमी सीमा कांगड़ा के निकट सतलुज नदी तक पहुंच गयी थी । सुगौली संधि के कारण यह भाग भारत को वापस मिले । दो साल लंबे चले ब्रिटिश-नेपाली युद्ध को खत्म करने के लिए १८१६ में, ईस्ट इंडिया कंपनी और नेपाल की गोरखा राजशाही ने इस संधि पर हस्ताक्षर किए थे । इस संधि के तहत, मधेश क्षेत्र का एक हिस्सा भारत से अलग होकर नेपाल के अधिकार क्षेत्र में चला गया । इस भाग को नेपाल में, पूर्वी तराई या मिथिला कहा जाता है ।

सुगौली संधि से पहले तक :- सुगौली संधि के अस्तित्व में आने तक, पूर्व में दार्जिलिंग और तिस्ता, दक्षिण-पश्चिम में नैनीताल और पश्चिम में कुमाऊं राजशाही, गढ़वाल राजशाही और बाशहर जैसे क्षेत्र नेपाल के अधीन आते थे । इन क्षेत्रों पर नेपाल ने पिछले लगभग २५वर्षों के दौरान विजय प्राप्त की थी, जिन्हें संधि के बाद भारत को वापस लौटाया गया ।

सुगौली संधि की शर्तें :- ब्रिटिश-नेपाली युद्ध के बाद, नेपाल सरकार और ईस्ट इंडिया

कंपनी के बीच शांति और मैत्री की एक संधि पर हस्ताक्षर किये गये। २ दिसम्बर १८१५ को इस संधि पर नेपाल सरकार की ओर से राज गुरु गजराज मिश्रा जिनके सहायक चंद्र शेखर उपाध्याय थे और कंपनी की ओर से लेफ्टिनेंट कर्नल पेरिस ब्रेडशॉ द्वारा हस्ताक्षर किये गये। ४ मार्च १८१६ को चंद्र शेखर उपाध्याय और जनरल डेविड ऑक्टरलोनी द्वारा मकवानपुर में संधि की हस्ताक्षरित प्रतियों का आदान प्रदान किया गया।

संधि की शर्तें निम्नलिखित थीं: –

१. ईस्ट इंडिया कंपनी और नेपाल के राजा के बीच सदैव शांति और मित्रता रहेगी।

२. नेपाल के राजा उन सभी भूमि दावों का परित्याग कर देंगे जो युद्ध से पहले दोनों राष्ट्रों के मध्य विवाद का विषय थे और उन भूमियों की संप्रभुता पर कंपनी के अधिकार को स्वीकार करेंगे।

३. नेपाल के राजा शाश्वत रूप से निम्न उल्लिखित सभी प्रदेशों को ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंप देंगे :

(क) काली और राप्ती नदियों के बीच का सम्पूर्ण तराई क्षेत्र।

(ख) बुटवाल को छोडकर राप्ती और गंडकी के बीच का सम्पूर्ण तराई क्षेत्र।

(ग) गंडकी और कोशी के बीच का सम्पूर्ण तराई क्षेत्र जिस पर ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा अधिकार स्थापित किया गया है।

(घ) मेची और तीस्ता नदियों के बीच का सम्पूर्ण तराई क्षेत्र।

(च) मेची नदी के पूर्व के भीतर प्रदेशों का सम्पूर्ण पहाड़ी क्षेत्र। साथ ही पूर्वोक्त क्षेत्र गोरखा सैनिकों द्वारा इस तिथि से चालीस दिन के भीतर खाली किया जाएगा।

४. नेपाल के उन भरदारों और प्रमुखों, जिनके हित पूर्वगामी अनुच्छेद (क्रमांक ३) के अनुसार उक्त भूमि हस्तांतरण द्वारा प्रभावित होते हैं, की क्षतिपूर्ति के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी, २ लाख रुपये की कुल राशि पेंशन प्रतिवर्ष के रूप में देने को तैयार है जिसका निर्णय नेपाल के राजा द्वारा लिया जा सकता है।

५. नेपाल के राजा, उनके वारिस और उत्तराधिकारी काली नदी के पश्चिम में स्थित सभी देशों पर अपने दावों का परित्याग करेंगे और उन देशों या उनके निवासियों से संबंधित किसी मामले में स्वयं को सम्मिलित नहीं करेंगे।

६. नेपाल के राजा, सिक्किम के राजा को उनके द्वारा शासित प्रदेशों के कब्जे के संबंध में कभी परेशान करने या सताने की किसी भी गतिविधि में संलग्न नहीं होंगे। यदि नेपाल और सिक्किम के बीच कोई विवाद होता है तो उसे ईस्ट इंडिया कंपनी की मध्यस्थता के लिए भेजा जाएगा।

७. एतद्द्वारा नेपाल के राजा, ब्रिटिश सरकार की सहमति के बिना किसी भी ब्रिटिश, अमेरिकी या यूरोपीय नागरिक को अपनी किसी भी सेवा में ना तो नियुक्त करेंगे ना ही उसकी सेवाओं को बनाये रखेंगे।

८. एतद्द्वारा नेपाल और ब्रिटेन (ईस्ट इंडिया कंपनी) के बीच स्थापित शांति और सौहार्द के संबंधों की सुरक्षा और उनमें सुधार के उद्देश्य से, यह सहमति बनती है कि एक का मान्यता प्राप्त मंत्री, दूसरे की अदालत में रहेगा।

९. इस संधि का अनुमोदन नेपाल के राजा द्वारा इस तारीख से १५ दिनों के भीतर किया जाएगा और उसे लेफ्टिनेंट कर्नल ब्रेडशॉ को सौंपा जाएगा, जो उसे अगले

राष्ट्रीय दलित आयोगक सूचना

कुनो भी व्यक्ति किनको प्रथा, परम्परा, धर्म,संस्कृति, रीतिरिवाज,जाति-पाति,वंश, समुदाय, पेशा, व्यवसाय आ शारिरिक अवस्थाके आधार में कोनो वस्तुके सेवा आ सुविधा उत्पादन आ बिक्रि करै सँ रोकैके आ कि कोनो खास जातिके व्यक्तिके मात्रे बिक्रि करवाक हेतु उत्पादन आ वितरण करवाक, परिवारके सदस्यके बहिष्कार कऽ या गाम सँ निकालै या निकलवाबैके लेल बाध्य करैमे, अन्तरजातीय विवाह करै सँ रोकेमे, भ गेल विवाह विच्छेद करवाबैमे, लेख, रचना, चित्र, कार्टून, पोष्टर, साहित्य आ कोनो दोसर माध्यम सँ जातिय उच्च आ कि नीच देखेनाई, जातिय उच्चता, आ घृणामे आधारित विचारके प्रचार -प्रसार करै वा कोनो दोसर तरह सँ जातिय विभेदके प्रोत्साहन करेवामे तथा श्रममे लगेवाक वा श्रम सँ हटेवाकमे आ की पारिश्रमिकमे भेदभाव करवामे कोनो कसूर नहीं हेबाक चाहि। जदि कियो एहन कसूर करैत अछि तऽजातिय तथा अन्य समाजिक छुवाछुत र भेदभाव (कसूर र सजाय) ऐन, २०६८ के दफा ४ के उपदफा ८,९,१०,११,१२ आ १३ के तहत कसूर करै वाला व्यक्तिके तीन महीना सँ लकऽ तीन साल तकके कैद आ बीस हजार रुपया सँ लकऽ एक लाख रुपया तक जुर्माना होइत अछि।

कियो भी ऊपर उल्लेखित भेल कसूर करैमे यदि लागल अछि तऽ नजदीकके प्रहरी कार्यालय, स्थानीयतह वा राष्ट्रीय दलित आयोगमे शिकायत दर्ज करि।

राष्ट्रीय दलित आयोग
कुपण्डोल, ललितपुर

9841201799, 9841539849

paramppara Banquet

BIRTA, BIRGUNJ-4

विवाह, ब्रतबन्ध, पार्टी, सेमिनार इत्यादीको लागी अग्रीम बुकिङ्ग शुरु छ!

२० दिनों में या उससे पहले (यदि साध्य हो), गवर्नर जनरल से अनुमोदित करा कर राजा को सुपुर्द करेंगे ।

इसके बाद दिसम्बर १८१६ में एक उत्तरगामी समझौते पर सहमति बनी जिसके अनुसार नेपाल को मेची नदी के पूर्व और महाकाली नदी के पश्चिम के बीच का तराई क्षेत्र वापस लौटा दिया गया। इस समझौते के फलस्वरूप दो लाख रुपए प्रतिवर्ष की क्षतिपूर्ति राशि के प्रावधान को समाप्त कर दिया गया। एक भूमि सर्वेक्षण के द्वारा दोनों राष्ट्रों के बीच की सीमा को तय करने का प्रस्ताव भी स्वीकार किया गया था।

१९५० में भारत (अब स्वतंत्र) और नेपाल ने एक नयी संधि पर दो स्वतंत्र देशों के रूप में हस्ताक्षर किए गए जिसका उद्देश्य दोनों देशों के बीच संबंधों को एक नए सिरे से स्थापित करना था। भारत-नेपाल शान्ति तथा मैत्री सन्धि (क्ष्लमय-ल्भउर्बा त्चभबतथ या एभबअभ बलम ँचष्भलमकजष्उ) भारत और नेपाल के बीच में ३१ जुलाई १९५० में काठमांडु में हस्ताक्षरित की गई एक अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि है जिस के अन्तर्गत दोनों देशों के सम्बन्ध निर्धारित किए गए हैं । इसके अनुसार दोनों देशों की सीमा एक-दूसरे के नागरिकों के लिए खुली रहेगी और उन्हें एक-दूसरे के देशों में बिना रोकटोक रहने और काम करने की अनुमति होगी । यह सन्धि दोनों देशों के बीच एक गहरा मित्रता का सम्बन्ध स्थापित करती है ।

अब इपीजी रिपोर्ट की समीक्षा की जानी चाहिए क्योंकि इसमे नेपाल और भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों के लोगों का प्रतिनिधित्व नहीं है । यह मधेसी समुदाय की जरूरतों को संबोधित नहीं करता है । हालांकि ईपीजी रिपोर्ट नेपाल-भारत संबंधों की समीक्षा करने का दावा करती है, लेकिन यह मधेसी समुदाय की विशिष्ट जरूरतों और समस्याओं का समाधान नहीं करती है । भारत के साथ मधेसी समुदाय के ऐतिहासिक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संबंध को यह रिपोर्ट नजरअंदाज करती है ।

रिपोर्ट में मधेश के अनुपातिक प्रतिनिधित्व एवं भागीदारी के मांग को हतोत्साहित किया गया है । चूंकि ईपीजी में मधेसी समुदाय का उचित प्रतिनिधित्व नहीं था, इसलिए इसमें मधेसियों के वास्तविक हितों को शामिल नहीं किया गया। सीमा प्रबंधन और मधेश आंदोलन के मर्म को अनदेखा किया गया है ।

नेपाल-भारत की खुली सीमा मधेसी समुदाय के लिए जीवन का आधार है । रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि इसे सख्ती से प्रबंधित और नियंत्रित किया जाना चाहिए, जिसका मधेसियों के दैनिक जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ सकता है । रिपोर्ट में सीमा क्षेत्र में प्रवासन, रोजगार और आर्थिक गतिविधि को सुविधाजनक बनाने के लिए कोई ठोस योजना प्रस्तुत नहीं की गई है । रिपोर्ट से नेपाल और भारत, खासकर मधेश के बीच पारिवारिक, धार्मिक और सांस्कृतिक रिश्ते कमजोर हो सकते हैं। मधेशियों का भारत की सांस्कृतिक संपदा और धार्मिक केंद्रों से गहरा संबंध है । यदि रिपोर्ट की माँग के अनुसार सीमा व्यवस्था कड़ी कर दी गई तो ये रिश्ते टूट जाएंगे । भारत के साथ ऐतिहासिक रिश्ते और बेटी-रोटी का संबंध कमजोर हो जाएगा।

मधेसियों का भारत के साथ गहरा ऐतिहासिक संबंध है और रिपोर्ट इस संबंध को नजरअंदाज करती है और इससे कूटनीतिक रूप से असहज स्थिति पैदा हो सकती है। मधेसियों के लिए भारत से रिश्ता सिर्फ राजनीतिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और सांस्कृतिक भी है। इसे कमजोर करना मधेसी समुदाय की पहचान और अधिकारों का हनन है ।

रिपोर्ट में जल संसाधन प्रबंधन के मामले में काठमांडू से कोसों दूर रहने वाले मधेसियों के अधिकारों की अनदेखी की गई है । जल संसाधनों पर मधेश का अधिकार कमजोर होने का खतरा है। जब भारत के साथ जल संसाधन बंटवारे में मधेसियों की आवाज नहीं सुनी जाएगी, तो यह विकास परियोजनाओं में उनकी पहुंच और लाभ को सीमित कर सकता है ।

ईपीजी रिपोर्ट सुरक्षा सिफारिशें करेगी, जिससे मधेश में सैन्य उपस्थिति और सीमा सुरक्षा बढ़ने की संभावना है । इससे मधेसियों की स्वतंत्रता और जीवनशैली में हस्तक्षेप हो सकता है । सामरिक दृष्टि से मधेसियों की सुरक्षा में चुनौतियाँ आएंगी । रिपोर्ट मधेश के भौगोलिक महत्व को ध्यान में रखे बिना दोनों देशों के बीच संबंधों को फिर से परिभाषित कर सकती है, जो मधेश के रणनीतिक और आर्थिक सशक्तिकरण में बाधा बनेगी । नेपाल-भारत संबंधों में मधेश के विशेष महत्व को ध्यान में नहीं रखा गया और इसका मधेश समुदाय के भविष्य पर गहरा प्रभाव पड़ेगा । स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए भारत के साथ सहयोग जरूरी है । मधेसियों की शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास के लिए भारत का समर्थन अपरिहार्य है, और ईपीजी रिपोर्ट भारत के साथ सहयोग को कमजोर कर सकती है ।

ईपीजी रिपोर्ट मधेसी समुदाय की वास्तविक समस्याओं का समाधान नहीं करती है, इसलिए मधेसी समुदाय को एकजुट होकर इसे रद्द करने की मांग उठानी चाहिए। मधेश के कल्याण और सशक्तिकरण के लिए नेपाल की संघीय व्यवस्था और भारत के साथ विशेष संबंधों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

फलफूल रोपौं, आम्दानी बढाऔं

हाम्रो देशमा वर्षेनी करोडौंको फलफूल विदेशबाट आयात हुने गर्दछ। त्यसैले हामीले हाम्रै खेतबारीमा फलफूल रोपेर आत्मनिर्भर किन नहुने। हामीले एकपटक लगाएको फलफूलको बिरुवाले बर्षौं आम्दानी दिन सक्छ, फलफूल खेती आम्दानीको दिगो माध्यम हुनसक्छ। तराई, पहाड र हिमाल जहाँ पनि मौसम अनुसारको फलफूल खेती गर्न सकिनेछ। थोरै लगानीमा पनि फलफूल खेतीबाट धेरै आम्दानी गर्न सकिन्छ। फलफूल खेती तपाईंको लागि अवसर बन्न सक्छ।

सुस्ता गाउँपालिका
गाउँ कार्यपालिकाको कार्यालय
लुम्बनी प्रदेश (नवलपरासी) नेपाल

सहकारी घोटाला :

लामिछाने का संकटपूर्ण राजनीतिक जीवन

लिलानाथ गौतम ...

लामिछाने विरोधाभाषपूर्ण अभिव्यक्ति देते हैं कि उनको क्लिनचिट प्राप्त है । सुशासन के लिए चिल्ला-चिल्ला कर टेलिभिजन कार्यक्रम चलानेवाले और राजनीतिक भाषण देनेवाले लामिछाने राजनीतिक नैतिकता की बात भी करते थे । आज खुद वह सुशासन और राजनीतिक नैतिकता के कठघरे में खड़े हैं । ऐसी परिस्थिति में उनको पार्टी सभापति पद त्याग कर एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए था और रास्वपा पार्टी को बचाना चाहिए था । लेकिन झूठा अभिव्यक्ति देकर पार्टी को ही दांव पर लगाने की ओर अग्रसर हैं ।

सञ्चार क्षेत्र में एक समय रवि लामिछाने का नाम गर्व से लिया जाता था । कई सर्वसाधारण उनको 'भगवान' के रूप में मानते थे । इसके पीछे एक कारण है- सञ्चार माध्यम का प्रयोग कर उनकी ओर से किया गया सामाजिक कार्य । हां, रवि लामिछाने के सञ्चारकर्म से कई लोगों ने न्याय प्राप्त किया है । जो लोग समाज, पुलिस प्रशासन तथा राज्य की ओर से न्याय प्राप्त नहीं कर सकते थे, वे लामिछाने के पास पहुँच जाते थे । ऐसे कई पीड़ितों ने न्याय प्राप्त भी किया । ऐसे ही लोग उनको भगवान मानते थे ।

इसीतरह कई भ्रष्टाचारजन्य गतिविधि को भी उन्होंने अपनी रिपोर्टिङ से फर्दाफास किया है । लामिछाने की ओर से सम्पादित टेलिभिजन रिपोर्ट ऐसा होता था, जिसके चलते भ्रष्टाचारजन्य गतिविधि में संलग्न ठेकेदार, व्यापारी, नेता उनका नाम सुनते ही डर जाते थे । वैसे तो सञ्चार क्षेत्र के कई लोगों ने कहा है कि सञ्चारकर्मी के रूप में लामिछाने जो कर रहे है, वह पत्रकारिता के धर्म और मर्यादा के विपरित है । इसतरह आरोप लगानेवाले व्यक्ति राज्य की सिस्टम से जुड़े हुए लोग ज्यादा थे । लेकिन लामिछाने ने अपनी कार्यशैली को परिवर्तन नहीं किया । कारण था- सार्वसाधारण नागरिकों की ओर से प्राप्त समर्थन । माहौल ऐसा बनने लगा कि जहां रवि लामिछाने पहुँच जाते थे, वहां सार्वसाधारणों की भीड़ लग जाती थी ।

इसी परिस्थिति को कैस करते हुए रवि लामिछाने ने चुनाव से पूर्व राष्ट्रीय स्वतन्त्र (रास्वपा) पार्टी नाम से राजनीतिक पार्टी गठन किया । पार्टी गठन को ६ महीने भी नहीं हुआ था, रास्वपा चुनाव में देश की चौथी राजनीतिक शक्ति के रूप में उभर आई । रवि लामिछाने गृहमन्त्री बन गए । उसके बाद रवि लामिछाने की जो पपुलारिटी थी, उसका ग्राफ गिरने लगा है । लगभग दो साल की अवधि में आज आकर लामिछाने और रास्वपा पार्टी के राजनीतिक भविष्य को लेकर प्रश्न उठने लगा है । अर्थात् जिसतरह लामिछाने रातोरात राजनीति में उभर आए थे, उसी तरह उनका पतन का ग्राफ भी बढ़ने लगा है । कांग्रेस, एमाले जैसे पुरानी राजनीतिक पार्टी के नेतागण आज ऐसी ही विश्लेषण करने लगे हैं ।

कारण क्या है ?

जिस वक्त लामिछाने पत्रकार थे, उस वक्त वह सुशासन की बात करते थे । सुशासन संबंधी एजेण्डा को लेकर टेलिभिजन रिपोर्ट प्रस्तुत करते थे, उसी के बल पर उन्होंने राजनीतिक छलांङ मारा था । लेकिन आज उनके ऊपर ही सुशासन को लेकर प्रश्न उठने लगा है । लामिछाने भ्रष्टाचारजन्य गतिविधि में संलग्न हैं, कुछ हद तक इसकी पुष्टि भी हो चुकी है । प्रत्यक्ष भ्रष्टाचार में संलग्न होने का प्रमाण तो नहीं है, लेकिन भ्रष्टाचारजन्य कार्य करनेवालों का उन्होंने साथ दिया है, इसकी पुष्टि हो चुकी है । विशेषतः सहकारी घोटाला को लेकर लामिछाने को दोषी पाया गया है ।

राजनीतिक प्रतिशोध के लिए लामिछाने की यह कमजोरी काफी है । इसीलिए आज कांग्रेस-एमाले के कुछ नेता लामिछाने के विरुद्ध हाथ धोकर लगे हुए हैं । नागरिकता और राहदानी प्रकरण में कानूनी त्रुटि होते हुए भी गृहमन्त्री बनना, सहकारी घोटाला में सहयोगी भूमिका निर्वाह करना, यह दो प्रकरण ऐसा है जो लामिछाने के सुशासन एजेण्डा को मजाक बना देता है । हां, सहकारी संस्था की बचत रकम दुरुपयोग छानबिन के लिए गठन की गई संसदीय विशेष छानबिन समिति ने रास्वपा सभापति तथा पूर्व गृहमन्त्री लामिछाने को बचत अपचलनकर्ता के रूप में दोषी माना गया है ।

संसदीय विशेष समिति ने लामिछाने तथा अन्य कुछ व्यक्तियों के ऊपर प्रचलित कानून बमोजिम कारबाही के लिए सरकार

समक्ष सिफारिश किया है । इसका मतलब अब रास्वपा सभापति लामिछाने भ्रष्टाचारजन्य गतिविधि में संलग्न होने के आरोप में जेल भी जा सकते हैं । यहां आश्चर्य की बात तो यह है कि संसदीय विशेष समिति की ओर की गई की कारबाही सिफारिश को अनदेखा करते हुए लामिछाने तथा उनके कुछ समर्थक कहते हैं कि लामिछाने निर्दोष हैं, उनको समिति की ओर से 'क्लिनचिट' प्राप्त हुआ हैं ।

लेकिन सच्चाई ऐसी नहीं है । समिति की ओर से प्रतिनिधिसभा सभामुख देवराज घिमिरे के समक्ष सहकारी घोटाला संबंधी जो प्रतिवेदन पेश किया गया है, उससे लामिछाने के ऊपर गम्भीर कानूनी, राजनीतिक तथा नैतिक प्रश्न खड़ा हुआ है । लेकिन लामिछाने विरोधाभाषपूर्ण अभिव्यक्ति देते हैं कि उनको क्लिनचिट प्राप्त है । सुशासन के लिए चिल्ला-चिल्ला कर टेलिभिजन कार्यक्रम चलानेवाले और राजनीतिक भाषण देनेवाले लामिछाने राजनीतिक नैतिकता की बात भी करते थे । आज खुद वह सुशासन और राजनीतिक नैतिकता के कठघरे में खड़े हैं । ऐसी परिस्थिति में उनको पार्टी सभापति पद त्याग कर एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए था और रास्वपा पार्टी को बचाना चाहिए था । लेकिन झूठा अभिव्यक्ति देकर पार्टी को ही दांव पर लगाने की ओर अग्रसर हैं ।

लामिछाने के ऊपर आशा और भरोसा रखनेवाले सर्वसाधारण जनता के मुँह पर उन्होंने पानी फेर दिया है । संसदीय विशेष समिति की रिपोर्ट यही कहती है । लामिछाने आबद्ध गोरखा मीडिया नेटवर्क में १४ महिनों की अवधि में विभिन्न सहकारी संस्थाओं से ६५ करोड़ रुपये आई है, इस वक्त लामिछाने गोरखा मीडिया के प्रबन्ध निर्देशक थे । छानबिन समिति के अनुसार सूर्यदर्शन, सुप्रिम, स्वर्णलक्ष्मी, सहारा चितवन र सानोपाइला सहकारी से कानुन विपरीत गोर्खा मिडिया में रकम आया है और उक्त रकम का दुरुपयोग सञ्चार संस्था ने ही किया है । समिति का कहना है कि तत्कालीन प्रबन्ध निर्देशक की हैसियत से रवि रकम अपचलन में जिम्मेवार हैं ।

समिति सभापति तथा एमाले नेता सूर्य थापा ने सहकारी ऐन की दफा १२२ उल्लेख करते हुए कहा है कि लामिछाने के ऊपर कारबाही के लिए सिफारिश किया गया है । लेकिन लामिछाने, रास्वपा उपसभापति स्वर्णिम वाग्ले तथा अन्य पदाधिकारी तथ्य को गलत व्याख्या करते हुए रवि को निर्दोष करार करने में लगे हुए हैं । वैसे तो सहकारी घोटाला प्रकरण में सिर्फ लामिछाने दोषी हैं, ऐसा नहीं है । राष्ट्रीय प्रजातन्त्र पार्टी की सांसद् गीता बस्नेत सहकारी घोटाला संबंधी प्रकरण में फंसी हुई है । जब उनको पुलिस ने गिरफ्तार करने की योजना बनाई, वह लापता हो गई हैं । कांग्रेस सांसद् तथा पूर्व मन्त्री धनराज गुरुङ के ऊपर भी सहकारी घोटाला का आरोप है । अन्य कई व्यक्तियों के ऊपर सहकारी घोटाला का आरोप है, जो नेपाली कांग्रेस और नेकपा एमाले से निकट व्यक्ति माने जाते हैं । इनमें से कई व्यक्ति तो जेल में भी है ।

सच्चाई का एक और पक्ष भी है- आज लामिछाने को ६५ करोड़ हिनामिना के आरोप में दोषी माना गया है, लेकिन सहकारी घोटाला में यह रकम १% प्रतिशत भी नहीं है । बताया जाता है कि २० अर्ब से ज्यादा रकम सहकारी घोटाला में फंस गया है । उल्लेखित रकम घोटाला में कांग्रेस-एमाले निकट व्यक्तियों का ही हाथ है । ऐसी परिस्थिति में सिर्फ लामिछाने के ऊपर कारवाही करने से बांकी रकम वापस होनेवाला भी नहीं है । इसीलिए राजनीतिक वृत्त में यह भी चर्चा है कि लामिछाने के ऊपर कारबाही के लिए जो प्रतिवेदन तैयार हुआ है, वह राजनीतिक प्रतिशोध से प्रेरित है । बताया जाता है कि यदि लामिछाने एमाले और कांग्रेस जैसे पार्टियों को विरोध ना करें तो उनके ऊपर कारबाही होनेवाला भी नहीं है, प्रतिवेदन भी इसी उद्देश्य से विरोधभाषपूर्ण बनाया गया है । अर्थात् सुशासन को मजाक बनानेवाले पार्टियों में से अब कांग्रेस, एमाले जैसे पुराने पार्टी ही नहीं, रास्वपा जैसे नयी पार्टी भीं शामील हो गई है । अब लामिछाने की सुशासन एजेण्डा भी संकट में पड़ गया है । एजेण्डा ही नहीं, लामिछाने का राजनीतिक जीवन भी संकटपूर्ण बना हुआ है ।

व्यक्तिगत घटना दर्ता गराऔं

जन्म, मृत्यु, विवाह, सम्बन्ध विच्छेद तथा बसाईसराईजस्ता व्यक्तिगत घटना समयमा नै आफ्नो पालिकाको वडा कार्यालयमा दर्ता गराउनुपर्दछ । किनकि व्यक्तिगत घटना दर्ता व्यक्ति पहिचानको पहिलो आधार हो । यस्ता घटना ३५ दिनभित्र स्थानीय पञ्जिकाधिकारीको कार्यालय (वडा कार्यालय) मा निःशुल्क रुपमा दर्ता गर्न सकिन्छ । सरकारलाई विकासका योजना तर्जुमा गर्न, नागरिकलाई प्रदान गरिने सेवा सुविधा सुनिश्चित गर्न, जनसंख्याको विवरण अद्यावधिक गर्न व्यक्तिगत घटना दर्ता आवश्यक हुन्छ । साथै व्यक्तिगत घटना दर्ता गरेपछि मात्रै राज्यबाट पाइने सुविधाहरू प्राप्त गर्न सकिनेछ ।

विजया दशमी, शुभ दिपावली तथा छठ पर्व २०८१ को पावन अवसरमा सुख, शान्ति, एवं समृद्धिका लागि **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं ।

जुल्फकार अलि भुटो
अध्यक्ष

बिश्रामपुर गाउँपालिका
गाउँ कार्यपालिकाको कार्यालय
मधेश प्रदेश (बारा) नेपाल

राष्ट्रिय आवास कम्पनीबारे...

यस कम्पनीले देशको विभिन्न भागमा आवास तथा बजार क्षेत्र विकासको काम, अव्यवस्थित बसोबासीहरुलाई व्यवस्थित गर्ने कार्य गर्दै आएकोमा अबदेखि आवासका लागि भवन निर्माण गर्ने योजना समेत अघि बढाएको व्यहोरा सबै सरोकार पक्ष र सर्वसाधारणमा जानकारी गराउँदछौं ।

विजय दशमी २०८१ सालको पावन अवसरमा सम्पूर्णजनमा सुख, शान्ति समृद्धि एवं उत्तरोतर प्रगतिको लागि **हार्दिक शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं ।

रामकृष्ण निरौला
महाप्रबन्धक

राष्ट्रिय आवास कम्पनी लि.
फोन नं. : ०१-४७९०५२१, ४७९७२१९

कब सुधरेंगे नेता और नेपाल की राजनीति ?

अंशुकुमारी झा ...

जनता की असन्तुष्टि को आप सभी को समझने की जरूरत है और इसके लिए हमें सबसे पहले राजनीति में सुधार लाने की आवश्यकता है । जब राजनीति सुधरेगी तब जनता स्वतः अनुशासित हो जायेगी । उपदेश देने से बेहतर होगा जनता के मनोभाव समझने की ।

हमारे देश में राजनीतिक परिवर्तन बहुत बार हुआ है । आज इसकी सत्ता तो कल उसकी, परन्तु राजनीति में सुधार बिल्कुल नहीं हो पाया है । इसे कौन सुधारेगा ? कहाँ से एक फरिश्ता आएगा और हमारे देश की राजनीति को सुदृढ़ बनाएगा । क्योंकि यहाँ जो देश का ठेका लेकर बैठे हैं उनलोगों को पहले खुद में सुधार की आवश्यकता है । लोकतन्त्र का अर्थ बहुत ही व्यापक है । लोकतन्त्र का मतलब ही होता है सुधरी हुई राजनीति परन्तु लोकतन्त्र की अनुभूति यहाँ की जनता अभी तक नहीं कर पाई है । अर्थात् फिलहाल की राजनीति जहाँनियाँ शासन से भी बदतर ही नजर आ रही है । राजनीतिक संस्कृति का विकास अभी तक नहीं हो पाया है । देश में दो बड़े दल का शासन होने के बाबजुद भी राजनीतिक अवस्था अस्त व्यस्त ही दिखने का तात्पर्य यही है कि वे लोग अभी तक राजनीति का मर्म ही नहीं समझ पाए हैं । दुख की बात तो यह है कि राजनीति में सुधार करने के बजाय संविधान संशोधन की बात हुई है । अब प्रश्न यह उठता है कि त्रुटि संविधान में है या राजनीति में ?

कुछ दिन पहले टुँडिखेल में गौरा पर्व मनाया गया था । यह पर्व नेपाल के पश्चिमी क्षेत्रों की महत्वपूर्ण संस्कृति है । उसी अवसर पर हरेक वर्ष की तरह इसबार भी काठमांडू के टूँडीखेल मैदान में बड़े धूम धाम से उक्त उत्सव को मनाया गया जिसमें दोनों बड़े दलों के नेताओं का भी आगमन हुआ था । प्रधानमन्त्री केपी शर्मा ओली और काँग्रेस के सभापति शेर बहादुर देउवा भी पहुँचे थे, उसी समय भीड़ से आवाज आई कि ओली जाओ, बालेन आओ । उसके बाद इसी कथन को सभी ने नारा लगाना शुरू कर दिया । प्रधानमन्त्री जी भड़क गये थे । उन्होंने कहा कि नयी पीढ़ी में शिष्टता और मर्यादा की कमी है । देउवा जी ने कहा कि यही है तुमलोगों की संस्कृति ? यही सीखकर यहाँ आए हो ? स्वभाविक है उन्हें बुरा लगा होगा परन्तु ऐसी अवस्था क्यों आई । उसमें से कुछ युवाओं को पुलिस पकड़ कर ले गई । किस-किस को पुलिस पकड़ेगी ? जनता के हृदय में आप सबका स्थान कहाँ है ? यह सोचनीय विषय है । जनता को भला बुरा कहने से कुछ नहीं होगा । जनता को यातनाएँ देने से भी कुछ नहीं होगा । युवाओं पर जितने मुकदमा लगाए जायेंगे वे उतने ही निडर होते जायेंगे । युवाओं को आपलोगों की धमकी, आग में घी जैसा काम करेगा और विस्फोट होने की सम्भावनाएँ आ जायेगी । जनता की असन्तुष्टि को आप सभी को समझने की जरुरत है और इसके लिए हमें सबसे पहले राजनीति में सुधार लाने की आवश्यकता है । जब राजनीति सुधरेगी तब जनता स्वतः अनुशासित हो जायेगी । उपदेश देने से बेहतर होगा जनता के मनोभाव समझने की ।

नेपाल में एक परिपाटी है कि एक पैर कब्र में हो फिर भी वही सत्तासीन रहेगा, यह नई बात नहीं है । ऐसे नेतागण हैं कि मरते दम तक राजनीति करते रहेंगे चाहे वह उसके काबिल हो या न हो, इसका प्रभाव हमारे देश पर डाइरेक्ट पड़ रहा है और देश विकास से वंचित हो रहा है । अभी नेपाल के हरेक

व्यक्तिगत घटना दर्ता गराऔं

जन्म, मृत्यु, विवाह, सम्बन्ध विच्छेद तथा बसाईसराईजस्ता व्यक्तिगत घटना समयमा नै आफ्नो पालिकाको वडा कार्यालयमा दर्ता गराउनुपर्दछ । किनकि व्यक्तिगत घटना दर्ता व्यक्ति पहिचानको पहिलो आधार हो । यस्ता घटना ३५ दिनभित्र स्थानीय पञ्जिकाधिकारीको कार्यालय (वडा कार्यालय) मा निःशुल्क रुपमा दर्ता गर्न सकिन्छ । सरकारलाई विकासका योजना तर्जुमा गर्न, नागरिकलाई प्रदान गरिने सेवा सुविधा सुनिश्चित गर्न, जनसंख्याको विवरण अद्यावधिक गर्न व्यक्तिगत घटना दर्ता आवश्यक हुन्छ । साथै व्यक्तिगत घटना दर्ता गरेपछि मात्रै राज्यबाट पाइने सुविधाहरू प्राप्त गर्न सकिनेछ ।

बर्दघाट नगरपालिका
नगर कार्यपालिकाको कार्यालय
लुम्बिनी प्रदेश (नवलपरासी) नेपाल

पार्टी में पुस्तान्तरण का तीव्र दबाब चल रहा है । जिससे पार्टियों में विवाद बढ़ रहा है । सिर्फ बड़ी पार्टियाँ ही नहीं छोटे दल भी इससे प्रभावित है । यहाँ तक की जनता भी चाहती है देश को एक नया नेतृत्व मिले । दशकों से वही पुराने चेहरे को देख कर जनता उब सी गई है । चाहे कांग्रेस हो, एमाले हो, या माओवादी, सत्ता में तो आयेंगे वही घृणित व्यक्ति न ? जनता कब से ढूँढ रही है, कुछ बदलाव, कुछ नयापन पर सबकुछ यथावत ही है । जनता को सिद्धान्त, आदर्श और संस्कृति सिखाने का दायित्व वरिष्ठ नेतालोग गँवा चुके हैं । उन लोगों के कारण ही हर पार्टी के युवा नेता की अवस्था संवेदनशील है तभी तो राजनीति से युवा लोग हिचक रहे हैं । वे धर्मसंकट में हैं । उन्हें लग रहा है कि हम अपने तथाकथित वरिष्ठ नेताओं को पृष्ठपोषण दें या खुलकर विरोध करें । अब इस गम्भीर विषय को देखते हुए आप अपने देश का हाल समझ सकते हैं । हमारे देश की राजनीति किस दिशा में जा रही है वह भी छुपी नहीं है ।

राजनीति और नेता दो ऐसे पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जो हमारे समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । राजनीति एक ऐसी क्रिया है जिसमें सत्ता, शक्ति और नीतियों का प्रबन्धन किया जाता है, जबकि नेता उन व्यक्तियों को कहा जाता है जो लोगों को नेतृत्व प्रदान करते हैं । इन दोनों का समन्वय बहुत ही महत्वपूर्ण है और यह समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है । राजनीति एक समाजिक विज्ञान है जो समाज में सत्ता का वितरण, नीतियों का निर्धारण और सरकार की चलने की प्रक्रिया का अध्ययन करती है । राजनीति द्वारा समाज में न्याय, व्यवस्था और विकास का संचालन किया जाता है । नेता इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि वे लोगों की आवश्यकताओं और मांगों को समझते हैं और उनके हित में नीतियों का निर्धारण करते हैं । एक अच्छा नेता विश्वास, ईमानदारी और समर्पण के साथ काम करता है ताकि समाज का हित सुनिश्चित किया जा सके परन्तु ऐसा लग रहा है कि यहाँ के नेता को समाज की चिन्ता नहीं है बस उसे अपना उल्लु सीधा करना है चाहे किसी भी परिस्थिति में क्यों न हो ।

जनता को सिद्धान्त, आदर्श और संस्कृति सिखाने का दायित्व वरिष्ठ नेतालोग गँवा चुके हैं । उन लोगों के कारण ही हर पार्टी के युवा नेता की अवस्था संवेदनशील है तभी तो राजनीति से युवा लोग हिचक रहे हैं । वे धर्मसंकट में हैं । उन्हें लग रहा है कि हम अपने तथाकथित वरिष्ठ नेताओं को पृष्ठपोषण दें या खुलकर विरोध करें । अब इस गम्भीर विषय को देखते हुए आप अपने देश का हाल समझ सकते हैं ।

लोकतन्त्र में जनता अपने हक अधिकार और देश की सुरक्षा के लिए बोल सकता है । जो नेता जनता के हित के विपरित कार्य करे उसे खुलेआम काला झंडा दिखा सकता है । उसके खिलाफ नारा भी लगा सकता है । आप उसे कब तक रोक पायेंगे ? खुली राजनीति में अनपेक्षित व्यवहार आयेगा ही उसको बाँधना गलत है बशर्ते अन्तर्निहित सन्देश को समझना होगा । टुँडी खेल मैदान में जो घटना हुई वह नई नहीं है । कई प्रधानमन्त्री जनता के हाथों थप्पड़ और फाइटिंग भी खाए हैं । कई नेता को विभिन्न कार्यक्रमों से खदेड़ा गया है तो कितने को कार्यक्रमों में आने ही नहीं दिया गया है । यह सब क्या है ? यह जनता के द्वारा नेता को सुधरने का मौका दिया जाता है परन्तु दुख की बात यह है कि वे तो उक्त करतुत पर विचार करना भी उचित नहीं समझते । उल्टे उन व्यक्ति को कारवाई में ले जाते हैं ।

नेकपा माओवादी केन्द्र के अध्यक्ष पुष्पकमल दाहाल 'प्रचण्ड' विपक्षी दल के नेता हैं जो संसद में बंगलादेश और श्रीलंका का उदाहरण देते रहते हैं और सरकार की आलोचना करते रहते हैं । उनका कहना जायज है पर जब वह तीन-तीन बार कांग्रेस और एमाले के साथ सहकार्य में प्रधानमन्त्री पद पर आसीन रहे तब उन्होंने क्या किया ? प्रचण्ड को इस प्रकार का प्रश्न करना कितना उचित है ? विद्यमान शासकीय दुर्दशा, भ्रष्टाचार और राजनीतिक विचलन इत्यादि विषय में वह कितना पवित्र हैं ? यह प्रश्न निःसन्देह जनमानस के अन्दर उठ रहा है । सिर्फ प्रचण्ड ही नहीं, सत्तासीन देउवा और ओली से भी उक्त विकृति के सम्बन्ध प्रश्न उठना स्वाभाविक है । प्रश्न उठना भी राजनीति सुधारने का एक रास्ता है । नेता में सुधरने की सम्भावना कहीं दिख नहीं रही है इसलिए राजनीति को सुधारने की तरफ अग्रसर होना आवश्यक है । राजनीति में सुधार लाने के लिए कुछ नेताओं को हटाना अत्यन्त जरुरी है । इसी से ही सबका उद्देश्य पूर्ण होगा । चाहे वे ससम्मान विदा लें या धक्के मारकर निकाला जाय । यह देश के हित के लिए आवश्यक है अन्यथा देश उसी रुढ़िवादी रवैया पर धूमिल होता रहेगा ।

व्यक्तिगत घटना दर्ता गराऔं

जन्म, मृत्यु, विवाह, सम्बन्ध विच्छेद तथा बसाईसराईजस्ता व्यक्तिगत घटना समयमा नै आफ्नो पालिकाको वडा कार्यालयमा दर्ता गराउनुपर्दछ। किनकि व्यक्तिगत घटना दर्ता व्यक्ति पहिचानको पहिलो आधार हो। यस्ता घटना ३५ दिनभित्र स्थानीय पञ्जिकाधिकारीको कार्यालय (वडा कार्यालय) मा निःशुल्क रुपमा दर्ता गर्न सकिन्छ। सरकारलाई विकासका योजना तर्जुमा गर्न, नागरिकलाई प्रदान गरिने सेवा सुविधा सुनिश्चित गर्न, जनसंख्याको विवरण अद्यावधिक गर्न व्यक्तिगत घटना दर्ता आवश्यक हुन्छ। साथै व्यक्तिगत घटना दर्ता गरेपछि मात्रै राज्यबाट पाइने सुविधाहरू प्राप्त गर्न सकिनेछ।

सरावल गाउँपालिका
गाउँ कार्यपालिकाको कार्यालय
नवलपरासी, लुम्बिनी प्रदेश (नेपाल)

नेपाल की मीडिया पर राजनीतिक प्रभावः

लोकतंत्र में विश्वास का संकट

डा. विधुप्रकाश कायस्थ ...

डिजिटल मीडिया प्लेटफार्मों का उदय एक आशावादी विकल्प प्रदान करता है । सामाजिक नेटवर्क और अ'नलाइन समाचार पोर्टल स्वतंत्र पत्रकारिता के लिए स्थान प्रदान करते हैं । हालांकि वे भी राजनीतिक दबाव का सामना करते हैं । फिर भी मीडिया स्रोतों की विविधता जानकारी की व्यापकता को सक्षम बनाती है और पारंपरिक मीडिया के राजनीतिक प्रभाव को कम करती है ।

सार्वजनिक धारणाओं को आकार देने, नागरिकों को सूचित करने और नेताओं को जवाबदेह बनाने में अन्य कई देशों की तरह नेपाल में भी मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है । हालांकि नेपाली मीडिया राजनीतिक शक्तियों से गंभीर रूप से प्रभावित है । यह प्रभाव समाचार कवरेज, संपादकीय स्वतंत्रता और जनता के विश्वास पर असर डाल रहा है ।

नेपाल के पंचायती युग में निजी मीडिया की भूमिका

राजा महेन्द्र और उनके उत्तराधिकारियों के अधीन नेपाल के पंचायती युग (१९६०-१९९०) के निरंकुश शासन में राजनीतिक दलों पर दमन के दौरान अक्सर निजी मीडिया की भूमिका को नजरअंदाज किया गया । सरकारी प्रचार और असहमति को दबाने के लिए पंचायती प्रणाली ने रेडियो नेपाल और नेपाल टेलीविजन जैसे सरकारी चैनलों का उपयोग कर मीडिया पर कड़ा नियंत्रण लगाया । इस सेंसरशिप ने एक ऐसा वातावरण पैदा किया जहां खुली आलोचना खतरनाक हो गई ।

इन बाधाओं के बावजूद नेपाल के भीतर और भारत जैसे पड़ोसी देशों से निजी मीडिया आउटलेट्स का एक गुप्त नेटवर्क सावधानीपूर्वक संचालित किया गया । इन आउटलेट्स ने सेंसरशिप और सरकारी निगरानी को रोकने के लिए भूमिगत प्रेस विधियों का उपयोग किया । उन्होंने भ्रष्टाचार और मानवाधिकार उल्लंघनों जैसे मुद्दों को उठाते हुए पंचायती शासन की आलोचना करने वाले पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित की । ये प्रकाशन अनौपचारिक चैनलों के माध्यम से पाठकों तक पहुंचाने के लिए गुप्त रूप से वितरित की गईं ।

सीमापार मीडिया ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । नेपाल से भारत में भागे पत्रकारों और कार्यकर्ताओं ने नेपाल में सेंसर से बची खबरें प्रसारित करने वाले प्रकाशन स्थापित किए । इन निर्वासित मीडिया आउटलेट्स ने नेपाली जनता को वैकल्पिक जानकारी प्रदान करने और नेपाल की स्थिति के बारे में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को सूचित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

निजी संचार माध्यमों के प्रयासों ने जनचेतना और परिचालन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है । राज्य-नियंत्रित मीडिया की तुलना में उनकी पहुंच सीमित होने के बावजूद उन्होंने प्रतिरोध को प्रेरित किया और जनता में राजनीतिक चेतना बढ़ाई । पत्रकारों और प्रकाशकों के लिए गिरफ्तारी और उत्पीड़न जैसे जोखिम थे । फिर भी उनकी साहसिकता और प्रतिकथन पेश करने की दृढ़ता ने शासन के नियंत्रण को चुनौती देने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

यह छोटे निवेश में संचालित मीडिया की भूमिका प्रतिरोध की एक गहरी विरासत है । इसने १९९० में पंचायती युग के अंत के बाद मीडिया स्वतंत्रता के लिए एक आधार तैयार किया है । इसने लोकतांत्रिक नेपाल में अधिक जीवंत और विविध मीडिया परिदृश्य में योगदान दिया ।

हार्दिक मंगलमय शुभकामना

नेपालीहरूको **महान चाड बडादशैं, शुभ दिपावली तथा छठ पर्व २०८१** को पावन अवसरमा हामी हाम्रा सम्पूर्ण शुभचिन्तक तथा नेपाली दाजु-भाइ, दिदी-बहिनी एवं शुभचिन्तक महानुभावहरूमा सुख, शान्ति, एवं समृद्धिका लागि **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं ।

विनोद कुमार जाजोड़िया

काठमाडौं

राजनीतिक स्वामित्व और संबंधन

नेपाली संचार माध्यमों में राजनीतिक प्रभाव मीडिया की स्वामित्व संरचना में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है । कई आउटलेट्स राजनीतिक दलों से जुड़े व्यक्तियों या समूहों के स्वामित्व में हैं । यह स्वामित्व संरचना अक्सर पक्षपाती रिपोर्टिंग का परिणाम देती है । समाचार कवरेज विशिष्ट राजनीतिक संस्थाओं की चिंताओं और एजेंडों को दर्शाती है । उदाहरण के लिए नेपाली कांग्रेस, नेकपा एमाले या नेकपा माओवादी जैसे प्रमुख दलों से संबंधित मीडिया आउटलेट्स अक्सर अपनी संपादकीय लाइनें इन पार्टियों के विचारधाराओं के साथ मेल खाती हैं ।

इसके अलावा राजनीतिक दलों से पत्रकारों की संबध्दता उनकी वस्तुनिष्ठता में समझौता कर सकती है । ध्रुवीकृत मीडिया परिदृश्य में समाचारों को पक्षपाती दृष्टिकोण से व्याख्या की जाती है । राजनीतिक गुटों के साथ इस संबद्धता से रिपोर्टिंग की निष्पक्षता को कमजोर किया जा सकता है जिससे पत्रकारिता की समग्र गुणवत्ता प्रभावित होती है ।

राज्य प्रभाव और सेंसरशिप

स्वामित्व मुद्दों के अलावा नेपाल सरकार कानूनी और आर्थिक माध्यमों से मीडिया पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है । राज्य प्रसारण लाइसेंसों को नियंत्रित करता है और असहमति वाली आवाजों को दबाने के लिए नियामक उपायों का उपयोग करता है । इसके अतिरिक्त सरकार कई मीडिया आउटलेट्स, विशेष रूप से प्रिंट क्षेत्र के लिए, विज्ञापन राजस्व का प्रमुख स्रोत है । यह आर्थिक निर्भरता आत्म-सेंसरशिप को प्रेरित कर सकती है । मीडिया आउटलेट्स अपनी वित्तीय सुरक्षा को बनाए रखने के लिए सरकार की आलोचना से बचने का प्रयास करते हैं ।

माओवादी सशस्त्र विद्रोह (१९९६-२००६) और उसके बाद के संक्रमण काल ने मीडिया आउटलेट्स को युध्दरत गुटों और राज्य के बीच फंसा दिया । पत्रकारों ने उत्पीड़न, धमकी और हिंसा का सामना किया है । इस वातावरण ने अक्सर आलोचनात्मक रिपोर्टिंग को दबाया और स्वतंत्र पत्रकारिता को दबाया ।

पत्रकारिता और सार्वजनिक विश्वास पर प्रभाव

नेपाली मीडिया में राजनीतिक प्रभाव ने पत्रकारिता और जनविश्वास पर बड़ा असर डाला है । जब मीडिया को राजनीतिक दल या राज्य के विस्तार के रूप में देखा जाता है तो उनकी विश्वसनीयता घट जाती है । संपादकीय स्वतंत्रता की कमी अक्सर महत्वपूर्ण मुद्दों की कम रिपोर्टिंग या विकृतियों का परिणाम देती है जो जनता को सही और संतुलित जानकारी से वंचित करती है । विश्वास का यह क्षय नेपाल जैसे अस्थिर लोकतंत्र में विशेष रूप से चिंताजनक है । लोकतांत्रिक कार्यों के लिए जागरूक मतदाता की आवश्यकता होती है । लेकिन मीडिया द्वारा विश्वसनीय सूचना प्रवाह प्रदान न करने पर जनता गलत सूचना और प्रचार की चपेट में आ जाती है ।

नागरिक समाज और मीडिया सुधार

इन चुनौतियों के बावजूद, नेपाली नागरिक समाज में मीडिया सुधार और पत्रकारिता की निष्ठा बढ़ाने के प्रयास जारी हैं । नेपाल पत्रकार महासंघ जैसे संघ और विभिन्न गैर-सरकारी संगठन प्रेस स्वतंत्रता की रक्षा और पत्रकारिता की व्यावसायिकता सुधारने के लिए काम कर रहे हैं । मीडिया स्वामित्व में अधिक पारदर्शिता के लिए आह्वान और नियामक सुधारों का उद्देश्य मीडिया क्षेत्र में राजनीतिक हस्तक्षेप को कम करना है । डिजिटल मीडिया प्लेटफार्मों का उदय एक आशावादी विकल्प प्रदान करता है । सामाजिक नेटवर्क और ऑनलाइन समाचार पोर्टल स्वतंत्र पत्रकारिता के लिए स्थान प्रदान करते हैं । हालांकि वे भी राजनीतिक दबाव का सामना करते हैं । फिर भी मीडिया स्रोतों की विविधता जानकारी की व्यापकता को सक्षम बनाती है और पारंपरिक मीडिया के राजनीतिक प्रभाव को कम करती है ।

निष्कर्ष

नेपाली मीडिया में राजनीतिक प्रभाव पत्रकारिता की गुणवत्ता और जनविश्वास को प्रभावित करने वाली जटिल चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है । राजनीतिक संबंध और राज्य नियंत्रण समाचार कवरेज को आकार देने में जारी हैं जबकि मीडिया स्वतंत्रता और सुधार की आवश्यकता के प्रति जागरूकता बढ़ रही है । नेपाल के लोकतंत्र की स्थिति और जनता को राजनीतिक प्रक्रियाओं में सूचित और संलग्न रखने के लिए मीडिया की अखंडता को मजबूत करना आवश्यक है ।

(vidhukayastha@gmail.com)

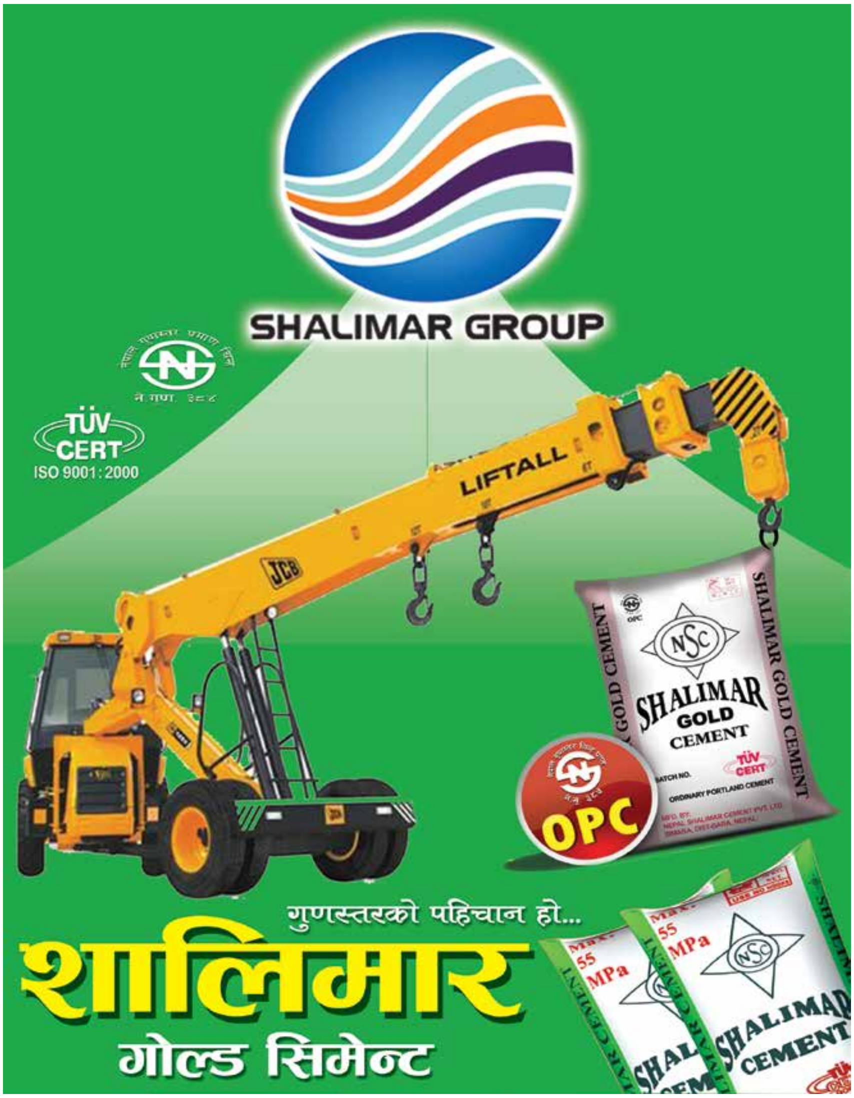

हार्दिक शुभकामना

बडादशैं, शुभ दीपावली तथा छठ पर्व २०८१ को अवसरमा सम्पूर्ण नेपालीजनको व्यक्तिगत सुस्वास्थ्य एवं दीर्घायुको कामनासहित हार्दिक मंगलमय शुभकामना व्यक्त गर्दछु ।

राजनीतिक स्थिरतासहित समृद्ध नेपाल निर्माणमा आ-आफ्नो ठाउँबाट योगदान गरौं ।

मा. शरतसिंह भण्डारी
मन्त्री
श्रम, रोजगार तथा सामाजिक सुरक्षा मन्त्रालय
सिंहदरबार, काठमाडौं

हार्दिक मंगलमय शुभकामना
बडादशैं, शुभदीपावली तथा छठ पर्व
२०८१ को सुखद् उपलक्ष्यमा हाम्रा
सम्पूर्ण शुभचिन्तक एवं देश–विदेशमा
रहनुभएका नेपाली दाजुभाइ–दिदीबहिनीमा
सुस्वास्थ्य एवं दीर्घायुको हार्दिक
मंगलमय शुभकामना व्यक्त गर्दछु ।
नवल किशोर चौधरी
बल्खु-१४, कुमारीक्लब, काठमाडौं

हार्दिक शुभकामना
बडादशैं, शुभदीपावली तथा छठ पर्व २०८१
को सुखद् उपलक्ष्यमा हाम्रा सम्पूर्ण शुभचिन्तक
एवं देश–विदेशमा रहनुभएका नेपाली
दाजुभाइ–दिदीबहिनीमा सुस्वास्थ्य एवं दीर्घायुको
हार्दिक मंगलमय शुभकामना व्यक्त गर्दछु ।
मा. रुपा यादव
प्रदेशसभा सदस्य
मधेश प्रदेश, महोत्तरी
लोकतान्त्रिक समाजवादी पार्टी, नेपाल

हार्दिक मंगलमय शुभकामना
नेपालीहरूको महान चाड बडादशैं,
शुभ दिपावली तथा छठ पर्व-२०८१
को पावन अवसरमा हामी हाम्रा सम्पूर्ण
दाजुभाई, दिदी/बहिनी, एवं शुभचिन्तक
महानुभावहरूमा सुख, शान्ति, एवं समृद्धिका
लागि हार्दिक मंगलमय शुभकामना
व्यक्त गर्दछौं ।
GORKHA LAHARI PVT. LTD
Sanepa, Kharibote Lalitpur, Nepal
Ph.: 00977-1-5530947. 5530949
Fax: 00977-1-5530929
Email: glplktm2019@gmail.com

हार्दिक मंगलमय शुभकामना
दशहरा, दीपावली और छठ
पर्व २०८१ के अवसर पर समस्त
स्वजातीय बन्धु एवं ग्राहक वर्ग तथा
देशवासी में सुस्वास्थ्य एवं दीर्घायु की
हार्दिक मंगलमय शुभकामना
व्यक्त करता हूं ।
प्रमोद प्रसाद चौधरी
एमडी
चौधरी ट्रेडर्स
कुलेश्वर, काठमाडौं

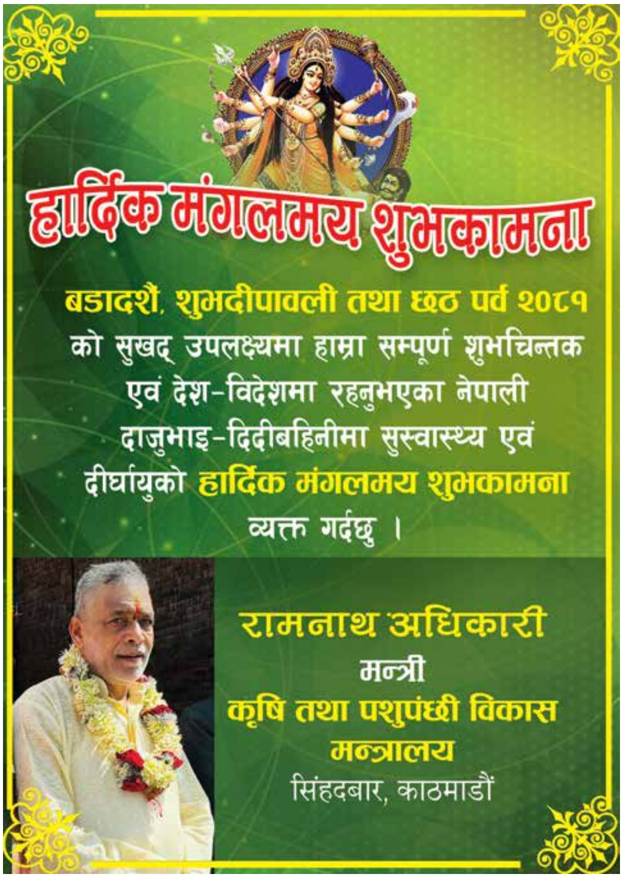
हार्दिक मंगलमय शुभकामना
बडादशैं, शुभदीपावली तथा छठ पर्व २०८१ को सुखद् उपलक्ष्यमा हाम्रा सम्पूर्ण शुभचिन्तक एवं देश–विदेशमा रहनुभएका नेपाली दाजुभाइ–दिदीबहिनीमा सुस्वास्थ्य एवं दीर्घायुको हार्दिक मंगलमय शुभकामना व्यक्त गर्दछु ।
रामनाथ अधिकारी
मन्त्री
कृषि तथा पशुपंछी विकास मन्त्रालय
सिंहदबार, काठमाडौं

हार्दिक मंगलमय शुभकामना
बडादशैं, शुभदीपावली तथा छठ पर्व २०८१ को सुखद् उपलक्ष्यमा हाम्रा सम्पूर्ण शुभचिन्तक एवं देश–विदेशमा रहनुभएका नेपाली दाजुभाइ–दिदीबहिनीमा सुस्वास्थ्य एवं दीर्घायुको हार्दिक मंगलमय शुभकामना व्यक्त गर्दछु ।
दीपक खड्का
मन्त्री
ऊर्जा, जलस्रोत तथा सिचाई मन्त्रालय
सिंहदरबार, काठमाडौं

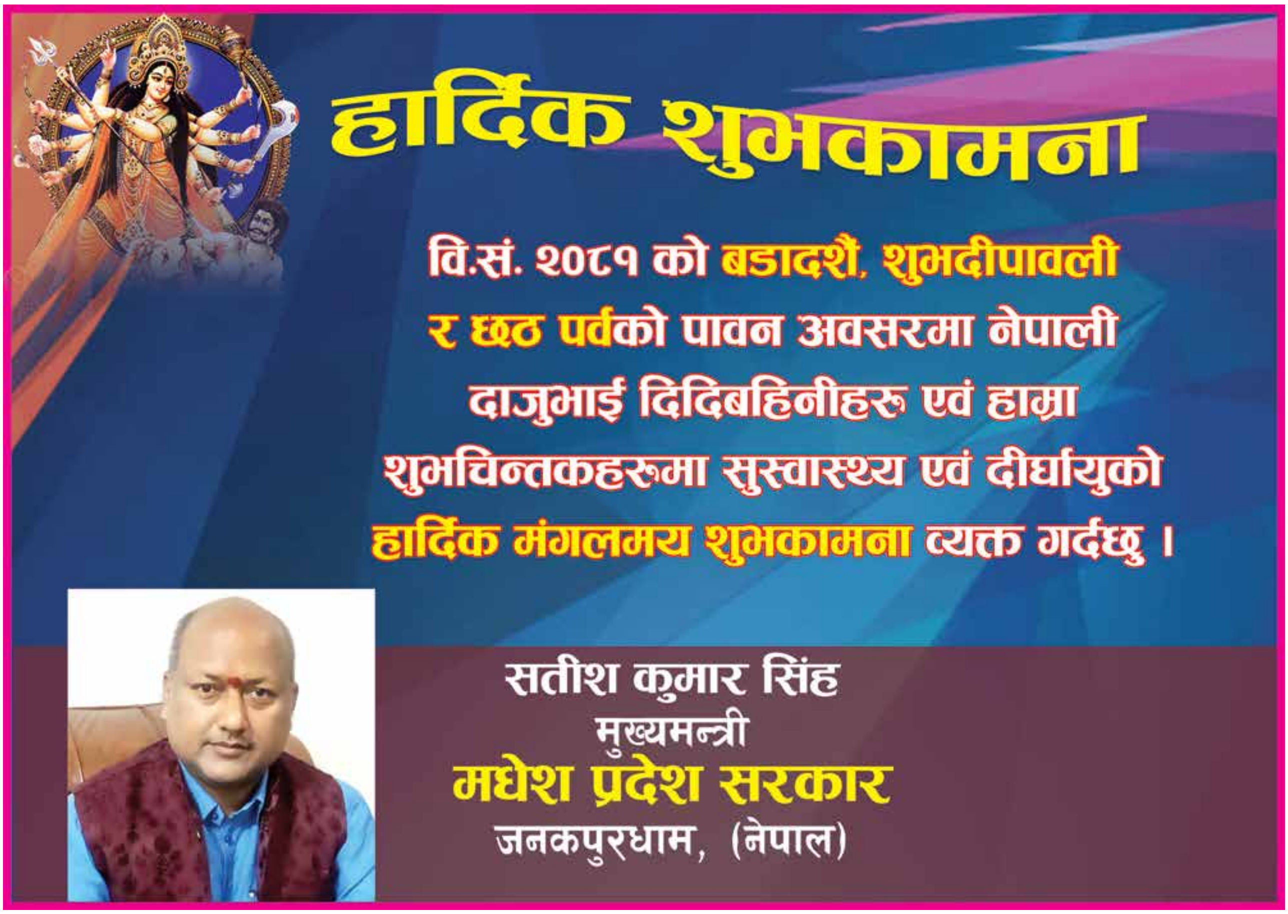
हार्दिक शुभकामना
वि.सं. २०८१ को बडादशैं, शुभदीपावली र छठ पर्वको पावन अवसरमा नेपाली दाजुभाई दिदिबहिनीहरु एवं हाम्रा शुभचिन्तकहरुमा सुस्वास्थ्य एवं दीर्घायुको हार्दिक मंगलमय शुभकामना व्यक्त गर्दछु ।
सतीश कुमार सिंह
मुख्यमन्त्री
मधेश प्रदेश सरकार
जनकपुरधाम, (नेपाल)

राजनीतिक स्थिरता कायम रहोस्, आर्थिक विकास र समृद्धिको बाटोमा देश अघि बढोस् ।

जनताले सम्पूर्ण राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक अधिकार प्राप्त गर्न सकून ।

हार्दिक शुभकामना

बडादशैं, शुभ दीपावली तथा छठ पर्व २०८१ को अवसरमा तपाईंको व्यक्तिगत सुस्वास्थ्य एवं दीर्घायुको कामनासहित हार्दिक मंगलमय शुभकामना व्यक्त गर्दछु ।

मा. महन्थ ठाकुर

अध्यक्ष

लोकतान्त्रिक समाजवादी पार्टी, नेपाल

संस्मरण

काठमान्डू की यादें

लक्ष्मी पुरी ...

मैं अपने दिवंगत पिता की कर्मभूमि, जहां उन्होंने सात साल बिताए थे, वहाँ वापस आकर बेहद खुश और भावुक महसूस कर रही हूं। मैंने भी यहां सात लंबे और यादगार साल बिताए। मैं भारत और नेपाल के साहित्यिक समुदाय को इस ऐतिहासिक, प्राचीन, सुंदर और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शहर काठमांडू में लाने के लिए कलिंग साहित्य महोत्सव को धन्यवाद देना चाहती हूं।

मुझे याद है कि मैं नौ साल की उम्र तक नेपाली सीख रही थी और उसके बाद ही अन्य भारतीय भाषाएँ सीखना शुरू किया। अब नेपाली भाषा भी भारत की आधिकारिक भाषा है। मुझे बचपन में नेपाली लोककथाएँ और नेपाली साहित्य सुनने का अवसर मिला। काठमांडू लौटना मेरे लिए एक विशेष क्षण है। मैं जावलाखेल में एक खूबसूरत घर में रही, जो अब नेपाल प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान है। वहाँ अक्सर चिड़ियाघर से बाघ की दहाड़ सुनाई देती थी। वहाँ आसपास बगीचे में कमल और आड़ू के पेड़ थे।

एक भक्त के रूप में मैं अक्सर पशुपतिनाथ मंदिर जाती थी और विभिन्न मुख वाले रुद्राक्ष एकत्र करती थी। वे सारी यादें अब एक साथ वापस आ रही हैं। चंद्रगिरि पहाडियों का अवलोकन और माउंट एवरेस्ट को देखना भी मेरे लिए यादगार है। मैंने प्रधानमंत्री बी.पी. कोइराला की पत्नी श्रीमती सुशीला कोइराला के साथ मणिपुरी नृत्य सीखा। इसके अलावा, मैंने शांता रामाराव के संस्कृत नाटक में मीरा की भूमिका निभाई, जिसकी मेजबानी राजदूत हरिश्वर दयाल की पत्नी लीलादेवी ने की थी, जो अपने आप में एक सांस्कृतिक व्यक्तित्व थीं। मेरे कई नेपाली रिश्तेदार हैं। मेरी बहन कुसुम श्रेष्ठ ने नेपाली राजशाही पर एक अग्रणी पुस्तक लिखी है। ये सारे रिश्ते मुझे यहां ले आए. साथ ही, मेरे पहले उपन्यास "स्वैलोइंग द सन" की प्रेरणा और समर्पण भी मेरे पिता को ही है, जिन्होंने नेपाल में अपने ७ साल नेपाल के संविधान और कानूनी आधार को स्थापित करने में मदद करने के लिए समर्पित किए, जिसके बारे में मैंने पूर्व विदेश सचिव भट्टराई से भी सुना था। दिन। यह साहित्यिक उत्सव नेपाली और भारतीय साहित्य की गंगा का संगम है और मैं इसमें बागमती स्नान करने के लिए उत्सुक हूं। यह त्यौहार नेपाली और भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के बीच संबंधों का भी जश्न मनाता है और इसे बढ़ावा देता है। प्रत्येक भाषा ने अपनी प्रेरणा संस्कृत भाषा के स्रोतों और उसकी आध्यात्मिक और वैचारिक परंपराओं से ली है।

यह रामायण, महाभारत, पुराण, भगवद गीता, बौद्ध जातक कथाएँ, लोककथाएँ, आधुनिक समाजवादी यथार्थवाद, सिनेमा, बॉलीवुड, कॉलीवुड, नाटक, दृश्य-श्रव्य मीडिया के साथ-साथ नेपाल-भारत सांस्कृतिक और साहित्यिक संबंधों की एक समृद्ध और रंगीन विविधता है। सीमा पार बौद्धिक, कलात्मक और पारिवारिक आदान-प्रदान की समृद्धि और उपलब्धि बहुत आसान रही है। मैं हमारे रिश्ते को प्राचीन और भव्य हिमालय पर्वत जितना विशाल, जीवनदायिनी गंगा नदी जितना कीमती और हिंदू और बौद्ध विरासत जितना पवित्र मानती हूं।

एक भक्त के रूप में मैं अक्सर पशुपतिनाथ मंदिर जाती थी और विभिन्न मुख वाले रूद्राक्ष एकत्र करती थी। वे सारी यादें अब एक साथ वापस आ रही हैं। चंद्रगिरि पहाडियों का अवलोकन और माउंट एवरेस्ट को देखना भी मेरे लिए यादगार है। मैंने प्रधानमंत्री बी.पी. कोइराला की पत्नी श्रीमती सुशीला कोइराला के साथ मणिपुरी नृत्य सीखा। इसके अलावा, मैंने शांता रामाराव के संस्कृत नाटक में मीरा की भूमिका निभाई, जिसकी मेजबानी राजदूत हरिश्वर दयाल की पत्नी लीलादेवी ने की थी, जो अपने आप में एक सांस्कृतिक व्यक्तित्व थीं।

नेपाल में साल्ट ट्रेडिंग की यात्रा

कंचना झा

यदि आपके सामने छप्पन प्रकार के व्यंजनों को परोस दिया जाए और सभी में नमक न हो तो उस खाने को क्या कहेंगे ? शायद ही किसी को पसंद आ जाए। खाने में नमक न हो तो खाने का स्वाद बेस्वाद हो जाता है। जीवन में नमक अति महत्वपूर्ण है। इसकी कमी से बहुत तरह की बीमारियां शरीर को घेर लेती हैं। स्वस्थ्य शरीर के लिए नमक आवश्यक है और इसे लेकर लोग चेतनशील भी हैं। नमक के लिए हर जगह आंदोलन किए गए हैं। चाहे फिर वो भारत ही क्यों न हो। यहाँ भी नमक आन्दोलन हुआ था भले ही वो देश की आजादी के संदर्भ में रहा हो। नेपाल में नमक के प्रसंग को जोड़ने के लिए एक तलाश करनी होगी। साल्ट ट्रेडिंग जिसकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है नेपाल के बाजार या अर्थव्यवस्था में। आम नागरिक तक जिसने नमक को पहुँचाया है आज इसकी चर्चा जोर शोर से हैं। सबसे पहले तो साल्ट ट्रेडिंग की स्थापना काल को समझना होगा, उस समय की स्थिति को समझना होगा। तो नेपाल में जब साल्ट ट्रेडिंग की स्थापना हुई उसके पीछे एक कहानी है।

नेपाल में साल्ट ट्रेडिंग :

ये २०१९ साल की बात है जब तत्कालीन राजा महेन्द्र वीर विक्रम शाह पूर्वाञ्चल के पहाड़ी क्षेत्रों का भ्रमण कर रहे थे। वहाँ की आम जनता से मिल रहे थे। उनकी अवस्था को लेकर उनसे बातें कर रहे थे। राजा महेन्द्र को भी इस बात की भनक नहीं थी कि उनकी जनता को नमक भी खाने को नहीं मिलता है। पूर्वाञ्चल के पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाली जनता ने जब उनसे कहा कि (नुन खान पाइएन सरकार) नमक नहीं खा पा रहे हैं सरकार ! राजा महेन्द्र के मन में तभी यह ख्याल आया कि हमारी जनता के पास खाने के लिए नमक तक नहीं है। वहाँ से काठमांडू लौटने के बाद वो इस समस्या के समाधान में लगे। लौटने के बाद उन्होंने तत्कालीन समय में नमक के कारोबार में जिनकी भी संलग्नता थी उन सभी से बातचीत की और इसका क्या समाधान हो सकता है ? इस ओर ध्यान दिया। उन्होंने उस वक्त के सभी नमक कारोबारियों को अनिवार्य शेयर होल्डर बनाकर मुख्य-मुख्य नौ व्यापारियों को यह जिम्मेवारी दी कि देशभर में प्रत्येक जनता के घर तक नमक पहुँचे। तत्कालीन वाणिज्य विभाग के निर्देशक गजेन्द्र देव पाठक की अध्यक्षता में २०२० साल भाद्र २७ गते साल्ट ट्रेडिङ कॉर्पोरेशन लि.की स्थापना की गई। इसकी स्थापना के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण यह था कि किसी भी तरह से नमक जनता तक पहुँचे।

तत्कालीन समय में साल्ट ट्रेडिङ का उद्देश्य एक ही था कि हरेक जनता के घर में सहजतापूर्वक नमक पहुँचे। देश के लिए वो बहुत ही कठिन समय था। अपने देश में नमक उत्पादन के लिए स्रोत और साधन नहीं होने के कारण थोड़ा सा भी नमक पा लेना बहुत बड़ी बात कहलाती थी। तत्कालीन समय में नमक के मूल्य में एकरूपता नहीं थी। हर जगह यह उपलब्ध नहीं हो पाता था। गुणस्तरीयता की ही यदि बात की जाए तो वह भी नहीं थी। इसलिए यदि किसी ने नमक पा लिया तो यही बहुत बड़ी बात हो जाया करती थी। कहते हैं कि तत्कालीन समय में जिनकी पहुँच होती थी वो १०-१५ वर्ष के लिए नमक स्टोर कर लेते थे। या कहे कि उस समय चलन ही यही था।

आयो नून

२०२० भादव २७ गते नेपाल के इतिहास में बहुत बड़ा दिन माना जाता है जब नेपाल साल्ट ट्रेडिंग की स्थापना हुई। लेकिन धीरे-धीरे जब इसका विस्तार होने लगा तो लोगों में स्वास्थ्य को लेकर जागरुकता आई। आयोडिन युक्त नमक की तलाश होने लगी। अभी तक केवल नमक की बात हो रही थी अब जनता में एक नई लहर थी आयोडिन युक्त नमक खाने की। लेकिन नेपाल की भौगोलिक विकटता, यातायात साधन का अभाव और नमक का स्रोत देश में नहीं होने की अवस्था में नमक का कारोबार करना बहुत ही जटिल था। इस पर से लोगों में कंठरोग देखा जाने लगा। अब इस समस्या से कैसे उबरा जाए ? या इसे नियंत्रण में कैसे लाया जाए ? इसके लिए एक बहस शुरु होने लगी। बहस से एक बात सामने आई कि कण्ठरोग नियन्त्रण के लिए आयोडिनयुक्त नमक सर्वसाधारण को उपलब्ध कराना एकदम अनिवार्य है। लेकिन यह काम इतना आसान नहीं था। यह बहुत ही जटिल काम था।

लेकिन बहस का नतीजा यह निकला कि २०३० साल में नेपाल सरकार ने नमक में ही आयोडिन मिलाने की नीति बनाई। उस समय तक नेपाल में आयोडिन की कमी से स्वास्थ्य समस्या बढ़ती जा रही थी। इस समस्या को देखकर ही सरकार ने नमक में ही आयोडिन मिलाने की नीति बनाई थी। २०२३ (सन्१९६५) के सर्वे अनुसार ५५ प्रतिशत जनता आयोडिन की कमी से किसी न किसी रोग से ग्रसित थे। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ), नेपाल सरकार के सहकार्य में हुए सर्वे में ४ प्रतिशत व्यक्ति सुस्त मनःस्थिति के देखे गए थे।

उस समय आयोडिनयुक्त नमक की कमी से होने वाले रोग के कारण अवस्था बहुत ही भयावह थी। लगभग ८ प्रतिशत नागरिक देश में श्रम नहीं देने की अवस्था में थे यानी वो इतने बीमार थे कि कोई काम नहीं कर सकते थे। जनस्वास्थ्य के लिए यह एक बहुत बड़ी चुनौती थी। इस चुनौती के समाधान के लिए साल्ट ट्रेडिङ ने भारत के साथ सहकार्य कर लिया और आगे बढ़ने लगा। बहुत मशक्कत के बाद २०३० साल में साल्ट ट्रेडिंग नमक में ही आयोडिन मिलाकर बिक्री वितरण करने लगा। तब जाकर धीर-धीरे यह रोग निर्मूलन होना शुरू हुआ। आयोडिन की कमी होने से जो समस्या थी वह अब कम होती जा रही थी। जैसे, गर्भावस्था में आयोडिन की कमी से बच्चा खराब हो जाना, यदि बच्चे ने जन्म लिया भी तो वो अपंग होते थे। महिला में

ज्यादा रक्तस्राव होना, महीनावारी अनियमित होने जैसी समस्याओं का समाधान हुआ ।

इसके साथ ही विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा तय किए गए मापदण्ड को नेपाल साल्ट ट्रेडिंग पूरा करने में सफल हुआ और देशभर में आयोडिनयुक्त नमक को पहुँचाने में भी सफल रहा । साल्ट ट्रेडिंग की स्थापना का पहला उद्देश्य जनता तक नमक पहुँचाना था जो २०२० से शुरु हुआ । फिर समय बदला, परिस्थिति बदली तो आयोडिनयुक्त नमक की आवश्यकता हुई तो दूसरा उद्देश्य सामने आया । यह उद्देश्य भी २०३० में पूरा हुआ जब नमक में आयोडिन मिलाया जाने लगा ।

इतना होने के बाद कालाबजारी बढ़ गयी । अब एक और समस्या आई साल्ट ट्रेडिंग के लिए । आयोडिनयुक्त नमक को देशभर के लिए सहज बनाना और हरेक वर्ष होने वाले अभाव एवं कालोबजारी को रोकना । इन सभी कारणों को लेकर साल्ट ट्रेडिंग की स्थापना हुई थी । अब एक सवाल तो मन में आता है कि साल्ट ट्रेडिंग बनने से पहले आखिर क्या होता था ? नमक का व्यापार कैसे किया जाता था ? तो साल्ट ट्रेडिंग के बनने से पहले सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में एक मात्रा तय कर दी थी । जिसके तहत विभिन्न व्यक्ति को नमक आयात की अनुमति दी गई थी ।

अगर अभी के साल्ट ट्रेडिंग की बात करें तो धीरे-धीरे साल्ट ट्रेंडिंग में नमक के अलावे और भी आवश्यक वस्तुओं का कारोबार होने लगा । सेवा विस्तार करने के क्रम में साल्ट ट्रेडिंग ने अन्य अत्यावश्यक वस्तुओं में चीनी, मैदा आटा, सूजी, दाल चावल का भी कारोबार करना शुरु कर दिया । इसके साथ ही साल्ट ट्रेडिंग ने औद्योगिक चीजों में अखबरे कागज का कारोबार, सिमेंट का कारोबार, एलपीजी

गैस, इंस्योरेन्स कम्पनी की स्थापना की, गोरखकाली टायर के साथ ही न जाने कितने उद्योगों की स्थापना साल्ट ट्रेडिंग ने किया है ।

नेपाल में रोजगार के अवसर देने में साल्ट ट्रेनिंग की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण रही है । इसने बहुतों को रोजगार का अवसर दिया । देश के विभिन्न भागो में साल्ट ट्रेडिंग के शाखाओं की स्थापना की गई । और वहाँ रोजगार के भी अवसर बढ़ने लगे ।

लेकिन एक समय ऐसा भी था वो जब यहाँ मैदा मिल नहीं था । तब उस स्थिति में लोग गेहुँ भारत ले जाते थे । वहाँ जाकर गेहूँ बेचते थे और उससे मैदा खरीदकर लाते थे । लेकिन जब मैदा मिल की यहाँ स्थापना हो गई तो गेहूँ लेकर लोग भारत नहीं जाने लगे और नेपालियों को अपने ही देश रोजगार के अवसर प्रदान करने में साल्ट ट्रेडिंग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । इसके साथ ही जब कभी प्राकृतिक आपदाएं आ जाती है और लोगों में सामान के लिए त्राहि-त्राहि मचने लगती है तब भी साल्ट ट्रेडिंग अपने पास कम से कम छः महीने तक के लिए सामान स्टॉक करके रखता है ताकि किसी तरह की कोई दिक्कत नहीं हो ।

२०५२ साल में जब बाढ़ की चपेट में पड़कर काठमांडू आने जाने वाली सभी रास्ते बंद हो गए थे । काठमांडू में सामान का आना जाना बंद हो गया था । उस वक्त भी साल्ट ट्रैडिंग ने नमक का अभाव नहीं होने दिया था । इसी तरह २०६२-०६३ साल के जनआन्दोलन और १८ दिन तक मधेश आन्दोलन के समय में भी नेपाल के किसी भी भूभाग में नमक की कमी नहीं होने दी । २०७२ साल का भूकम्प तो याद ही होगा । इस समय में भी साल्ट ट्रेडिंग ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और कही से किसी तरह की कोई मंदी नहीं होने दी नमक की । इसी तरह कोरोना के समय में जब लोगों का बाहर निकलना बंद हो गया था तब साल्ट ट्रेडिंग ने हरेक मोहल्ले में गाड़ी से सामान घर-घर पहुँचाया था, अपनी सेवा दी थी । ये तो आपातकाल की अवस्था की बात हुई । साल्ट ट्रेडिंग हरेक के पर्व त्योहार के समय में नेपाल सरकार के निर्देशन अनुसार सहुलियत दुकान, सुपथ मूल्य की दूकान सञ्चालन करती आई है । साल्ट ट्रेडिंग ने लोगों के मन में अपने प्रति एक विश्वास बना लिया है ।

लोगों में इस विश्वास को प्राप्त करते रहने के लिए ही साल्ट ट्रेडिंग ने हमेशा अपने ग्राहकों को प्राथमिकता में रखा है । जनता को सहज और सुपथ मूल्य में दैनिक उपभोग्य सामान बिक्री करते हुए साल्ट ट्रेडिंग हरेक वर्ष अपने कर्मचारियों को बोनस देती आई है । साथ ही उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने वाले कर्मचारियों को प्रशंसा पत्र देती आई है । समय समय पर अपने कर्मचारियों का ध्यान रख लेना ही बहुत बड़ी बात है । अपने कर्मचारियों का साल्ट ट्रेडिंग हमेशा ख्याल रखती आई है और यही कारण है कि कर्मचारी भी अपनी संस्था के प्रति वफादार है ।

सामाजिक सुरक्षा भत्ताबाट कोही नछुटौं

नेपाल सरकारले हरेक जेष्ठ नागरिक, असहाय एकल महिला, लोपोन्मुख जाति, अपाङ्गता भएका नागरिक तथा लक्षित बालबालिकालाई सामाजिक सुरक्षा भत्ता उपलब्ध गराउँदै आएको छ । यस्तो भत्ता राज्यबाट अन्य कुनै किसिमका सेवा सुविधा प्राप्त नगर्ने नागरिकलाई मात्र उपलब्ध हुन्छ । उनीहरूलाई यस्तो भत्ता प्राप्तिका लागि सहयोग गरौं र आफ्नो पालिकामा सम्पर्क गर्न भनौं ।

विजयादशमी २०८१ को अवसरमा सुख शान्ति समृद्धि एवं उत्तरोतर प्रगतिको लागि **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं ।

विष्णु भट्टराई वडाध्यक्ष

१ नं. वडा कार्यालय

सरावल गाउँपालिका

नवलपरासी (पश्चिम), लुम्बिनी प्रदेश

मदिराजन्य पदार्थ सेवन नगरौं

लागू पदार्थ तथा सुर्तिजन्य पदार्थ स्वास्थ्यका लागि हानिकारक हुन्छ । त्यसैले यस्ता वस्तुको उपभोग नगरौं । कसैले गरिरहेको छ भने पनि उसलाई सम्झाऔं । आफ्नो टोल र समाजलाई मदिरा तथा सुर्तिजन्य पदार्थ मुक्त राख्न सहयोग गरौं ।

विजयादशमी २०८१ को अवसरमा सुख शान्ति समृद्धि एवं उत्तरोतर प्रगतिको लागि **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं ।

छोटेलाल गुप्ता वडाध्यक्ष

६ नं. वडा कार्यालय

सरावल गाउँपालिका

नवलपरासी (पश्चिम), लुम्बिनी प्रदेश

मैडेन फार्मा : मौत की दावत

प्रमोद कुमार मिश्र ...

दवा जीवन देती है और जहर मौत। जिंदगी लीनने वाले को कसाई कहा जाता है और मैडेन फार्मास्यूटिकल लिमिटेड दिल्ली के पितमपुरा स्थित अपने मुख्यालय से मौत बांट रही है । यह आरोप विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) का है ।

इस संवाददाता की ओर से डब्लूएचओ को भेजे मेल के जवाब में इसके संपर्क अधिकारी ने कहा है कि डब्लूएचओ को जानकारी है कि भारत सरकार दवाओं के दूषण से जुड़े कई मामलों की जांच कर रही है । साथ ही गाम्बिया में उत्पन्न स्थिति को लेकर एक मेडिकल प्रोडक्ट एलर्ट जारी किया गया है जहां मैडेन पैकेजिंग की सूची में शामिल है। जब कभी भी इस तरह का एलर्ट जारी किया जाता है तो यह सदस्य देशों के उपर निर्भर करता है कि वह अपने लोगों को इस जानलेवा दवाओं से रक्षा करे । गाम्बिया की यही परिस्थिति है । साथ ही एलर्ट जारी होने पर जहां ऐसे उत्पाद बनाए जाते हैं यह उस देश की जिम्मेदारी है कि वह इसे मरीजों तक पहुंचने से रोके, इस मामले में भारत के प्राधिकार को इस पर लगाम लगाना है कि इन दवाओं को मरीज प्रयोग में न लाएं या इसे विदेश को निर्यात नहीं किया जाए । इसलिए यह प्रश्न भारत के केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संस्था से पूछा जाना चाहिए क्योंकि यह उन सभी सदस्य देशों की जिम्मेदारी है कि वह ऐसी दवा उत्पादक कंपनियों की जांच करें ।

कहानी यही खत्म नहीं होती । गाम्बिया में तो मैडेन के खिलाफ अभी तक जांच की गई या नहीं इसकी सामूहिक जानकारी औषधि नियंत्रण प्राधिकारों की ओर से नहीं दी गई है लेकिन एक मामले में तो कंपनी के दो निदेशकों को न्यायालय की ओर से ढाई साल की सजा सुनाई गई थी। इस मामले में कंपनी ने अपने उत्पाद को एक दशक पूर्व वियतनाम भेजा था।

सोनीपत स्थित जिला न्यायालय ने मैडेन के दो कार्यकारी अधिकारी नरेश कुमार गोयल (कंपनी के कर्ताधर्ता) और एमके शर्मा (तकनीकि निदेशक) को ढाई साल की सजा सुनाई थी। इन दोनों पर न्यायालय ने अमानक रैनिटीडीन टैबलेट निर्यात करने के आरोप में एक-एक लाख का आर्थिक जुर्माना भी ठोका था। हालांकि बहस के दौरान आरोपी के वकील ने कोर्ट से कहा था कि इन दोनों आरोपियों की उम्र ६० साल से ज्यादा है और वे पिछले सात साल से न्यायालय के कार्यवाही को झेल रहे हैं, इसलिए उन्हें सजा में छूट दी जाए । शायद यही कारण है कि इन्हें महज ढाई साल की ही सजा हुई ।

उल्लेखनीय है कि कंपनी के खिलाफ इस मामले में २०१४ के दौरान जांच तब शुरू हुई थी जब वियतनाम में भारत के कंसुलेट

जेनरल ने औषधि महानियंत्रक को कहा था कि वियतनाम ने अमानक दवाओं के निर्यात के कारण कई भारतीय दवा निर्माता कंपनियों को काली सूची में डाल दिया है जिसमें मैडेन फार्मास्यूटिकल भी शामिल है।

यहां, यह कहना जरूरी है कि कंपनी एक यूनिट यहीं पानीपत में ही स्थित है। मामले में कोर्ट ने कहा कि अभियोजन पक्ष की ओर से यह साबित कर दिया गया है कि कंपनी पर लगाए आरोप किसी भी संदेह से परे है। इस मामले में कंपनी ने वियतनाम को दिल की बीमारी के इलाज से जुड़ी अमानक दवाओं को भेजा था। हालांकि कंपनी ने इस आरोप को खारिज किया लेकिन कोर्ट ने इसके कथन को सत्य नहीं माना। जब इस मामले में इस संवाददाता की ओर से कंपनी के कर्ताधर्ता नरेश कुमार गोयल से बात की गई तो उन्होंने कहा कि उच्च न्यायालय ने सोनीपत कोर्ट के फैसले पर रोक लगा दी है और इस मामले में कुछ बचा नहीं है। इसलिए वह इस मुद्दे पर बात नहीं करना चाहते।

हालांकि गाम्बिया के मामले में डब्लूएचओ की ओर जारी एलर्ट को लेकर सरकार ने कंपनी के उत्पादन को पिछले अक्टूबर में स्थगित कर दिया था और अभी तक इसके उत्पादन इकाइयों पर ताला ही लगा हुआ है। डब्लूएचओ के मुताबिक कंपनी की ओर से निर्मित कफ शिरप के पीने से गाम्बिया में बच्चों की मौत हुई। जबकि पिछले ०५ अक्टूबर तक मैडेन के पितमपुरा स्थित मुख्यालय में सब कुछ सामान्य था और यह अपने २५० लाख के आयात के सम्राज्य को बेहतर तरीके से चला रहा था। कहना गैर जरूरी है कि मैडेन के उत्पाद चिली से लेकर वेनेजुएला, सेनेगल, बुर्किना फासो, वियतनाम व कंबोडिया तक निर्यात किए जाते थे। कंपनी के वेबसाइट के मुताबिक इसके उत्पाद लगभग ४१ देशों में बेचे जाते हैं। लेकिन पांच अक्टूबर को सब कुछ असामान्य हो गया और कंपनी के ३२ साल का सपना एक ही बार ही टूट गया और इसके उत्पादन पर रोक लगा दी गई क्योंकि कंपनी पर डब्लूएचओ की ओर से गाम्बिया में ६६ बच्चों को मौत की निंद सुला देने के आरोप लगे। कहा गया कि मैडेन की दवाओं के पीने से इन बच्चों की किडनी ही काम करना बंद कर दिया और इनकी मौत हो गई।

जिन दवाओं को पीने से बच्चों की मौत हुई, उनमें प्रोमेथाईजी ओरल साल्यूशन, कोफेमेलीन बेबी कफ शीरप, मैकोफ बेबी कफ शीरप और मैग्रिप एन कोल्ड शीरप शामिल है। डब्लूएचओ के मुताबिक उक्त चारो दवाओं के प्रयोगशाला विश्लेषण से जानकारी मिली कि इसमें अत्यधिक मात्रा में डायएथिलीन ग्लाइकॉल की मिलावट थी जो विषैला होता है। इसके मुताबिक इन दवाओं को गाम्बिया के अलावा अन्य देशों में भी बेचा गया है। डब्लूएचओ ने अपने रिपोर्ट में कहा है कि डायइथिलीन ग्लाईकॉल व इथिलीन ग्लाइकॉल विषैला रसायन है और इसके चलते लोगों को पेट में दर्द, उलटी, डायरिया, पैशाब का बंद होना, सरदर्द, मानसिक अचेतना, किडनी का फेल होना आदि की शिकायत आने लगती है जो जानलेवा हो जाती है। कंपनी की ओर से उत्पादित सभी दवाएं को डब्लूएचओ द्वारा असुरक्षित समझा गया। २०२० के दौरान भी हिमाचल प्रदेश में १४ बच्चों की जान एक दूसरी कंपनी की ग्लाईकॉल मिश्रित दवा के लेने के कारण चली गई थी।

हालांकि मैडेन ने इस आरोप से अभी तक पूरी तरह इनकार किया जबकि अब इस कंपनी के निर्यात को रोक दिया गया है। कंपनी के बयान के मुताबिक इसके सभी कर्मी चकित हैं कि मीडिया में इस तरह की खबरें कैसे आ रही हैं। इसके मुताबिक इसने गाम्बिया के एजेंट से बच्चों की मौत की जानकारी ०५ अक्टूबर २०२२ औपचारिक रूप से मंगवाई जिसमें इस तरह की बात नहीं बताई गई। लेकिन डब्लूएचओ ने हमारे खिलाफ एलर्ट जारी कर दिया। यानी कंपनी भी एलर्ट की बात को स्वीकार कर रही है। डब्लूएचओ के एलर्ट के बाद केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संघ के विश्लेषक चार बार कंपनी के कार्यस्थल का दौरा कर चुके हैं। कंपनी ने इस मुतलिक कहा है कि मामला न्यायालय में होने के कारण वह इसके बारे में कुछ नहीं बोल सकती। वह रिपोर्ट का इंतजार कर रही है।

कहना गैरजरूरी है कि दिल्ली के पितमपुरा स्थित मैडेन फार्मास्यूटिकल्स की स्थापना १९९० में की गई थी। कंपनी की हरियाणा के सोनीपत और कुंडली स्थित दो यूनिटों में ६००० लाख कैप्सूल, १८० लाख इंजेक्शन, ३ लाख ट्यूब मलहम, २२ लाख शिरप के वाइल व १२००० लाख टैबलेट बनाए जाते हैं। कंपनी जीवन रक्षक दवाई से लेकर लेकर एंटीबायोटिक्स तक बनाती है। मैडेन अपने वेबसाईट पर यह भी दावा करती है कि इसे आईएसओ -९००१/२०००) व डब्लूएचओ से जीएमपी (गुड मैन्यूफैक्चरिंग प्रैक्टिस) का लाईसेंस प्राप्त है। जानकारी के मुताबिक कंपनी से जुड़ा यह पहला मामला नहीं है जिसमें इसके खिलाफ कार्यवाही हुई हो। इससे पूर्व केरल में इसके खिलाफ मामले आए और बिहार में भी यह २०११ से ब्लैकलिस्टेड है। २०१४ के दौरान वियतनाम ने ६६ कंपनियों को ब्लैकलिस्टेड की थी जिसमें मैडेन का नाम भी शामिल था। भारत के वियतनाम स्थित कंसुलेट जेनरल दीपक मित्तल ने भारत सरकार के स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय को लिखकर यह जानकारी दी थी। एक आरटीआई के जबाव में यह जानकारी उभरकर आई थी। लेकिन तो भी केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने मैडेन को सर्टिफिकेट ऑफ फार्माच्यूटिकल प्रोडक्ट (सीओपीपी) जारी कर दिया। उल्लेखनीय है कि डब्लूएचओ के नियम के मुताबिक किसी फार्मा कंपनी के पास इस आयाम का होना जरूरी है। 'ट्रूथ पिल' के लेखक दिनेश ठाकुर के मुताबिक अगर कंपनी जीएमपी के नियम का पालन करती तो दवा में ग्लाईकॉल के मिश्रण की जानकारी मिल जाती लेकिन कंपनी ने तो ऐसा किया ही नहीं जिसके चलते बच्चों की जान चली गई। हालांकि दवा में डीइथिलीन ग्लाईकॉल को लेकर भारत की स्थिति दयनीय है। २०२० के दौरान हिमाचल में १२ बच्चों की मौत के पूर्व गुरुग्राम में ३६ बच्चों की मौत इसी ग्लाईकॉल के कारण हुई थी। इससे पूर्व इस कैमिकल के कारण मुंबई में १४ बच्चों की मौत हुई थी। यहां जानना जरूरी है ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट १९४० में लागू किया गया था क्योंकि १९३८ में ग्लाईकॉल के कारण १०५ लोगों की मौत अमेरिका में हो गई थी।

सिचाई गरौं, उत्पादन बढाऔं ।

विजयादशमी २०८१ को पावन अवसरमा सुख शान्ति समृद्धि एवं उत्तरोतर प्रगतिको लागि **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं ।

ई. जोखी यादव अध्यक्ष
रियाजुल हक उपाध्यक्ष
युवराज अधिकारी सचिव
रामबहादुर चौधरी कोषाध्यक्ष

पिपरपाती प्रसौनी जल उपभोक्ता संस्था
फेनहरा, नवलपरासी
कपिलवस्तु, लुम्बिनी प्रदेश (नेपाल)

प्रधानमंत्री मोदी भारत को वैश्विक शक्ति बना रहे हैं

भारत वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल रहा है। उसकी प्रतिभा और नवाचार को विभिन्न क्षेत्रों में मान्यता मिल रही है। प्रौद्योगिकी और विज्ञान से लेकर राजनीति, कला और खेल तक, भारतीय दुनिया के मंच पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर अपना प्रभाव फैला रहे हैं। इसी वैश्विक सफलता में योगदान देने वाले कई व्यक्तियों में से एक हैं- **मनोज धालूमल कोटवानी**। इन्हें सैमी कोटवानी के नाम से जाना जाता है।

५ नवंबर, १९६९ को मुंबई में जन्मे सैमी कोटवानी अब रूसी संघ के नागरिक हैं। इन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय के सस्मिरा इंस्टीट्यूट अ'ाफ टेक्सटाइल्स और लंदन के इंग्लिश टेलर एंड कटर एकेडमी (सिल्क इंस्टीट्यूट) से शिक्षा प्राप्त की है। १९८८ में उन्होंने अपने परिवार के व्यवसाय में काम करना शुरू किया। १९९० में वे मास्को चले गए। अपने उद्यमशीलता के सफर की शुरुआत की। १९९४ तक उन्होंने "द इम्पीरियल टेलरिंग कंपनी" की स्थापना की और रूस के व्यवसायिक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई। रूस में तीन दशक से अधिक समय बिताने के बाद, उनकी सफलता की कहानी आज भी प्रेरणादायक है।

हाल ही में, दिल्ली ब्यूरो प्रमुख प्रो. **एस.एस. डोगरा** ने सैमी कोटवानी का साक्षात्कार लिया और उनके असाधारण जीवन की यात्रा के बारे में जाना। यहां उस बातचीत के कुछ अंश प्रस्तुत हैं :

सैमी कोटवानी

0 आपके पसंदीदा भारतीय और वैश्विक नेता कौन हैं ?

- भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एक अद्वितीय नेता हैं। इन्होंने हमारे महान देश को निर्देशित करने में असाधारण दृष्टिकोण और समर्पण दिखाया है। वैश्विक मंच पर, मैं रूसी संघ के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन को उनकी रणनीतिक नेतृत्व और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने की प्रतिबद्धता के लिए उच्च सम्मान देता हूं।

0 आप भारत-रूस संबंधों के बारे में क्या सोचते हैं ?

- भारत की स्वतंत्रता के बाद से, हमारे देश और सोवियत संघ (अब रूसी संघ) के बीच संबंध स्थिर सहयोगियों के जैसे रहे हैं। वर्षों से यह दीर्घकालिक साझेदारी और मजबूत होती गई है। इसमें सांस्कृतिक समानताएं और साझा भू-राजनीतिक हित शामिल हैं। भारतीय त्योहारों, जैसे- योग दिवस, दीवाली और होली के भव्य उत्सव इस संबंध को और गहरा बनाते हैं।

0 आप रूस में कब और कैसे बसे ?

- १९९० के दशक में, मैंने यूएसएसआर में अपना स्थान बनाने का निर्णय लिया। कूटनीतिक समुदाय की सेवा करने और वहां नियुक्त राजनयिकों को उच्च गुणवत्ता वाले टेलर्ड सूट प्रदान करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस कदम ने मुझे भारत और सोवियत संघ के बीच वाणिज्यिक संबंधों को बढ़ावा देने का अवसर दिया।

0 रूस में रहते हुए आपको क्या चुनौतियां आईं ?

- एक भारतीय के रूप में रूस में रहने के दौरान मुझे कुछ सांस्कृतिक और खान-पान संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। रूसी व्यंजन स्वादिष्ट होते हैं, लेकिन उनमें वह तीखापन नहीं होता जो हम भारतीय पसंद करते हैं। हालांकि, रूसी लोगों द्वारा दी गई गर्मजोशी और आतिथ्य ने मुझे और अन्य भारतीयों को घर जैसा महसूस कराया। भाषा की बाधा थोड़ी चुनौतीपूर्ण रही लेकिन धैर्य और स्थानीय संस्कृति को अपनाने से मैं इसे पार कर सका।

0 रूस-यूक्रेन संघर्ष पर आपका क्या विचार है ?

- रूस और यूक्रेन के बीच चल रहा संघर्ष एक जटिल मुद्दा है, जिसकी गहरी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ें हैं। मेरा मानना है

कि ये दोनों राष्ट्र साझा विरासत और पारिवारिक संबंधों से बंधे हैं। कूटनीतिक तरीकों से अपने मतभेदों को सुलझाने का मार्ग खोजें। उनका कोई भी लंबा संघर्ष क्षेत्रीय स्थिरता के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर भी अवांछनीय प्रभाव डालता है।

o रूस में आपकी प्रमुख उपलब्धियां क्या रही हैं ?

रूस में एक भारतीय के रूप में मैंने दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए काम किया है। मेरी सबसे गर्वित उपलब्धियों में से एक 'इंडिया डे' उत्सव का आयोजन है। इसमें दो मिलियन से अधिक लोग शामिल हुए। इसके अलावा मैं भारतीय व्यापार संघ (आईबीए), बीजेपी की ओवरसीज फ्रेंडशिप, भारतीय राष्ट्रीय सांस्कृतिक केंद्र सिता और अंतरराष्ट्रीय रूसी प्रेमी आंदोलन के भारतीय विभाग जैसे प्रतिष्ठित संगठनों का अध्यक्ष भी हूं।

o इंडो-रशियन बिजनेस एलायंस का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

हमारा प्रमुख उद्देश्य भारत और रूस के बीच आर्थिक और व्यावसायिक संबंधों को बढ़ाना है। हम रूसी बाजार में प्रवेश करने वाली भारतीय कंपनियों की मदद करते हैं और कानूनी, नियामक और लॉजिस्टिक चुनौतियों से निपटने में उनका समर्थन करते हैं।

o आप अपने टेलरिंग व्यवसाय को कैसे देखते हैं ?

टेलरिंग मेरा जीवन भर का जुनून रहा है। प्रत्येक ग्राहक की अनूठी जरूरतों के अनुसार बेहतरीन वस्त्र तैयार करना, मेरे व्यवसाय का मूल मंत्र रहा है। पिछले ३५ वर्षों में, मैंने एक सम्मानित व्यवसाय खड़ा किया है। इसमें मैंने सात राष्ट्राध्यक्षों सहित उच्च-प्रोफ़ाइल ग्राहकों के लिए वस्त्र तैयार किए हैं।

o क्या भारत सरकार ने रूस में आपके प्रयासों को मान्यता दी है ?

- मैं भारतीय कला, संस्कृति और विरासत को रूस में बढ़ावा देने के अपने कार्य को एक प्रेम भरे प्रयास के रूप में देखता हूं। हालांकि, भारत सरकार द्वारा मेरे प्रयासों को औपचारिक रूप से मान्यता नहीं मिली है। सच्ची देशभक्ति हमेशा पुरस्कारों के साथ नहीं आती। विभिन्न संस्कृतियों के बीच समझ को बढ़ावा देना ही मेरे लिए सबसे बड़ा इनाम है।

o रूस में प्रवास करने की प्रक्रिया क्या है ?

- रूस में प्रवास आमतौर पर वर्क परमिट, स्टूडेंट वीज़ा प्राप्त करने या निवेश या पारिवारिक पुनर्मिलन के माध्यम से स्थायी निवास के लिए आवेदन करने के रूप में होता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति की राष्ट्रीयता और उनके प्रवास के उद्देश्य पर निर्भर करती है।

o आप रूसी मीडिया को कैसे देखते हैं ?

रूसी मीडिया, कई देशों की तरह, विभिन्न दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। पाठकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे मीडिया सामग्री को आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखें, तथ्यों की जांच करें और संतुलित राय बनाएं।

o रूस में आपका अगला कदम क्या है ?

- मेरा अगला कदम रूस के अन्य प्रमुख शहरों में 'इंडिया डे उत्सव' का विस्तार करना है। इस आयोजन को मास्को में जबरदस्त सफलता मिल चुकी है। भारतीय संस्कृति को और भी अधिक लोगों के सामने प्रस्तुत करने का एक शानदार अवसर है।

o प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व पर आपका क्या विचार है ?

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक असाधारण नेता हैं। इनकी स्पष्ट दृष्टि और समर्पण से भारत वैश्विक शक्ति बनने की दिशा में अग्रसर है। उनके नेतृत्व में, मुझे विश्वास है कि भारत उन्नति की नई ऊंचाइयों तक पहुंचेगा।

o आपके जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

- मेरे जीवन का मुख्य उद्देश्य सकारात्मक सोच और दयालुता फैलाना, विविध संस्कृतियों को अपनाना और हर क्षण में खुशी ढूंढना है। सफलता सिर्फ मंजिल तक पहुंचने के बारे में नहीं है बल्कि इस यात्रा का आनंद लेना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

व्यक्तिगत घटना दर्ता गराऔं

जन्म, मृत्यु, विवाह, सम्बन्ध विच्छेद तथा बसाईसराईजस्ता व्यक्तिगत घटना समयमा नै आफ्नो पालिकाको वडा कार्यालयमा दर्ता गराउनुपर्दछ। किनकि व्यक्तिगत घटना दर्ता व्यक्ति पहिचानको पहिलो आधार हो। यस्ता घटना ३५ दिनभित्र स्थानीय पञ्जिकाधिकारीको कार्यालय (वडा कार्यालय) मा निःशुल्क रुपमा दर्ता गर्न सकिन्छ। सरकारलाई विकासका योजना तर्जुमा गर्न, नागरिकलाई प्रदान गरिने सेवा सुविधा सुनिश्चित गर्न, जनसंख्याको विवरण अद्यावधिक गर्न व्यक्तिगत घटना दर्ता आवश्यक हुन्छ। साथै व्यक्तिगत घटना दर्ता गरेपछि मात्रै राज्यबाट पाइने सुविधाहरू प्राप्त गर्न सकिनेछ।

विजया दशमी, शुभ दिपावली तथा छठ पर्व २०८१ को पावन अवसरमा सुख, शान्ति, एवं समृद्धिका लागि **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं।

रामाशंकर प्रसाद कुशवाहा
नगर प्रमुख

बलरा नगरपालिका
नगर कार्यपालिकाको कार्यालय
मधेश प्रदेश (सर्लाही) नेपाल

व्यक्तिगत घटना दर्ता गराऔं

जन्म, मृत्यु, विवाह, सम्बन्ध विच्छेद तथा बसाईसराईजस्ता व्यक्तिगत घटना समयमा नै आफ्नो पालिकाको वडा कार्यालयमा दर्ता गराउनुपर्दछ। किनकि व्यक्तिगत घटना दर्ता व्यक्ति पहिचानको पहिलो आधार हो। यस्ता घटना ३५ दिनभित्र स्थानीय पञ्जिकाधिकारीको कार्यालय (वडा कार्यालय) मा निःशुल्क रुपमा दर्ता गर्न सकिन्छ। सरकारलाई विकासका योजना तर्जुमा गर्न, नागरिकलाई प्रदान गरिने सेवा सुविधा सुनिश्चित गर्न, जनसंख्याको विवरण अद्यावधिक गर्न व्यक्तिगत घटना दर्ता आवश्यक हुन्छ। साथै व्यक्तिगत घटना दर्ता गरेपछि मात्रै राज्यबाट पाइने सुविधाहरू प्राप्त गर्न सकिनेछ।

विजया दशमी, शुभ दिपावली तथा छठ पर्व २०८१ को पावन अवसरमा सुख, शान्ति, एवं समृद्धिका लागि **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं।

राम कुमार यादव
वडाध्यक्ष
वडा नं. ४

भगवानपुर गाउँपालिका
गाउँ कार्यपालिकाको कार्यालय
मधेश प्रदेश (सिरहा) नेपाल

समाज, सोच और हमारा नजरिया

निक्की शर्मा रश्मी ...

अब तो देश में अपराध पर भी राजनीति होने लगी है । अपराध और अपराधी की कोई जाति नहीं होती ना धर्म होता है । इस विषय पर भी राजनीति करने वालों को शर्म आनी चाहिए । ओछी मानसिकता रखने वाले यह जान लें कि धर्म और जाति को मिलाकर अपराध का दायरा छोटा-बड़ा करने से कुछ नहीं होगा बस सोच बदलनी होगी ।

आज भारत देश की मां गंगा भी शर्मसार होगी उस में डुबकी लगाकर पाप धोने आने वालों को लेकर । पर्वत हिमालय भी शायद रो रहा होगा इतना विशाल हृदय होकर भी वह अपनी बेटियों की रक्षा नहीं कर पा रहा और नदियां रो रही होंगी जिसमें इस देश की बेटियों की अस्थियां प्रवाहित की जाती होंगी । बस रोती नहीं है तो राजनीति, रोते नहीं है तो बस समाज में मौजूद असंवेदनशील लोग । बलात्कार जैसी वीभत्स घटना पर सियासत करना शर्मसार करती है । यह याद रखें सियासत चमकाने वाले यह आग कभी न कभी तुम्हारे घर तक भी पहुंच सकती है । अपराध कब कहां हो जाए कहा नहीं जा सकता । अपराधियों पर नकेल नहीं कसा गया तो देश यूं ही शर्मसार होता रहेगा ।

दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि नारी देश में आज भी सुरक्षित नहीं, घर में सुरक्षित नहीं । दरिंदों की हैवानियत के कारण एक बेटी फिर हमारे बीच नहीं है । न्याय दिलाने के साथ पीड़ित परिवार की मदद करनी होगी । अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए तुरंत.. ना कि इंसाफ की लड़ाई में एक बार फिर सालों गुजर जाए ।संवेदनशील बनकर इस पर सोचना होगा । राजनीति से बाहर निकल कर जरा सोचो मानसिकता तभी बदलेगी जब सोच बदलेगी । नारी के प्रति गंदी नजर वालों को तुरंत सजा मिलनी चाहिए लेकिन इसके बजाय सालों इंसाफ के लिए पीड़ित परिवार लड़ता रहता है । अपराधियों को पता है इतना आसान नहीं हमारे देश में सजा मिल जाना । सजा तो लड़की और उसके परिवार वालों को मिलती है । सालों दर्द झेलते हैं इंसाफ की लड़ाई में कितने तो चुप रह जाते हैं । आखिर कब तक एक बेटी यूं ही दम तोड़ती रहेगी इज्जत तार-तार कर देने वाले थोड़ी तो शर्म करो बेटी तुम्हारे घर भी होगी ।

अब बदलाव हो गया है जरूरी

समाज किस ओर जा रहा एक बार चिंतन करके देखें ।कानून नहीं हमें सोच बदलनी होगी, लड़कों को सिखाना होगा सम्मान करना नारी का । समाज के सभी लोगों और कानून-व्यवस्था से आगे अपेक्षा होगी कि लाचारी, बेबसी और तड़प से नारी बाहर निकल सके और एक समय ऐसा लाएं... जहां बच्चियां, औरतें बेखौफ होकर घूमे ।आशा है एक सम्मान, बेखौफ, आजादी और बेवाकपन से जीने का अधिकार जरूर मिलेगा । खुद को बदलें अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दें भारतीय संस्कृति में नारी के महत्व और सम्मान को बताएं समझाएं । मां, बहन और बेटियों के पवित्र रिश्ते को बताएं । मानसिकता बदलेगी तभी सब कुछ बदलेगा । नजरिया बदलें.. सोच बदलेगी.. तभी गंदी मानसिकता से आजादी मिलेगी । महिलाओं को सम्मान देना बचपन से बतलायें तभी सोच अच्छी रहेगी, सम्मान नारी के प्रति रहेगा ।नयी सोच नया बदलाव लाएं । नारी और भी सशक्तिकरण की तरफ कदम आगे बढ़ा पाएगी । नारी पूरी तरह सशक्त हो उठेगी बस जरूरत है समाज में थोड़े से बदलाव की एक और पहल की ।

लुप्त हुई देवी-पूजन की मानसिकता

हिन्दू संस्कृति में नारी को बहुत ही सम्मान और महत्व दिया गया है, धरती पर नारी के अनेक रूप हैं । नारी को दुर्गा, काली, चंडी एवं सरस्वती का रूप मानने वाले लोगों की मानसिकता कहां लुप्त हो गई है समझ नहीं आ रहा । हालांकि नारी की स्थिति में पहले की तुलना में काफी हद तक सुधार हुआ है, नारी शिक्षा को बढ़ावा मिलने से प्रगति पथ पर अग्रसर होती रही है ।

राजनीति हो या व्यवसाय हर जगह नारी की भागीदारी है, आज नारी के बिना इस संसार में कुछ भी नहीं है इसके बिना, यह सृष्टि अधूरी है । भारतीय समाज को हमेशा पुरुष प्रधान माना गया लेकिन अब इक्कीसवीं सदी में आया है और आज नारी पुरुषों से कंधा से कंधा मिलाकर चल रही हैं, फिर भी जो सम्मान, जो इज्जत नारियों को मिलनी चाहिए वह मिलती ही नहीं है । जिस तरह के अमानवीय व्यवहारों से वह गुजरती है उसका अंदाजा भी शायद लगाना मुश्किल है ।

एक तरफ हम उन्हें आगे बढ़ाने की बात करते हैं और दूसरी तरफ अभद्रता की हद पार करते हैं, आजकल महिलाओं, छोटी-छोटी बच्चियों के साथ अभद्रता की सारी सीमाएं टूट गई है ।आज एक भी दिन ऐसा नहीं जाता जब हम बलात्कार जैसी वीभत्स घटना के बारे में नहीं सुनते हैं । छ महीने की बच्ची तक सुरक्षित नहीं है ।आज इक्कीसवीं सदी में पहुंचकर भी समाज की सोच नहीं बदल रही । क्यों.. नारी के सम्मान के साथ खिलवाड़ किया जा रहा, अपनी सोच बदलिए । महिलाओं की सुरक्षा के लिए नियम तो बनते हैं, पर क्या उन्हें इस कानून से इंसाफ मिला, ? नहीं- ..

कमजोर कानून व्यवस्था में खत्म हो गया डर

डर.. किसी को कानून का हो तभी तो..पर-डर कैसा- जब गलती की सजा नहीं मिलती तो गलतियां तो आगे भी करते ही जाएंगे । यह बात कोई क्यों नहीं समझ पाता, हैवानियत की हद पार कर जिस तरह आज देश के हर हिस्सों में महिलाओं के साथ ये सब हो रहा, अगर फांसी की सजा सुनाई जाती तो घटनाएं कम जरूर होती । नारी शक्ति की बातें करते हैं, नियम बनाते हैं पुरुष और फिर उसी नारी को कुचल डालते हैं, क्योंकि पुरुष प्रधान समाज है ।

कहने को आज भी नारी कदम से कदम मिलाकर चल रही है पुरुषों के साथ ताल से ताल मिला रही है पर नजरिया आज भी पुरुषों का नहीं बदला । अगर चार बातें हंसकर कर लो तो गलत समझ कर फायदा उठाने की कोशिश करते हैं, मौका पाने पर रौंदने से बाज नहीं आते । आखिर क्यों.. ? क्योंकि हमारे देश का कानून कमजोर है । सोच बदलो तभी नजरिया बदलेगा और फिर देश और हर बेटी भी । सोच बदल कर तो देखो ।

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में दूध, आंखों में पानी
२१ वीं सदी में भी ना बदली तेरी कहानी"

मानव जीवन के लिए आवश्यक है अध्यात्म

शोभानन्द झा

अध्यात्म का विशेष अर्थ है अपने भीतर चेतन तत्व को महसूस करना। इस चेतन तत्व का सीधा सम्बन्ध ईश्वर से है। आत्मा को ईश्वर का अंश माना जाता है। आत्म-चिंतन आत्मा और ईश्वर के बीच संबंध, दुनिया के निर्माण में इसकी भूमिका, मृत्यु के बाद या जन्म से पहले की वास्तविकता, जीवन और मृत्यु के चक्र की खोज करने का आध्यात्मिक मार्ग है।

सामान्यतः अध्यात्म का अर्थ आस्तिकता होता है। आस्तिकता का अर्थ है, ईश्वर पर विश्वास और ईश्वर पर विश्वास का अर्थ है परमसत्ता का अस्तित्व मानना। यह परमसत्ता न्याय करने वाली, सर्वव्यापक और कर्मफल के अनुसार व्यक्ति को उत्थान-पतन के प्रति भी प्रेरित करती है। वहीं अध्यात्म का शाब्दिक अर्थ है-आत्मा से संबंध, आत्मा-परमात्मा संबंधी विचार, आत्मबोध आदि। ईश्वर-तत्व की प्राप्ति होने पर व्यक्ति चेतन व सहज हो जाता है, क्योंकि वह अविनाशी, सनातन और परमसत्ता का ही अंश है। व्यक्ति का अध्यात्म से संपर्क होते ही चित्ता की चंचलता समाप्त हो जाती है, बुद्धि पूर्णरूप से नियंत्रित हो जाती है और काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि मनोविकारों से मुक्ति मिल जाती है। आध्यात्मिक ऊर्जा अर्जित होते ही व्यक्ति का अन्तःकरण निर्मल, दृढ़ संकल्प से युक्त, सात्विक और देवत्व के गुणों से परिपूर्ण हो जाता है। भारत वह दिव्य-भूमि है, जहां धन से अधिक धर्म, भोग से अधिक योग और संस्कारयुक्त सदाचार को महत्व दिया जाता है। मानव-जीवन प्रभु की करुणा से समस्त जीवधारियों में श्रेष्ठतम उपलब्धि है। अध्यात्म मानव जीवन को व्यवस्थित रूप से जीने की वह वैज्ञानिक पद्धति है, जो व्यक्ति को आनंद, संपन्नता, समृद्धि, सुख और शांति प्रदान करता है, लेकिन भ्रमवश 'अध्यात्म' का सही अर्थ न जानने वाले कुछ लोगों का कहना है कि लौकिक जीवन में अध्यात्म का कोई महत्व नहीं है और यह विषय तो योगियों और ऋषियों से ही संबंधित है।

वर्तमान पीढ़ी हर चीज़ का वैज्ञानिक अर्थ तलाशती है। जब तक उन्हें किसी भी चीज़ में वैज्ञानिक तथ्य नहीं मिलते, तब तक वे उसे दिखावा, अहंकार और अंधविश्वास कहकर खारिज कर देते हैं। अध्यात्म की समझ और कहावतों ने उनमें ऐसा ही भ्रम पैदा कर दिया है। धर्म के संबंध में अध्यात्म की व्याख्या की गई है। इसीलिए जो लोग स्वयं को शिक्षित और सुशिक्षित कहते हैं वे यह कहने में गर्व महसूस करते हैं कि 'मैं उतना आध्यात्मिक नहीं हूं।'

अध्यात्म कोई आध्यात्मिक विश्लेषण या दर्शन नहीं है। अध्यात्म का शाब्दिक अर्थ है स्वयं का अध्ययन। हर जीव के शरीर में एक अलग शक्ति होती है, वह है अध्यात्म। शरीर के अंदर चेतना है, जीवन है। इसमें आकाश भी है. उससे परे जो है वह अध्यात्म है। अध्यात्म के बारे में लिखा है, "आध्यात्म कोई ईश्वरीय चर्चा नहीं है." यह प्रकृति को जानने वाला रसायन शास्त्र है। अध्यात्म मानव मन के स्तर का अद्‌भुत रासायनिक विश्लेषण है।

अध्यात्म का विशेष अर्थ है अपने भीतर चेतन तत्व को महसूस करना। इस चेतन तत्व का सीधा सम्बन्ध ईश्वर से है। आत्मा को ईश्वर का अंश माना जाता है। आत्म-चिंतन आत्मा और ईश्वर के बीच संबंध, दुनिया के निर्माण में इसकी भूमिका, मृत्यु के बाद या जन्म से पहले की वास्तविकता, जीवन और मृत्यु के चक्र की खोज करने का आध्यात्मिक मार्ग है।

मैं कौन हूँ इस प्रश्न की खोज करके कोई भी व्यक्ति अध्यात्म में प्रवेश कर सकता है। शरीर मैं नहीं हूं. हाथ, पैर, आंखें, सिर, हृदय, गुर्दे, फेफड़े ये 'मैं' नहीं हैं। मैं कौन हूँ ? यही खोज अध्यात्म की राह पर ले जाती है।

स्वस्थ जीवन के लिए अध्यात्म को समझना जरूरी है। आध्यात्मिक और शारीरिक स्वास्थ्य आपस में जुड़े हुए हैं। आध्यात्मिकता के माध्यम से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के बीच अच्छा संबंध स्थापित किया जा सकता है। यह हमारे दिमाग को ताकत देता है. ऐसा कहा जाता है कि जब कोई व्यक्ति भावनात्मक रूप से स्वस्थ होता है तो कोई भी बड़ी बीमारी उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाती।

डिजिटल आई स्ट्रेन से कैसे बचें ?

आजकल हर कोई स्मार्टफोन, लैपटॉप या कंप्यूटर का इस्तेमाल करता है । इतने समय तक स्क्रीन के सामने रहने से आंखों पर काफी दबाव पड़ता है । सिरदर्द, ब्लर विजन और ड्राई आइज जैसी समस्याएं आम हो गई हैं । बता दें, ये सभी डिजिटल आई स्ट्रेन के लक्षण हैं ।

क्या आप भी लगातार स्क्रीन देखने से आंखों में थकान महसूस करते हैं ? सिरदर्द और धुंधली दृष्टि जैसी समस्याओं से परेशान हैं ? अगर हां, तो डिजिटल आई स्ट्रेन से बचने का एक बेहद आसान और प्रभावी तरीका है २०-२०-२० रूल । हर २० मिनट में २० सेकंड का ब्रेक लें और अपनी नजर २० फीट दूर किसी वस्तु पर केंद्रित करें । यह छोटा सा ब्रेक आपकी आंखों को आराम देता है और स्क्रीन पर लगातार ध्यान केंद्रित करने से होने वाले तनाव को कम करता है । आप अपने फोन में रिमाइंडर सेट कर सकते हैं या ऐसे ऐप्स का इस्तेमाल कर सकते हैं जो आपको ब्रेक लेने के लिए याद दिलाते रहें ।

पलकें झपकाते रहें

जब हम कंप्यूटर, स्मार्टफोन या टैबलेट पर काम करते हैं, तो हम अक्सर पलक झपकाना भूल जाते हैं । इससे हमारी आंखें सूख जाती हैं और जलन होने लगती है । इसलिए, जब भी आप किसी स्क्रीन पर ध्यान केंद्रित कर रहे हों, तो जानबूझकर बार-बार पलकें झपकाने की कोशिश करें । पलकें झपकाने से आपकी आंखें नम रहेंगी और ड्राईनेस दूर रहेगी । अगर आपको पलक झपकाने की याद रखने में दिक्कत होती है, तो आप डॉक्टर की सलाह पर किसी आई ड्रॉप का इस्तेमाल भी कर सकते हैं ।

स्क्रीन सेटिंग में बदलाव

आपके स्मार्टफोन, लैपटॉप या कंप्यूटर की स्क्रीन की चमक और कंट्रास्ट का आपकी आंखों की सेहत पर सीधा असर पड़ता है । अगर आपकी स्क्रीन की चमक बहुत ज्यादा है या कमरे की रोशनी के मुकाबले बहुत ज्यादा अलग है, तो आपकी आंखें जल्दी थक जाएंगी । इसलिए, अपनी स्क्रीन की चमक को कमरे की रोशनी के अनुसार एडजस्ट करना बहुत जरूरी है । आप टेक्स्ट का साइज बढ़ाकर और एंटी-ग्लेयर स्क्रीन या कोटिंग का इस्तेमाल करके भी अपनी आंखों को आराम दे सकते हैं ।

आंखों की थकान और तनाव को कम करने के लिए आंखों से जुड़ी एक्सरसाइज बहुत फायदेमंद होती हैं । आप अपनी आंखों को घुमाकर, ऊपर-नीचे और दाएं-बाएं देखकर या १० सेकंड में एक बार अपनी नजर दूर करके इन एक्सरसाइज को कर सकते हैं । ये एक्सरसाइज न सिर्फ आपकी आंखों की मांसपेशियों को मजबूत बनाती हैं बल्कि आपकी एकाग्रता को भी बढ़ाती हैं । नेत्रहीनता जानलेवा नहीं होती है, लेकिन यह व्यक्ति के जीवन कई तरीकों से प्रभावित करती है । पांच मुख्य ज्ञानेन्द्रियों में शामिल होने के बावजूद लोग इसकी हेल्थ पर इतना ध्यान नहीं देते ।

समय पर जरूरी कदम उठाकर और आंखों की जांच करा कर ग्लूकोमा, मोतियाबिंद और डायबिटिक रेटिनोपैथी जैसी कई बीमारियों से बचा जा सकता है और उन्हें ठीक किया जा सकता है । आई-केयर के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना बहुत ज़रूरी है । उतना ही ज़रूरी लोगों को यह समझाना भी है कि उन्हें आंखों की जांच कब करवानी चाहिए ।

१. उम्र के अनुसार

बच्चे और किशोर: लगभग ६ महीने की उम्र में आंखों की जांच कराना शुरु करें । ३ साल की उम्र में स्कूल जाना शुरू करने से पहले फिर से जांच कराएं । पढ़ाई के दौरान दो से तीन साल में और पढ़ाई खत्म होने के बाद भी दो साल में एक बार जांच कराते रहें ।

> **अगर आंखों की कोई समस्या या जोखिम नहीं है, तो हर दो साल में एक बार आंखों के डा'क्टर को दिखाएं । अगर आप करे'क्टिव लेंस पहनते हैं या आपको कोई प्रा'ब्लम है, तो हर साल आंखों की जांच करा लें ।**

वयस्क (१८-६०): अगर आंखों की कोई समस्या या जोखिम नहीं है, तो हर दो साल में एक बार आंखों के डॉक्टर को दिखाएं । अगर आप करेक्टिव लेंस पहनते हैं या आपको कोई प्रॉब्लम है, तो हर साल आंखों की जांच करा लें ।

वरिष्ठ नागरिक (६०+): ६० वर्ष की आयु के बाद हर साल आंखों की जांच करानी चाहिए, क्योंकि बढ़ती उम्र में आंखों की रोशनी कमजोर होने लगती है ।

आंख की समस्याएं

ग्लूकोमा: जिनके परिवार में आंख से जुड़ी समस्यार रही हों, उन्हें हर १ से २ साल में आंखों की जांच करवाते रहनी चाहिए । अगर आपको ग्लूकोमा डायग्नोज़ हुआ है, तो आपको और ज़्यादा सर्तक रहना चाहिए ।

मधुमेह: मधुमेह से पीड़ित लोगों को डायबिटिक रेटिनोपैथी का खतरा ज़्यादा होता है । किसी भी परेशानी से बचने के लिए हर साल आंखों की जांच कराएं ।

बढ़ती उम्र के कारण मैक्यूलर डिजनरेशन (एएमडी): अगर आपको एएमडी है या उम्र और पारिवारिक इतिहास के कारण इसका जोखिम है, तो आपको समय-समय पर डॉक्टर से कंसल्ट करते रहना चाहिए ।

देखने में परेशानी

आंखों में किसी तरह की कोई परेशानी जैसे धुंधलापन, दर्द, या तनाव महसूस हो, तो भी डॉक्टर से संपर्क करें । ये परेशानियां रिफ्रैक्टिव प्रॉब्लम्स, ग्लूकोमा या रेटिनल डिटैचमेंट आदि के कारण हो सकते हैं । आंखों की जांच कब-कब करानी है, यह कई चीज़ों पर डिपेंड करता है । इसमें उम्र, आंखों की मौजूदा स्थिति, लाइफस्टाइल इन सभी की भूमिका है ।

समय प्रबंधन के साथ-साथ जरूरी है विचारों का भी उचित प्रबंधन

(समय प्रबंधन एक अ'ब्जेक्टिव एप्रोच मात्र है, जबकि विचारों का प्रबंधन एक ऑब्जेक्टिव एप्रोच है। सब्जेक्टिव एप्रोच अवचेतन मन के स्तर पर प्रभावित करती है अतः इसका स्थायी प्रभाव पड़ता है। इसीलिए विचार प्रबंधन के क्षेत्र में और भी अधिक सावधानी व सतर्कता अनिवार्य है।)

सीताराम गुप्ता ...

हमारी इच्छाएँ एकदम स्पष्ट होनी चाहिए। एक चित्र अथवा नियाॅन साइन बोर्ड की तरह एकदम स्पष्ट। जैसी स्पष्ट इच्छा या अपेक्षा वैसा ही स्पष्ट कार्य। यदि हमारी इच्छाएँ महान हैं, सात्विक हैं तो कार्य भी महान व सात्विक ही होंगे। लेकिन यदि हमारी अपेक्षाएँ क्षुद्र हैं तो हम बड़े कार्य कभी नहीं कर सकते बेशक हम कितना ही समय प्रबंधन कर लें। जो लोग अपने जीवन में छोटी-छोटी महत्त्वहीन बातों में ही उलझे रहते हैं वे कभी सफलता की ऊँचाइयों को नहीं छू पाते।

समय अमूल्य निधि है इसमें संदेह नहीं। हर एक व्यक्ति के पास दिन में मात्र चौबीस घंटे का समय होता है जिसमें उसे अपने सारे कार्य सम्पन्न करने होते हैं। हम अपने समय का अधिकाधिक उपयोग कर सकें इसके लिए समय प्रबंधन आवश्यक है। हमारा प्रयास होता है कि हमारे समय के हर क्षण का अधिकाधिक उपयोग हो सके। लेकिन कुछ लोग समय के वर्गीकरण को ही समय प्रबंधन मानने की भूल करते हैं और टाइम टेबल बनाकर समय को व्यवस्थित करने का प्रयास करते हैं। टाइम टेबल बनाने अथवा समय के वर्गीकरण का सबसे बड़ा लाभ यही है कि हम अलग-अलग कामों के लिए समय निश्चित कर लें लेकिन यदि उस दौरान किए गए कार्य उपयोगी अथवा लाभप्रद नहीं हैं तो ऐसे समय वर्गीकरण का क्या लाभ ? हर रेलवे स्टेशन पर कई जगह टाइम टेबल लगा होता है लेकिन यदि गाड़ियाँ ही समय पर रेलवे स्टेशन पर अथवा अपने गंतव्य पर नहीं पहुँच पाती हैं तो ऐसे टाइम टेबल का क्या लाभ ?

समय के वर्गीकरण की अपेक्षा समय का सदुपयोग अधिक जरूरी है। बहुत सारे ऐसे लोग भी रहे हैं जिन्हें समय प्रबंधन की जानकारी नहीं थी लेकिन उन्होंने अपने जीवन में आशातीत सफलता प्राप्त की। उनकी इस आशातीत सफलता के पीछे अवश्य ही कुछ कारण रहे होंगे। उन्होंने अवश्य ही जीवन में कुछ अच्छा चाहा होगा। वास्तव में हम जो कार्य करते हैं उसके मूल में हमारी अपेक्षाएँ अथवा इच्छाएँ ही होती हैं। इच्छाओं के अभाव में मनुष्य शुष्क बंजर धरती के समान है जिसमें उपलब्धियों के पुष्प नहीं खिल सकते। ऐसे में यदि कुछ उगेगा भी तो वो होगा निरर्थक व अनुपयोगी कार्य रूपी झाड़-झंखाड़ अथवा खर-पतवार जिसका हमारे जीवन में कोई महत्त्व ही नहीं होता। लेकिन कई बार हम बहुत सारी इच्छाएँ रखते हुए भी सफल नहीं हो पाते इसका क्या कारण हो सकता है ? कारण है हम बहुत कुछ चाहते हैं लेकिन हमारे सामने स्पष्ट नहीं होता कि हम क्या चाहते हैं और कैसे चाहते है। दूसरे वह उपयोगी भी है अथवा नहीं ये और भी महत्त्वपूर्ण है।

हमारी इच्छाएँ एकदम स्पष्ट होनी चाहिए। एक चित्र अथवा नियाॅन साइन बोर्ड की तरह एकदम स्पष्ट। जैसी स्पष्ट इच्छा या अपेक्षा वैसा ही स्पष्ट कार्य। यदि हमारी इच्छाएँ महान हैं, सात्विक हैं तो कार्य भी महान व सात्विक ही होंगे। लेकिन यदि हमारी अपेक्षाएँ क्षुद्र हैं तो हम बड़े कार्य कभी नहीं कर सकते बेशक हम कितना ही समय प्रबंधन कर लें। जो लोग अपने जीवन में छोटी-छोटी महत्त्वहीन बातों में ही उलझे रहते हैं वे कभी सफलता की ऊँचाइयों को नहीं छू पाते। हमारी सोच, हमारे लक्ष्य, हमारी अपेक्षाएँ अथवा हमारे विचार ही हमारे कार्य के स्वरूप को निश्चित व निर्धारित करते हैं, उसे आकार प्रदान करते हैं। हमारे सपनों के अनुरूप सफलता ही हमें मिल पाती है। तभी कहा गया है कि जीवन में ऊँचे सपने देखो। जब हम कोई बड़ा सपना देख ही नहीं सकते तो उसे पा कैसे सकेंगे ? केवल सपने देखना ही नहीं बड़े सपने देखना भी अनिवार्य है और वे सब सपने हमारे लिए ही नहीं समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी भी होने चाहिए। जीवन में जिसने सही सपनों का चुनाव करना सीख लिया उसने बहुत बड़ी बाजी जीत ली समझो।

कई बार हमारी अपेक्षाएँ अथवा हमारे सपने बहुत बड़े होते हैं और हम उन्हें पूर्ण भी कर लेते हैं लेकिन फिर भी जीवन में संतुष्टि नहीं मिल पाती अथवा हम उस सफलता से लाभांवित नहीं हो पाते। इसका अर्थ यही है

कि हमने समय का भरपूर इस्तेमाल तो किया लेकिन प्राप्त उपलब्धियों में संतुलन का अभाव रहा। और इस असंतुलन के मूल में है इच्छाओं, अपेक्षाओं अथवा विचारों के सही प्रबंधन का अभाव। जब तक विचारों का सही प्रबंधन नहीं होता प्राप्त उपलब्धियों में संतुलन हो ही नहीं सकता। यदि हमारी इच्छा खूब धन पाने की है तो जब तक धन को सही तरीक़े से कमाने व प्राप्त धन के सही तरीक़े से उपयोग की इच्छा अथवा अपेक्षा नहीं करेंगे वह धन हमारे लिए जी का जंजाल बनकर रह जाएगा। उसके दुरुपयोग की संभावना बढ़ जाएगी। वो धन स्वर्णनिर्मित उन कर्णफूलों के समान हो जाता है जो कानों को काटते हैं। इस स्थिति से बचने के लिए विचारों का उत्तम प्रबंधन अनिवार्य है। केवल विचारों के सही प्रबंधन अथवा संतुलन द्वारा ही हम आदर्श स्थिति प्राप्त कर सकते हैं।

कई बार हम बहुत कुछ चाहते हैं लेकिन हमें ये पता नहीं होता कि हम क्या चाहते हैं ? हम क्या चाहते हैं, क्यों चाहते हैं और कैसे चाहते हैं ये विचार भी अत्यंत स्पष्ट होने चाहिए। हमारी अपेक्षाओं, उनके उचित उपयोग व उन्हें पाने के तरीक़े के विषय में पूर्ण रूप से स्पष्टता होनी चाहिए। जीवन में समृद्धि की कामना बुरी बात नहीं है। जीवन में बड़े सपने देखने अथवा अधिक की कामना करने पर भी जब हमारी कामनाएँ पूर्ण होने की पूरी संभावना होती है तो ऐसी अवस्था में अधिकाधिक समृद्धि की कामना न करना कोई समझदारी की बात तो है नहीं। अपनी समृद्धि से आप न केवल स्वयं भौतिक जगत की सुख-सुविधाओं का आनंद उठाएँ अपितु दूसरों को भी आगे बढ़ने व सुख-सुविधाओं का आनंद लेने में सहायता करें। इसी के लिए जरूरी है इच्छाओं का सही प्रबंधन। समय प्रबंधन मात्र एक ऑब्जेक्टिव एप्रोच है जबकि विचारों का प्रबंधन एक सब्जेक्टिव एप्रोच है। सब्जेक्टिव एप्रोच अवचेतन मन के स्तर पर प्रभावित करती है अतः इसका स्थायी प्रभाव पड़ता है। इसीलिए विचार प्रबंधन के क्षेत्र में और भी अधिक सावधानी व सतर्कता अनिवार्य है।

विचार प्रबंधन खेत में फ़सल उगाने के समान है जबकि समय प्रबंधन तैयार फ़सल को इकट्ठा करके घर लाने जितना महत्त्व रखता है। यदि फ़सल अच्छी और भरपूर होगी तभी वास्तविक प्रसन्नता मिल सकती है। अच्छी फ़सल पाने के लिए अच्छे बीजों के चयन की तरह ही अच्छे विचारों अथवा इच्छाओं का चयन भी अनिवार्य है। हमारी इच्छाएँ न केवल बड़ी हों अपितु उदात्त व सात्त्विक भी हों। हम किसी भी सूरत में कोई ग़लत उद्देश्य रखकर कोई इच्छा न करें। हम ऐसी कोई इच्छा न रखें जिसके पूर्ण होने पर अन्य कोई समस्या उत्पन्न हो जाए अथवा जिससे किसी दूसरे का अहित होने की संभावना हो। हम अपनी इच्छाओं की पूर्ति के तरीक़े के बारे में भी स्पष्ट हों। हम किसी भी क़ीमत पर दूषित साधन या माध्यम से सफलता पाने के बारे में न सोचें। गांधी जी इस विषय में बहुत स्पष्ट थे। वे सदैव साधनों की पवित्रता पर ज़ोर देते थे।

ग़लत साधनों या माध्यमों से प्राप्त सफलता जीवन में कभी प्रसन्नता प्रदान नहीं कर सकती। यदि हम चोरी करते हैं या गलत तरीके से पैसा कमाते हैं अथवा गलत तरीके से कोई डिग्री हासिल कर लेते हैं तो हमारा मन सदैव दुखी रहता है। पकड़े जाने के भय से आशंकित भी रहते हैं। मजे की बात ये है कि यदि हम अधिक की कामना करते हैं तो वह भी संभव है और शुद्ध साधनों अथवा माध्यमों के द्वारा अधिक की कामना करते हैं तो वह भी संभव है और इसी के लिए इच्छाओं में संतुलन अथवा विचारों के सही प्रबंधन की भी जरूरत है। विचारों के सही प्रबंधन अथवा भाव-शुद्धि द्वारा ही हम नैतिकता अथवा सद्‌गुणों का विकास कर सकते हैं। इस प्रकार से विचारों के सही प्रबंधन द्वारा हम न केवल सफलता, समृद्धि व ऐश्वर्य पा सकते हैं अपितु इन्हें ईमानदारी से हासिल भी कर सकते हैं और प्राप्त सफलता, समृद्धि अथवा ऐश्वर्य का सदुपयोग कर मानसिक संतुष्टि व आनंद भी प्राप्त कर सकते हैं।

व्यक्तिगत घटना दर्ता गराऔं

जन्म, मृत्यु, विवाह, सम्बन्ध विच्छेद तथा बसाईसराईजस्ता व्यक्तिगत घटना समयमा नै आफ्नो पालिकाको वडा कार्यालयमा दर्ता गराउनुपर्दछ। किनकि व्यक्तिगत घटना दर्ता व्यक्ति पहिचानको पहिलो आधार हो। यस्ता घटना ३५ दिनभित्र स्थानीय पञ्जिकाधिकारीको कार्यालय (वडा कार्यालय) मा निःशुल्क रुपमा दर्ता गर्न सकिन्छ। सरकारलाई विकासका योजना तर्जुमा गर्न, नागरिकलाई प्रदान गरिने सेवा सुविधा सुनिश्चित गर्न, जनसंख्याको विवरण अद्यावधिक गर्न व्यक्तिगत घटना दर्ता आवश्यक हुन्छ। साथै व्यक्तिगत घटना दर्ता गरेपछि मात्रै राज्यबाट पाइने सुविधाहरू प्राप्त गर्न सकिनेछ।

विजया दशमी, शुभ दिपावली तथा छठ पर्व २०८१ को पावन अवसरमा सुख, शान्ति, एवं समृद्धिका लागि **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं।

देवेन्द्र कुमार यादव
नगर प्रमुख

गोडैता नगरपालिका
नगर कार्यपालिकाको कार्यालय
मधेश प्रदेश (सर्लाही) नेपाल

व्यक्तिगत घटना दर्ता गराऔं

जन्म, मृत्यु, विवाह, सम्बन्ध विच्छेद तथा बसाईसराईजस्ता व्यक्तिगत घटना समयमा नै आफ्नो पालिकाको वडा कार्यालयमा दर्ता गराउनुपर्दछ। किनकि व्यक्तिगत घटना दर्ता व्यक्ति पहिचानको पहिलो आधार हो। यस्ता घटना ३५ दिनभित्र स्थानीय पञ्जिकाधिकारीको कार्यालय (वडा कार्यालय) मा निःशुल्क रुपमा दर्ता गर्न सकिन्छ। सरकारलाई विकासका योजना तर्जुमा गर्न, नागरिकलाई प्रदान गरिने सेवा सुविधा सुनिश्चित गर्न, जनसंख्याको विवरण अद्यावधिक गर्न व्यक्तिगत घटना दर्ता आवश्यक हुन्छ। साथै व्यक्तिगत घटना दर्ता गरेपछि मात्रै राज्यबाट पाइने सुविधाहरू प्राप्त गर्न सकिनेछ।

विजया दशमी, शुभ दिपावली तथा छठ पर्व २०८१ को पावन अवसरमा सुख, शान्ति, एवं समृद्धिका लागि **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं।

जसवन्त यादव
अध्यक्ष

सखुवा प्रसौनी गाउँपालिका
गाउँ कार्यपालिकाको कार्यालय
मधेश प्रदेश (पर्सा) नेपाल

भारतीय राजदूतावास द्वारा हिन्दी दिवस कार्यक्रम का आयोजन

काठमांडू । काठमांडू स्थित भारतीय राजदूतावास ने हिन्दी दिवस के अवसर पर नेपाल भारत पुस्तकालय के सभागार में कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हिन्दी के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार डा. रामदयाल राकेश की सादर उपस्थिति थी । साथ ही विशेष अतिथि के रूप में पूर्व राजदूत श्री रामभक्त ठाकुर, हिन्दी केन्द्रीय विभाग त्रिभुवन विवि की पूर्व प्रमुख डा. श्वेता दीप्ति, हिमालिनी हिन्दी मासिक पत्रिका के प्रबंध निदेशक ई.सच्चिदानंद मिश्र की उपस्थिति थी।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ रामदयाल राकेश ने अपने वक्तव्य में नेपाल में हिन्दी की अवस्था और महत्ता पर प्रकाश डाला। डा श्वेता दीप्ति ने कहा कि हिन्दी भारत की ही नहीं नेपाल की भी भाषा है आवश्यकता इस बात की है कि इसे संवैधानिक स्थान प्राप्त हो और हिन्दी को भारतीय राजदूतावास की तरफ से रोजगार के साथ जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिए। वक्तव्य के क्रम में ही श्री रामभक्त ठाकुर ने कहा कि हिन्दी एक मीठी और संवेदनशील भाषा है इसलिए यह सभी को पसंद है। हिमालिनी के प्रबंध निदेशक श्री सच्चिदानंद जी ने कहा कि हिन्दी का अस्तित्व नेपाल में सदियों से है और हमेशा रहेगा। विरोध के बावजूद भी जन जन की पसंद की भाषा हिन्दी है ।

कार्यक्रम में केन्द्रीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने भाग लिया था । छात्र एवं छात्राओं ने कविता वाचन भी किया। कार्यक्रम के अंत में प्रथम सचिव गीतांजली ब्रैंडन ने धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि आज जो भी सुझाव आए हैं हम भविष्य में उन पर अवश्य काम करेंगे ।

महालक्ष्मी विकास बैंक और के.बी चित्रकार एण्ड कंपनी चाटर्ड एकाउन्टेस बीच सहकार्य

महालक्ष्मी विकास बैंक ने नेपाल वित्तीय प्रतिवेदन मापदण्ड अनुरुप NFRS 09M Expected Credit Loss (ECL) मोडल कार्यान्वयन के लिए के.बी चित्रकार एण्ड कम्पनी चाटर्ड एकाउन्टेस के साथ एक समझदारी पत्र में हस्ताक्षर किया है ।

बैंक को विश्वास है कि इस समझदारी से बैंक के जोखिम व्यवस्थापन को और भी अधिक सुदृढ बनाने और पारदर्शी वित्तीय प्रतिवेदन प्रस्तुत करने में मदद मिलेगी । साथ ही इसके कार्यान्वयन से वित्तीय प्रतिवेदन मापदण्डहरु पुरा करने, सञ्चालन सक्षमता सुदृढ करने, नियामक निकाय द्वारा जारी निर्देशनों को प्रभावकारी रुप में कार्यान्वयन/अनुपालन करने तथा वित्तीय अनुशासन तथा रिर्पोटिङ्ग अभ्यास को और भी सुदृढ बनाने में मदद मिलेगी ।

"सबल बैंक, सफल सहकार्य" के नारा को आत्मसाथ करते हुए नेपाली जनता के घर घर तक विगत ३० वर्ष से अनवरत रुप में गुणस्तरीय वित्तीय सेवा प्रदान करते आ रहे इस बैंक का देशभर में १०३ शाखा कार्यालय और करीब ८ लाख ग्राहक हैं ।

राष्ट्रीय वाणिज्य बैंक के तत्वावधान में वित्तीय साक्षरता उन्मुखीकरण कार्यक्रम

राष्ट्रीय वाणिज्य बैंक लिमिटेड के तत्वावधान में मंगलवार को कोशी प्रदेश सभा के सदस्यों के लिए वित्तीय साक्षरता पर एक उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया ।कोशी राज्य सभा के सहयोग और ख्ँन्न्व्य के समन्वय से आयोजित इस कार्यक्रम में, बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी देवेन्द्र रमन खनाल, राष्ट्रीय योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष और नेपाल राष्ट्र बैंक के पूर्व गवर्नर दीपेंद्र बहादुर क्षत्री ने वित्तीय साक्षरता के बारे में स्रोत व्यक्तियों के रूप में सहजीकरण किया ।

कार्यक्रम में बोलते हुए, कोशी राज्य सभा के अध्यक्ष अंबर बहादुर बिस्ट ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम की आवश्यकता बढ़ गई है और कहा कि ब्याज दर के कारण व्यापारियों के पलायन करने का जोखिम है । कोशी राज्य विधानसभा के उपाध्यक्ष श्रीजन दनुवार ने इस बात पर जोर दिया कि वित्तीय साक्षरता को स्कूल स्तर के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए ।

कार्यक्रम में बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी खनाल ने रा.वा बैंक की वर्तमान स्थिति और अर्थव्यवस्था में बैंक के योगदान पर प्रकाश डाला. राष्ट्रीय योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष और नेपाल राष्ट्र बैंक के पूर्व गवर्नर छेत्री ने वित्तीय नीति, मौद्रिक नीति और कराधान, बजटिंग, वित्तीय नीति निर्माण के कानूनी आधार के माध्यम से संसाधन जुटाने पर प्रकाश डाला । कार्यक्रम में प्रांतीय विधानसभा के सदस्यों ने धन के महत्व, धन के आदर्श उपयोग, मुद्रा के महत्व, ब्याज दरों, बैंकों, उत्पादन और रोजगार के बीच संबंध और विकास आवश्यकताओं के चयन के बारे में प्रश्न पूछे ।

कार्यक्रम में संघीय संसद सचिवालय के सचिव सुदर्शन खड़का, कोशी राज्य विधानसभा के सचिव गोपाल प्रसाद पराजुली, बैंक के उप कार्यकारी अधिकारी पवन रेग्मी, विभाग प्रमुख आनंद सुबेदी, बीआईएफसीएबी संगठन के प्रमुख मनोज रेग्मी और अन्य कर्मचारी उपस्थित थे । बैंक के वर्तमान में ७७ जिलों में २९४ शाखा कार्यालय, ३१० एटीएम और ७३ एक्सटेंशन काउंटर हैं ।

पहली बार बिहार को बिजली बेची गई

नेपाल विद्युत प्राधिकरण (एनईए) ने पहली बार बिहार को ४० मेगावाट बिजली की आपूर्ति शुरू की है । बताया गया है किस एनईए ने गुरुवार को पहले चरण में कटैया-कुशवाहा ट्रांसमिशन लाइन के माध्यम से बिजली की आपूर्ति शुरू कर दी । नेपाल को बिहार को १२५ मेगावाट बिजली आपूर्ति करने की मंजूरी मिल गई है ।

समझौते के अनुसार, एनईए, भारत की पावर ट्रेडिंग कॉरपोरेशन के माध्यम से बिहार को बिजली आपूर्ति कर रहा है । वर्तमान में, भारत को प्रतिदिन लगभग ६२० मेगावाट बिजली आपूर्ति की जा रही है । पिछले

सार्वजनिक सम्पत्तिको संरक्षण गरौं

सार्वजनिक सम्पत्तिको हामी सबैको हो, यसमाथि क्षति पुग्नेखालको कुनै पनि कार्य नगरौं । सार्वजनिक सम्पत्तिमाथिको अतिक्रमण अपराध हो भने सार्वजनिक सम्पत्तिको संरक्षण गर्नु सबैको कर्तव्य हो । सार्वजनिक सम्पत्तिको अतिक्रमण र हानिनोक्सानी कानूनी रुपमा दण्डनीय हुन्छ । त्यसैले हामी सबैले सार्वजनिक सम्पत्तिको संरक्षण गरौं ।

विजयादशमी २०८१ को अवसरमा सुख शान्ति समृद्धि एवं उत्तरोतर प्रगतिको लागि **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं ।

फिरंगी चौधरी
वडाध्यक्ष
३ नं. वडा कार्यालय
सरावल गाउँपालिका
नवलपरासी (पश्चिम), लुम्बिनी प्रदेश

खेतीयोग्य जमिनको संरक्षण गरौं

हाम्रो देशमा खेतियोग्य जमिन घट्दै गएको छ । खेतियोग्य जमिनको संरक्षण गर्नु हामी सबैको दायित्व हो । त्यसैले खेतियोग्य जमिनमा बसोवास नगरौं/नगराऔं । हरियाली बातावरणसहितको नमूना बस्तीको विकास गरौं । खेतियोग्य जमिनको संरक्षण गरेर समृद्ध नेपालको निर्माण गरौं ।

विजयादशमी २०८१ को अवसरमा सुख शान्ति समृद्धि एवं उत्तरोतर प्रगतिको लागि **हार्दिक मंगलमय शुभकामना** व्यक्त गर्दछौं ।

प्रभुनाथ यादव, वडाध्यक्ष
५ नं. वडा कार्यालय
सुस्ता गाउँपालिका
नवलपरासी (पश्चिम), लुम्बिनी प्रदेश

वर्ष नेपाल ने भारत को अधिशेष बिजली बेचकर १७.०६ अरब रुपए का राजस्व अर्जित किया था। इसी अवधि के दौरान, नेपाल ने १६.९३ अरब रुपए मूल्य की बिजली का आयात किया।

भारत ने पिछले महीने ही नेपाल को २५१ मेगावाट अतिरिक्त बिजली निर्यात करने की अनुमति दी थी। एक सरकारी बयान में कहा गया था कि यह पहली बार है जब नेपाल, बिहार को मध्यम अवधि के बिक्री समझौते के तहत बिजली की आपूर्ति करेगा। नेपाल में भारतीय दूतावास ने बयान में कहा, "भारत के सीमापार व्यापार के लिए नामित प्राधिकरण ने नेपाल में १२ जलविद्युत परियोजनाओं से २५१ मेगावाट अतिरिक्त बिजली निर्यात को मंजूरी दी है।" इसके साथ ही नेपाल २८ परियोजनाओं से ९४१ मेगावाट जलविद्युत का निर्यात करेगा। इससे पहले नेपाल १६ परियोजनाओं से ६९० मेगावाट बिजली निर्यात कर रहा था।

बयान में कहा गया है कि २५१ मेगावाट की इस मंजूरी से पहले ही नेपाल पिछले वित्त वर्ष में १६.९३ अरब नेपाली रुपये की बिजली बेचकर बिजली का शुद्ध निर्यातक और शुद्ध राजस्व सृजक बन चुका था। इसमें कहा गया है कि अक्टूबर, २०२१ में भारत ने पहली बार नेपाल से ३९ मेगावाट बिजली निर्यात को मंजूरी दी। इसमें कहा गया है कि तीन साल से भी कम समय में यह आंकड़ा २४ गुना से अधिक बढ़ गया है।

भारत और नेपाल ने दीर्घकालिक बिजली व्यापार के लिए एक समझौता किया है, जिसमें अगले १० साल में नेपाल से भारत को १०, ००० मेगावाट तक बिजली की बिक्री की परिकल्पना की गई है। यह समझौते का पहला वर्ष है और लगभग १, ००० मेगावाट निर्यात पहले ही हो चुका है। बांग्लादेश को ४० मेगावाट बिजली की बिक्री के लिए एक समझौते को भी अंतिम रूप दिया गया है और इसपर २८ जुलाई को हस्ताक्षर करने की योजना थी, लेकिन बांग्लादेश में हाल के राजनीतिक घटनाक्रमों के कारण इसे स्थगित कर दिया गया।

ग्लोबल आईएमई बैंक में खाता खोलनेवालों को शेयर ट्रेडिंग खाता की भी सुविधा

ग्लोबल आईएमई बैंक में खाता खोलने से शेयर ट्रेडिंग के लिए आवश्यक सुविधाएं मिलती हैं। ग्लोबल आईएमई बैंक में नया खाता खोलने पर शेयर ट्रेडिंग के लिए जरूरी सुविधाएं एक साथ मिलेंगी। बैंक के मुताबिक, नया खाता खोलने पर नियमित सुविधाओं के साथ ५ और सुविधाएं मिलेंगी। बैंक द्वारा घोषित योजना के अनुसार, बैंक में खाता खोलते समय अन्य नियमित सुविधाओं के साथ-साथ डीमैट खाता, मेरो शेयर, सी-एएसबीए और टीएमएस खाता खोला जा सकता है।

बैंक के अनुसार, ग्राहक को ग्लोबल आईएमई कैपिटल में प्रतिभूतियों के व्यापार (खरीद और बिक्री) के लिए आवश्यक डीमैट खाता और उस खाते के संचालन के लिए मेरो शेयर, आईपीओ भरने के लिए आवश्यक सी-एएसडब्ल्यूए पंजीकरण संख्या और टीएमएस खाता सुविधा मिलेगी। जेबीएनएल सिक्योरिटीज में शेयर खरीदने और बेचने की सुविधा बैंक द्वारा प्रकाशित डिजिटल यूनिवर्स में भी उपलब्ध है। इस सुविधा का उपयोग डिजिटल यूनिवर्स के माध्यम से घर पर आवश्यकतानुसार किया जा सकता है। बैंक के मुताबिक ये सेवाएं बैंक के ३५४ शाखा कार्यालयों से उपलब्ध होंगी।इस योजना में बैंक में नया खाता खोलकर या मौजूदा खाते को संशोधित करके और निष्क्रिय खाते को सक्रिय करके इस योजना से जुड़ना संभव है।

फलफूल रोपौं, आम्दानी बढाऔं

हाम्रो देशमा वर्षेनी करोडौंको फलफूल विदेशबाट आयात हुने गर्दछ। त्यसैले हामीले हाम्रै खेतबारीमा फलफूल रोपेर आत्मनिर्भर किन नहुने। हामीले एकपटक लगाएको फलफूलको विरुवाले बर्षौं आम्दानी दिन सक्छ, फलफूल खेती आम्दानीको दिगो माध्यम हुनसक्छ। तराई, पहाड र हिमाल जहाँ पनि मौसम अनुसारको फलफूल खेती गर्न सकिनेछ। थोरै लगानीमा पनि फलफूल खेतीबाट धेरै आम्दानी गर्न सकिन्छ। फलफूल खेती तपाईंको लागि अवसर बन्न सक्छ।

प्रसौनी गाउँपालिका
गाउँ कार्यपालिकाको कार्यालय
मधेश प्रदेश (बारा) नेपाल

अशक्त नागरिकलाई प्राथमिकता दिऔं

समाजमा हुने सामाजिक तथा धार्मिक गतिविधिमा अपाङ्ग तथा जेष्ठ नागरिक र एकल महिलालाई विशेष प्राथमिकता दिऔं। साथै उनीहरूलाई परिचयपत्र बनाउन र राज्यबाट प्राप्त हुने सुविधा प्राप्त गर्न सहयोग गरौं। अधिकारको पूर्ण उपभोग गरौं।

परवानी गाउँपालिका
गाउँ कार्यपालिकाको कार्यालय
मधेश प्रदेश (बारा) नेपाल

साहित्यकार रिजाल और समाजसेवी सापकोटा सम्मानित

पवन जायसवाल, नेपालगन्ज (बाँके)

नेपालगन्ज में तिमिल्सिना वाङमय प्रतिष्ठान बाँके ने नेपाल संस्कृत विश्व विद्यालय के पूर्व शिक्षाध्यक्ष प्रा.डा.भागवत प्रसाद शर्मा रिजाल और मानव आश्रम सुर्खेतरोड नेपालगन्ज के प्रमुख उर्विन सापकोटा को रामेश्वर कमलादेवी स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

रामेश्वर कमलादेवी स्मृति पुरस्कार अर्पण तथा रचना वाचन कार्यक्रम में वि.सं. २०७९ साल का पुरस्कार नेपाल संस्कृत विश्व विद्यालय के पूर्व शिक्षाध्यक्ष प्रा.डा.भागवत प्रसाद शर्मा रिजाल को ११ हजार १ सौ ११ रुपैया और संस्था की ओर से वि.सं.२०८० साल का पुरस्कार मानव आश्रम सुर्खेतरोड नेपालगन्ज के प्रमुख उर्विन सापकोटा को ११ हजार १ सौ ११ रुपया प्रदान करके सम्मान किया गया है। वि.सं. २०७२ साल में स्थापित, तिमिल्सिना वाङमय प्रतिष्ठान नेपालगन्ज बाँके की कार्यालय नेपालगन्ज उप-महानगरपालिका वार्ड नं.-१८ में रही है। प्रतिष्ठान के संरक्षक हरि प्रसाद तिमिल्सिना की माता कला देवी उपाध्याय का निधन वि.सं. २०४२/०५/११ गते मंगलवार और पिता रामेश्वर उपाध्याय का निधन २०५२ साल बैशाख २२ गते शुक्रवार को हुआ था।

प्रतिष्ठान के संरक्षक हरि प्रसाद तिमिल्सिना के अनुसार वि.सं.२०७२ साल में ५१ हजार १ सौ ११/-रुपए की अक्षयकोष की स्थापना रामेश्वर कमलादेवी स्मृति पुरस्कार के लिये किया गया था। प्रतिष्ठान के संरक्षक हरि प्रसाद तिमिल्सिना ने कार्यक्रम में प्रतिष्ठान की गतिविधि बारे जानकारी कराते हुये वि.सं. २०७३ साल में नेपालगन्ज के उर्दू साहित्यकार अब्दुल लतीफ शौक १ हजार १ सौ ११रुपैया प्रदान किया गया था। वि.सं.२०७४ साल में प्रा.जगत उपाध्याय प्रेक्षित को २ हजार १ सौ ११ रुपैया प्रदान किया था। वि.सं. २०७५ साल में प्रा.डा. चुडामणि बन्धु को ५हजार १ सौ ११ रुपैया प्रदान किया गया था। वि.सं. २०७६ साल में नेपालगन्ज के वरिष्ठ साहित्यकार गणेश जिसी को ५ हजार १ सौ ११ रुपैया प्रदान किया गया था। वि.सं. २०७७ साल में नेपालगन्ज के निवासी प्रा.डा.गोपाल प्रसाद शर्मा अधिकारी को ५हजार १ सौ ११/रुपैया प्रदान किया गया था। वि.सं.२०७८ शिक्षाविद् किरण आचार्य को भी ५ हजार १ सौ ११ रुपैया की पुरस्कार प्रदान किया गया था।

कार्यक्रम में तिमिल्सिना वाङमय प्रतिष्ठान नेपालगन्ज के संरक्षक हरि प्रसाद तिमिल्सिना द्वारा सञ्चालित, प्रतिष्ठान की अध्यक्ष मीना बराल की अध्यक्षता में सम्पन्न कार्यक्रम में प्रतिष्ठान के सचिव लेक प्रसाद प्याकुरेल द्वारा स्वागत मन्तव्य व्यक्त, कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि प्रा.डा.गोपाल प्रसाद शर्मा अधिकारी थे, इसी तरह बिशिष्ट अतिथि लुम्बिनी प्राविधिक विश्वविद्यालय सेवा आयोग के सदस्य प्रा.डा.कृष्ण प्रसाद घिमिरे, सम्मानित व्यक्तित्व प्रा.डा.भागवत प्रसाद शर्मा रिजाल, बिशिष्ट अतिथि सनत कुमार रेग्मी, तिमिल्सिना वाङमय प्रतिष्ठान के सलाहकार तथा वरिष्ठ पत्रकार पूर्णलाल चुके, प्राज्ञ सभा सदस्य महानन्द ढकाल, संस्था की ओर से मानव आश्रम के प्रमुख उर्विन सापकोटा, कार्यक्रम में इश्वरी प्रसाद रिजाल, भारतीय साँस्कृतिक सहयोग/एवं मैत्री संघ उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष शारीक रब्बानी, खेम बगर, भिम तिमिल्सिना प्रज्वल, कल्पना पौडेल जिज्ञासु, प्रतिभा साहित्य समाज की अध्यक्ष चरित्रा शाह, सरदार मधई सिंह सिक्ख, लेक प्रसाद प्याकुरेल, अधिवक्ता तथा साहित्यकार भीम बहादुर शाही, सीता सुनगाभा की सहभागिता थी।

इसी तरह कार्यक्रम में वि.सं. २०७७ साल में नेपालगन्ज के निवासी प्रा.डा.गोपाल प्रसाद शर्मा अधिकारी ५हजार १ सौ ११/- रुपैया द्वारा सम्मानित हुए। उन्होंने संस्था को सम्मान रकम वापस किया। उन्हें कार्यक्रम में प्रथम विशिष्ट सदस्यता का सम्मान पत्र प्रदान किया गया था। सम्मान पत्र में उल्लेख किए गए शब्द का वाचन खजुरा प्रज्ञा प्रतिष्ठान के उप-कुलपति इन्द्र बहादुर भण्डारी ने किया था। कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि गोपाल प्रसाद शर्मा अधिकारी, बिशिष्ट अतिथि लुम्बिनी प्राविधिक विश्वविद्यालय सेवा आयोग के सदस्य प्रा.डा.कृष्ण प्रसाद घिमिरे, विशिष्ट अतिथि नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान के पूर्व सदस्य सचिव सनत कुमार रेग्मी ने दोशाला ओढाकर सम्मान प्रदान किया था।

इसी तरह वह कार्यक्रम में अवधी साँस्कृतिक प्रतिष्ठान केन्द्रीय समिति के संस्थापक तथा पूर्व अध्यक्ष बिष्णुलाल कुमाल, साहित्यकार किरण आचार्य, महेन्द्र पुस्तकालय के अध्यक्ष बलराम यादव, पंकज कुमार श्रेष्ठ, पुष्पमणि प्रधान, मणिदेव अर्याल, दैलेखी समाज बाँके के अध्यक्ष पूर्णदेव गिरी, ऋषिराम सापकोटा, सर्वदा साहित्य संगम के अध्यक्ष खगेन्द्र गिरि कोपिला, भरत बहादुर रानाभाट, लक्ष्मी बस्याल, नारायण प्रसाद ज्ञवाली, कृष्ण मुरारी प्रसाद भट्ट, हाम्रो पूर्णिमा साहित्य प्रतिष्ठान के अध्यक्ष पुस्कर नाथ रिजाल, डिल बहादुर थापा, दैनिक नेपालगन्ज पत्रिका के सम्पादक झलक गेरै, नेपाल स्वयंसेवी रक्तदाता समाज बाँके के सल्लाहकार तथा शतक रक्तदाता पवन जायसवाल आदि ३ दर्जन से अधिक की सहभागिता थी।

प्याज का तेल औषधीय गुणों से भरपूर

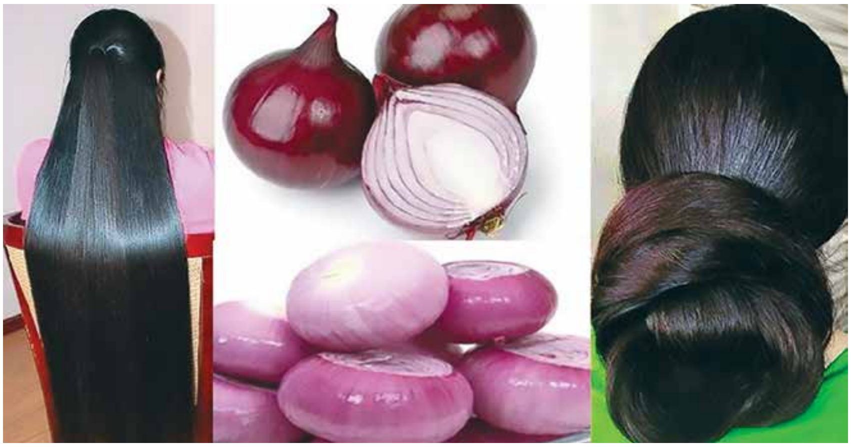

प्याज औषधीय गुणों से भरपूर होता है । इसमें एंटीऑक्सीडेंट, एंटीबैक्टीरियल, एंटीफंगल और एंटीसेप्टिक गुण पाए जाते हैं । इसके अलावा, इसमें विटामिन-ए, सी और ई की भी अच्छी मात्रा पाई जाती है । इसलिए इससे बनने वाला तेल भी कई तरह के पोषक गुणों से भरपूर होता है, जो हमें अनेकों तरह के स्वास्थ्य लाभ पहुंचाता है । इसका इस्तेमाल सदियों से कई बीमारियों के लिए प्राकृतिक उपचार के रूप में किया जाता रहा है ।

ऐसे में प्याज के तेल से बालों की देखभाल करना भी एक बहुत ही आसान और प्रभावी तरीका हो सकता है । इसमें मौजूद पोषक तत्व बालों को पोषण देकर मजबूती प्रदान करते हैं और यही वजह है कि इसका इस्तेमाल कई हेयर केयर प्रोडक्ट्स में भी होता है । इसके नियमित इस्तेमाल से बाल काले, घने और चमकदार बनते हैं । तो आइए जानते हैं, इसे तैयार करने के स्टेप्स और फायदों के बारे में ।

प्याज का तेल बनाने की विधि

सामग्रीः प्याज- २-३ (मीडियम साइज),
तेल - आधा कप नारियल या जैतून का

स्टेप १- सबसे पहले प्याज को छोटे टुकड़ों में काट लें । फिर इन्हें मिक्सर में पीसकर एक पेस्ट बना लें । इस पेस्ट को एक कपड़े या छन्नी की मदद से निचोड़कर प्याज का रस निकाल लें ।

स्टेप २- एक पैन में अपने बालों के में इस्तेमाल करने जितना नारियल तेल गरम करें । इसमें प्याज का रस मिलाएं और इसे धीमी आंच पर तब तक पकाएं जब तक तेल का रंग हल्का सुनहरा न हो जाए और प्याज की गंध तेल में मिल न जाए ।

स्टेप ३- जब तेल तैयार हो जाए, तो इसे ठंडा होने दें । ठंडा होने के बाद, इसे एक साफ कपड़े से छान लें ।

स्टेप ४- इस तेल को एक साफ कांच की बोतल में भरकर ठंडी और सूखी जगह पर स्टोर करें । इसे कई हफ्तों तक इस्तेमाल में लाया जा सकता है ।

प्याज के तेल के फायदे

बालों का झड़ना कम करता है- प्याज में सल्फर की मात्रा ज्यादा होती है, जो बालों की जड़ों को पोषण देता है और उन्हें मजबूत बनाता है, जिससे बालों का झड़ना कम होता है ।

बालों की ग्रोथ बढ़ाता है- प्याज का तेल स्कैल्प में ब्लड सर्कुलेशन को बढ़ाता है, जिससे बालों की ग्रोथ तेज होती है और नए बाल उगने में मदद मिलती है ।

डैंड्रफ को कम करता है- प्याज के एंटीबैक्टीरियल और एंटीफंगल गुण डैंड्रफ और स्कैल्प की समस्याओं को कम करने में सहायक होते हैं ।

बालों में चमक लाता है- प्याज का तेल बालों को गहराई से पोषण देता है, जिससे बाल स्वस्थ, मुलायम और चमकदार बनते हैं ।

उपयोग का तरीका

इस तेल को हफ्ते में २-३ बार बालों की जड़ों में लगाकर हल्के हाथों से मसाज करें । इसे १-२ घंटे तक या रातभर रखने के बाद में शैंपू से धो लें ।

व्यक्तिगत घटना दर्ता गराऔं

जन्म, मृत्यु, विवाह, सम्बन्ध विच्छेद तथा बसाईसराईजस्ता व्यक्तिगत घटना समयमा नै आफ्नो पालिकाको वडा कार्यालयमा दर्ता गराउनुपर्दछ। किनकि व्यक्तिगत घटना दर्ता व्यक्ति पहिचानको पहिलो आधार हो। यस्ता घटना ३५ दिनभित्र स्थानीय पञ्जिकाधिकारीको कार्यालय (वडा कार्यालय) मा निःशुल्क रुपमा दर्ता गर्न सकिन्छ। सरकारलाई विकासका योजना तर्जुमा गर्न, नागरिकलाई प्रदान गरिने सेवा सुविधा सुनिश्चित गर्न, जनसंख्याको विवरण अद्यावधिक गर्न व्यक्तिगत घटना दर्ता आवश्यक हुन्छ। साथै व्यक्तिगत घटना दर्ता गरेपछि मात्रै राज्यबाट पाइने सुविधाहरू प्राप्त गर्न सकिनेछ।

शिवराज नगरपालिका
नगर कार्यपालिकाको कार्यालय
कपिलवस्तु, लुम्बिनी प्रदेश (नेपाल)

ब्रेड का मोमो : एक नया स्वाद

मोमो का नाम सुनते ही मुंह में पानी आ जाता है। स्टीम्ड हो या फिर फ्राइड हर एक रूप में इसका स्वाद लाजवाब लगता है। चाइनीज डिशेज में फ्राइड राइस, मंचूरियन, चिली पोटैटो के साथ अब मोमो भी लगभग सबकी फेवरेट डिशेज में शामिल हो चुका है। मैदे और आटे के मोमोज तो आपने कई बार खाए होंगे, लेकिन क्या कभी ब्रेड के मोमोज किए हैं ट्राई ? स्वाद में ये बिल्कुल भी मैदे वाले मोमोज से कम नहीं लगते और सबसे अच्छी बात कि इसे बनाना भी बेहद आसान है। इसे आप इवनिंग स्नैक्स में ट्राई कर सकते हैं, साथ ही हाउस पार्टी में स्टॉर्टर के रूप में भी सर्व कर सकते हैं, तो आइए फटाफट से जानते हैं

इसकी रेसिपी।

सामग्री: ४ ब्रेड स्लाइस, १/४ कप शेजवान चटनी, १/२ कप बारीक कटी हुई शिमला मिर्च, १/२ कप बारीक कटे, १/२ कप मक्के दाने, १/४ कप किसा हुआ चीज।

बनाने की विधि:

कटर या छोटी कटोरी/ गिलास से ब्रेड के टुकड़ों को गोल आकार में काट लें। बेलन से बेलकर ब्रेड को चपटा कर लें। ब्रेड के हर टुकड़े पर एक छोटा चम्शेजवान चटनी रखें और फिर बारीक कटी सब्जियां रखें। मिश्रण के सबसे ऊपर कद्दूकस किया चीज डालें। मोमो/ गुजिया/ डम्प मेकर की मदद से ब्रेड को आधे चंद्रमा के आकार में मोड़ें। कढ़ाई को मध्यांच पर पहले से गर्म करें। मोमोज को इस कढ़ाई में २-३ मिनट हर साइड से सेकें, जब तक कि वे गोल्न ब्राउन न हो जाएं।

केचअप या अपनी पसंद की किसी भी डिप के साथ गर्मागर्म परोसें।

नागरिक पेन्सन योजना

सर्वसाधारण जनतालाई बचत गर्न प्रोत्साहित गर्ने, त्यस्ता वचतलाई देशको आर्थिक विकासमा परिचालन गर्ने र सक्रिय जीवनकालमा जम्मा गरेको रकमबाट बचतकर्ताको जीवनयापनलाई सहजीकरण गर्ने उद्देश्यले कोषको बचत कार्यक्रमको दायरामा नसमेटिएका नेपाली नागरिकलाई आवद्ध गराउने उद्देश्यले नागरिक पेन्सन योजना २०७६ फागुन २३ देखि सञ्चालनमा आएको हो।

यस योजना अन्तर्गत आय आर्जन गर्ने, प्रचलित कानुन बमोजिम स्थापना भएका संघ, संस्था, एवं प्रतिष्ठानमा कार्यरत श्रमिक/कर्मचारी, स्वरोजगारमा रहेका सर्वसाधारण र गैर आवासीय तथा वैदेशिक रोजगारीमा रहेका नेपाली नागरिक सहभागी हुन सक्ने छन्।

बचत गर्न सकिने सीमा :

यसमा सहभागी हुने बचतकर्ताहरुले न्यूनतम मासिक रु. ५००।- देखि अधिकतम आम्दानीको क्षमता अनुसार १० ले भाग जाने संख्यामा जम्मा गर्न सक्ने छन्। बचतकर्ताको आम्दानीको आधारमा मासिक/त्रैमासिक/अर्धवार्षिक/वार्षिकरुपमा रकम जम्मा गर्न सकिने विशेषता समेत रहेको छ। यस्तो किस्ता बुझाउँदा मासिक रु.५००।- भन्दा कम नहुने गरी बुझाउनु पर्नेछ।

पेन्सन पाउन योग्य हुने अवस्था :

पेन्सन प्राप्त गर्न बचतकर्ताको उमेर साठी वर्ष पुरा भएको र कम्तीमा १५ वर्ष योगदान गरेको हुनुपर्नेछ।

बचतकर्ताले १५ वर्षको बचत नगर्दै त्यसको ब्याज र प्रतिफल समेत एकमुष्ठ भूक्तानी लिन वा पेन्सनको रुपमा भुक्तानी लिन सक्नेछन्।

कोषको अन्य योजनामा जम्मा भएको वा सहभागीको पारिश्रमिक वा स्वरोजगारीबाट आर्जित रकम एकमुष्ठ रुपमा तोकिएको न्यूनतम किस्ताले हुने जम्मा गर्ने सहभागीले समेत यस योजनामा सहभागी हुन सक्नेछन्।

पेन्सन गणना विधि:

सहभागीले गरेको बचत, त्यसको ब्याज र कोषको लगानीबाट प्राप्त प्रतिफल समेत जोडी हुन आउने कुल रकमलाई १७० ले भाग गर्दा हुन आउने रकम प्रत्येक महिना निजको जीवनकालभर पेन्सन पाउनेछन्।

योजनामा रकम जम्मा गर्ने विधि :

सहभागी बचतकर्ताले जम्मा गर्नु पर्ने रकम कोषले तोकेको बैंक खातामा भौचरमार्फत वा बिद्युतीय भुक्तानीमार्फत जम्मा गर्न सक्ने छन्। बचतकर्ताले बैंकमा रकम दाखिला गरे पछि सोको जानकारी कोषलाई दिनु पर्ने छ। कोषद्वारा तोकिएको खातामा रकम जम्मा नभएमा उक्त रकम प्रति कोषको कुनै दायित्व रहने छैन।

कोषमा रकम जम्मा गर्दा सम्बन्धित सहभागी बचतकर्ताको नाम र कोषले प्रदान गरेको परिचय नम्बर अनिवार्य रुपले उल्लेख गर्नु पर्ने छ। रकम जम्मा गर्दा आफ्नो सही नाम र कोषले प्रदान गरेको परिचय नम्बर उल्लेख गर्नु पर्ने दायित्व सम्बन्धित बचतकर्ताको हुनेछ। गलत नाम वा परिचय नम्बर उल्लेख भई रकम जम्मा भएमा त्यसको जिम्मेवारी कोषले लिने छैन।

नागरिक लगानी कोष

केन्द्रीय कार्यालय: नयाँ बानेश्वर (काठमाडौं)
पो. बक्स नं. ५८२३, फोन: ०१-५९७०२०१
ईमल: info@nlk.org.np,
वेभसाइट: www.nlk.org.np

मासिक राशिफल

(यह राशिफल १ सितम्बर से लेकर ३० सितम्बर तक लागू होगा)

पं.ज्यो. हरेकृष्ण झा
मो. न. ९८४४०७२१९६, ९८१३८७५४१९

मेष (चु, चे, चो, ल, लि, लु, ले, लो, अ): सितंबर का महीना मेष राशि वालों के लिए मिलाजुला साबित होगा । सितंबर महीने की शुरुआत सुखद रहेगी और इस दौरान आपको घर और बाहर दोनों जगह अपने रिश्तेदारों का सहयोग मिलेगा । व्यापार में आपको मनचाहा लाभ मिलेगा । कार्यक्षेत्र में सकारात्मक संभावनाएं रहेंगी, लेकिन इस दौरान आपके अंदर अहंकार की भावना प्रबल हो सकती है । ऐसे में अपनी वाणी और व्यवहार से दूसरों को ठेस पहुंचाने से बचें ।

वृषभ (इ, उ, ए, ओ, व, वि, वु, वे, वो): सितंबर की शुरुआत में वृषभ राशि वालों को सेहत और रिश्ते दोनों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होगी । इस दौरान आप मौसमी या किसी पुरानी बीमारी के उभरने से परेशान रह सकते हैं । इस दौरान घर के किसी सदस्य से विवाद आपके तनाव का बड़ा कारण बन सकता है । व्यवसाय में प्रतिस्पर्धी से कड़ी प्रतिस्पर्धा रहेगी । हालांकि, दूसरे सप्ताह के अंत तक ये सभी चीजें आपके पक्ष में नजर आएंगी । मिथुन

मिथुन (क, कि, के, घ, ड, छ, के, को, ह): सितंबर का महीना मिथुन राशि वालों के लिए नई चुनौतियों के साथ-साथ नए अवसर भी लेकर आ रहा है । महीने की शुरुआत में आपको रोजगार के सिलसिले में लंबी या छोटी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है । यात्रा सुखद एवं लाभदायक रहेगी । इस दौरान अगर आप समय और ऊर्जा का सही प्रबंधन कर लें तो आपको मनचाही सफलता मिल सकती है ।

कर्क (हि, हु, हे, हो, ड, डि, डु, डे, डो): सितंबर महीने की शुरुआत कर्क राशि वालों के लिए थोड़ी चुनौतीपूर्ण हो सकती है । महीने की शुरुआत में आप पर न केवल घर बल्कि कार्यस्थल पर भी जिम्मेदारियों का बोझ रहेगा । इसे पूरा करने में दोस्तों या रिश्तेदारों की मदद कम ही मिलेगी । ऐसे में आपको दूसरों पर निर्भर रहने की बजाय खुद ही चीजों को संभालना होगा । हालांकि सितंबर माह की शुरुआत में आपके लिए समस्याएं अधिक होंगी, लेकिन आप अपनी समझदारी से उन्हें हल करने में सक्षम होंगे ।

सिंह (म, मि, मु, मे, मो, ट, टि, टु, टे): सिंह राशि वालों को सितंबर के महीने में समय, धन और ऊर्जा का प्रबंधन करना होगा, अन्यथा उन्हें अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है । महीने की शुरुआत में घर, वाहन आदि की मरम्मत या अन्य जरूरतों पर जेब से अधिक पैसा खर्च हो सकता है, जिससे बजट गड़बड़ा सकता है । इस दौरान आपको स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा क्योंकि मौसमी या कोई पुरानी बीमारी उभरने से आप परेशान हो सकते हैं ।

कन्या (टो, प, पु, ष, ण, ठ, पे, पो): कन्या राशि वालों को सितंबर माह में महत्वाकांक्षाओं पर नियंत्रण बनाए रखना होगा । माह की शुरुआत में कार्यक्षेत्र में काम का बोझ रहेगा और उसे समय पर पूरा करने के लिए आपको अतिरिक्त समय देना होगा । इस दौरान आपको करियर और बिजनस से जुड़ा कोई भी बड़ा फैसला सोच-समझकर ही लेना चाहिए, अन्यथा आपको लेने के देने पड़ सकते हैं । इस दौरान आपके विरोधी भी सक्रिय रहेंगे, ऐसे में योजनाओं को पूरा करने से पहले भूलकर भी उनका खुलासा न करें ।

तुला (र, रि, रु, रे, रो, त, ति, तु, ते): सितंबर का महीना तुला राशि वालों के लिए खुशियां और सौभाग्य लेकर आएगा । इस महीने आपको हर कदम पर अपने इष्ट मित्रों का सहयोग मिलेगा और सोचे हुए काम समय पर पूरे होंगे । इससे आपके अंदर अद्भुत उत्साह और आत्मविश्वास देखने को मिलेगा । महीने की शुरुआत में कोई बड़ी उपलब्धि आपकी झोली में पड़ेगी, जिससे आपका मान-सम्मान बढ़ेगा ।

वृश्चिक (तो, न, नि, नु, ने, नो, य, यि, यु): सितंबर का महीना वृश्चिक राशि के जातकों के लिए बेहद शुभ और लाभकारी साबित होगा । महीने की शुरुआत लंबे समय से रुके हुए काम पूरे होने के साथ होगी । सत्ता और सरकार से संबंधित मामलों में वांछित सफलता मिलेगी और धन का लाभ होगा । इस दौरान आपको व्यापार में मनचाहा लाभ मिलेगा । अगर आप कारोबार बढ़ाने की सोच रहे थे तो इस महीने आपकी इच्छा जरूर पूरी होगी ।

धनु (ये, यो, भ, भि, भु, ध, फ, ढ, भे): सितंबर माह की शुरुआत धनु राशि वालों के लिए शुभ और सफलतादायक है । महीने की शुरुआत में ही आपको अपने करियर और बिजनस को आगे बढ़ाने का कोई बड़ा प्रस्ताव मिल सकता है । इस दौरान आप अपनी योग्यता के दम पर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपने लिए खास जगह बनाने में कामयाब रहेंगे । कार्यस्थल पर वरिष्ठ आपके काम की सराहना करेंगे ।

मकर (भो, ज, जि, खि, खु, खे, खो, ग, गि): सितंबर का महीना मकर राशि वालों के लिए कभी खुशी तो कभी दुख भरा रहने वाला है । माह की शुरुआत में घरेलू समस्याओं के कारण मन थोड़ा परेशान रहेगा । इस दौरान कार्यक्षेत्र में कुछ बदलाव हो सकते हैं, जिसके कारण आपको अतिरिक्त मेहनत और प्रयास करने की आवश्यकता होगी । हालांकि, अपने सबसे अच्छे दोस्त की मदद से आप सभी चुनौतियों को पार कर लेंगे और जिम्मेदारियों को बेहतर तरीके से निभाएंगे । आर्थिक दृष्टिकोण से यह समय कुछ उतार-चढ़ाव वाला रहेगा ।

कुंभ (गु, गे, गो, स, सि, सु, से, सो, द): कुंभ राशि वालों के लिए सितंबर का महीना मिला-जुला साबित होगा । माह की शुरुआत में कार्यस्थल पर सीनियर और जूनियर के साथ तालमेल बनाकर चलना उचित रहेगा । इस दौरान आपको सेहत और रिश्ते पर विशेष ध्यान देना होगा । आपके रूखे व्यवहार के कारण आपके अपने नाराज होकर दूर जा सकते हैं । ऐसे में इस दौरान अपनी वाणी और व्यवहार पर नियंत्रण रखें और भूलकर भी किसी को अपशब्द न कहें । महीने के दूसरे सप्ताह में आप पर काम का थोड़ा बोझ रहेगा ।

मीन (दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, च, चि): मीन राशि वालों के लिए सितंबर का महीना उतार-चढ़ाव से भरा रहने वाला है । महीने की शुरुआत में आपको करियर और बिजनस में तमाम तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन आपके प्रियजन इस कठिन समय में हर पल आपके साथ खड़े रहेंगे । कार्यस्थल पर सीनियर और जूनियर दोनों आपको काम समय पर पूरा करने में मदद करेंगे । इस दौरान भूमि-भवन से जुड़ा कोई विवाद आपकी चिंता का बड़ा कारण बन सकता है ।

सामाजिक सञ्जालको रचनात्मक प्रयोग गरौं

- सामाजिक सञ्जालमा प्राप्त भएका सूचनाको सत्यता बुझेर मात्र विश्वाँस गरौं,
- सामाजिक सञ्जालमा आउने झूठा वा भ्रामक सूचनाले अफवाह फैलाउन सक्छ,
- विश्वसनीय स्रोतबाट प्राप्त जानकारीलाई मात्र विश्वास गरौं,
- सामाजिक सञ्जालको प्रयोग ज्ञान प्राप्त गर्न र सूचना आदानप्रदान गर्न गरौं,
- सामाजिक सञ्जाललाई सकारात्मक र रचनात्मक रुपमा प्रयोग गरौं,
- सामाजिक सञ्जालको अत्यधिक प्रयोगले मानसिक तथा शारीरिक समस्या देखापर्न सक्छ, सतर्क रहौं ।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

नेपाल सरकार

विज्ञापन बोर्ड

emami
Kesh King
AYURVEDIC OIL • SHAMPOO
दुई गुणा प्रभावकारी
केश झर्न कम गर्छ । नयाँ केश उम्रछ ।
21 AYURVEDIC HERBS
NO PARABEN
NO PHTHALATE
Kesh King
AYURVEDIC OIL
₹30/- OFF
ANTI-HAIRFALL SHAMPOO
ORGANIC ONION SHAMPOO
AYURVEDIC ONION OIL
ANTI-HAIRFALL HAIR GROWTH OIL
ONION SHAMPOO

TATA .ev
TATA
introducing
Punch.ev
Punch.ev
beyond
— everyday
price starts at
Rs. 33.99 Lakh
book now
KATHMANDU, NEPAL:
SIPRADI TRADING PVT. LTD., THAPATHALI
01 5350643, 5322150, 9801013469
SIPRADI

आयो नून खाऔं
स्वस्थ रहौं
आयोडिनयुक्त नून
गाउँसम्म आयो, "आयो नून" यसले लगायो धेरै गुन
आयोडिनको कमीबाट हुने विकृतिहरु:
१. गर्भ तुहिने, मृत शिशु जन्मिने, अङ्ग भङ्ग भएको शिशु जन्मिने, जन्मेको शिशु चाँडै मर्न सक्ने ।
२. बच्चाहरु बहिरा, लाटा, लठ्ठेउरा, बामपुड्के, डेडो आदि हुन सक्ने ।
३. पढाईमा कमजोर भई पटक पटक फेल हुनुको साथै खेलकुदमा समेत पछाडि पर्नसक्ने ।
४. गलगाँड आउने, सुस्तमनस्थिति हुने ।
५. आयोडिनको कमीले I.Q. Level कम हुने ।
६. आयोडिनको कमी भएमा मानिसहरुमा आलस्यपन आउने, काम गर्ने क्षमतामा कमी आउने ।
७. आयोडिनको कमीबाट गाईवस्तुले दुध कम दिने ।
दुई बालबालिका चिन्ह अंकित आयोडिनयुक्त पाकेटका नून सधै प्रयोग गर्नुहोस ।
आयोडिनको कमीबाट हुने विकृतिहरु उपचार गरेर हटाउन सकिदैन । त्यस्ता विकृति आउन नदिन एकमात्र उपाय आजै देखि आयोडिनयुक्त दुई बालबालिकाको चिन्ह अंकित पाकेटको नून मात्र प्रयोग गरौं ।
आयो नून
नेपाल-भारत सहयोग
नेपाल सरकार तथा भारत सरकारको
आयोडिनको कमीबाट हुने विकृति निवारण योजना
साल्ट ट्रेडिङ कर्पोरेशन लिमिटेड
केन्द्रीय कार्यालय: पो.ब.नं.: ४८३, कालिमाटी, काठमाडौं, नेपाल, फोन नं.: ४२७०३१५
४२७१०१४, ४२७१२०८, फ्याक्स नं.: ९७७-१-४२७१७०४, ४२७१३९५

Our best formulation
emami
7 OILS IN ONE
Damage Control Hair Oil
Strong Inside, Set Outside
emami
7 OILS IN ONE
Damage Control Hair Oil
PRO VM COMPLEX
with 7 Herbal Extracts
& Oils of Argan, Almond, Jojoba, Amla, Walnut, Olive, Coconut
Non Sticky
Now Proven!
Upto 96% Less Hair Fall
Upto 20X Stronger Hair

NMB SULAV AUTO LOAN

गो.हु.का. (साबिक म.क्षे.हु.नि.द.नं. १३/०७८-०७९)

NMB

वातावरण मैत्री सवारी रोजौं

इन्धनको बचतसँगै
दिगो भविष्यमा लगानी गरौं

८.९९%
निश्चित ब्याजदर
७ वर्ष को लागि

*शर्तहरु लागू हुनेछन्

*यो अफर सबै व्यक्तिगत विद्युतीय सवारी साधनमा लागू हुनेछ।

थप जानकारीका लागिः ०१-५९७०१५० call@nmb.com.np

NMB BANK
एनएमबि बैंक
समृद्ध नेपालको लागि

A JOINT VENTURE WITH FMO Entrepreneurial Development Bank The Netherlands

Member of Global Alliance for Banking on Values

Bank of the Year, ASIA 2021
Bank of the Year, Nepal 2017, 2018, 2020 & 2021